Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

IRIS

अद्भुत कथा

Add-Budd- Katha

अर्थात्

श्रीश्यामाचरण दे प्रणीत 'बङ्गेर उपकथा'

का

अनुवाद

अनुवादक

जनार्दन झा

Janadan Ja
ed

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग। Indian press paryag

1919
१९१९

ीय संस्करण] सर्वाधिकार रक्षित [मूल्य ।।।)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

IRIS

अद्भुत कथा

A-dd-Budd- Katha

अर्थात्

श्रीश्यामाचरण दे प्रणीत 'वङ्गेर उपकथा'

का

अनुवाद

Library Kashmir No. ....

अनुवादक

जनार्दन झा

Janadan Ja ed

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग। Indian press paryag

1919

१९१९

...ीय संस्करण] सर्वाधिकार रक्षित [मूल्य ।।।)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

IRIS

अद्भुत कथा

Add-Budd- Katha

अर्थात्

श्रीश्यामाचरण दे प्रणीत 'वङ्गेर उपकथा'

का

अनुवाद

LIBRARY
Kashmir

अनुवादक

जनार्दन झा

Janadan Ja ed

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग। Indian press paryag

1919
१९१९

ीय संस्करण] सर्वाधिकार रक्षित [मूल्य ।।।)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

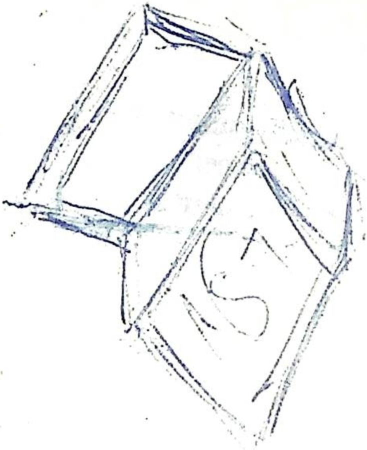

Printed and published by Apurva Krishna Bose,
at the Indian Press, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूची

विषय	पृष्ठ
१—बड़ी रानी और छोटी रानी	१
२—सुफलकुमार की कथा	७
३—राक्षसी रानी की कथा	२०
४—सोने का बैल	४४
५—पत्थर की चिड़िया	५०
६—हीरे मोती के दो कबूतर	७०
७—वेलपति की कन्या	८३
८—पक्षी-रूपी राज-पुत्र...	९०
९—सोने की चम्पा	१०९
१०—हीरा दैत्य	१२७
११—वामन वीर	१३८

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसी किताब वास्तव में [illegible] बहुत रूप से छपी है परन्तु इसके पढ़ने मनुष्य आनन्द का अनुभव करता है इसे अवश्य पढ़े

अद्भुत कथा

—:o:—

बड़ी रानी और छोटी रानी

एक राजा थे। उनके दो रानियाँ थीं, बड़ी और छोटी। छोटी रानी का बड़ा आदर था। वह सतमंज़िले महल में रहती थी। सात सौ दासियाँ उसकी सेवा करती थीं। उस रानी के बैठने के लिए चाँदी की मचिया थी और सोने के लिए सोने का पलँग था। उसके शरीर पर हीरे-मोती के गहने, गले में नौलखा हार और बदन पर ख़ूब महीन रेशमी साड़ी थी। राजा छोटी रानी का इतना आदर करते थे कि जिसकी सीमा नहीं। किन्तु बड़ी रानी का हाल इसके ठीक उलटा था। उसका बड़ा अनादर था। कुछ पूछ न थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके दुःख का ठिकाना नहीं था। बड़े कष्ट से उसके दिन बीतते थे। बड़ी बड़ी प्रार्थना विनती करने पर राजा कभी कभी उसके यहाँ जाते थे।

राजा का राज्य बहुत बड़ा था। राजधानी ग़ज़ब की थी। लाव-लश्कर, अमीर-उमरा और सेठ-साहूकारों से राजधानी सदा गुलज़ार रहती थी। हथसाल में हाथी, घुड़साल में घोड़े, सन्दूक़ भरे मोती, घड़े के घड़े मुहर और कोठरी कोठरी रुपये भरे थे। राजा को किसी चीज़ की कमी न थी। तो भी राजा के मन में सुख नहीं था। दोनों रानियों में से किसी के लड़का बाला नहीं हुआ; इसी से सब लोगों का मन उदास रहता था।

इस तरह कुछ दिन बीते। एक दिन राजा मन्त्री मुसाहिबों सहित दरबार में बैठे थे इतने में, अचानक लँगोटी पहने एक संन्यासी आ पहुँचे। संन्यासी को देखकर संतरियों ने रास्ता छोड़ दिया। साधु बाबा सीधे राज-दरबार में जाकर खड़े हो गये। इतना धन-दौलत होते हुए भी राजा को प्रसन्न-मुख न देख कर साधु ने पूछा—"हे राजा! तुम इस तरह उदास क्यों बैठे हो? तुम्हारे यहाँ किस बात की कमी है?" राजा ने कहा—"साधु जी महाराज! आप पूछ कर क्या करेंगे? आपको भिक्षा चाहिए तो भिक्षा ले लीजिए और जाइए।" साधु ने कहा—"नहीं राजा! तुम अपनी उदासी का कारण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बताओ। हम लोग बहुत कुछ तन्त्र-मन्त्र जानते हैं। आपका दु:ख जान लेने पर तुरत दूर कर दे सकते हैं।" तब राजा ने लम्बी साँस लेकर कहा—"साधु बाबा! क्या बताऊँ! मैं अब बूढ़ा हो चला तो भी मेरे कोई सन्तान नहीं हुई। मेरे ऐसा अभागा और कौन है! मेरा यह धन, राज्य कौन भोगेगा? इसी सोच से मैं दुखी हूँ।" संन्यासी ने कहा—"बस, इसी के लिए आपको इतनी चिन्ता है?" यह कह कर साधु ने झोली में से एक जड़ी निकाल कर राजा के हाथ में दी और कहा—"हे राजा! यह जड़ी अपनी रानियों को देकर बता देना कि वे नहाने के बाद सफ़ेद पत्थर की सिल पर इस जड़ी को पीस कर पी जायँ। तब उनके बड़े ही सुन्दर लड़के होंगे।" राजा ने महल में जाकर छोटी रानी को बुलाया और जड़ी उसके हाथ में देकर कहा—"यह जड़ी नहा धोकर सफ़ेद पत्थर की सिल पर पीस कर तुम दोनों पी जाना। साधु महाराज कह गये हैं कि चन्द्रमा के समान लड़के होंगे।"

...ाये पर छोटी रानी ने बड़ी रानी को कुछ न बता कर झटपट ...गोबरपथनी और भीगे कपड़े पहने, भीगे बदन जड़ी को पीस कर ... कहा—"... उसके बाद उसने बड़ी रानी से जाकर कहा कि जाओ ... गोबरपवा रख आई हूँ, उठा कर पी लो। बड़ी रानी नीचे खड़ी हुआ कि सिल पर कुछ भी नहीं है। तब क्या निकल कर ...सेल धोकर जल पी लिया। कुछ ही दिनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के बाद बड़ी रानी के पैर भारी हुए। छोटी रानी के कुछ नहीं हुआ।

राजा ने सुना कि छोटी रानी के गर्भ नहीं रहा। तब वह बड़ी रानी को ख़ूब आदर मान के साथ खिलाने पिलाने लगे। एक महीने दो महीने करके दस महीने हुए। तब एक दिन बड़ी रानी का पेट पिराने लगा। वह सौरी-घर में पहुँचाई गई। वहाँ उसके एक बेटा और एक बेटी हुई। छोटी रानी यह सुन कर डाह से जल गई। उसने सौरी-घर की दाई से कहा—"ख़बरदार! लड़के होने की ख़बर कोई राजा को न देने पावे।" इसके बाद उसने दाई के कान में धीरे से कहा—"मैं तुमको बहुत रुपये इनाम दूँगी, तुम इन दोनों बच्चों को घूर पर गाड़ आओ और काठ के दो पुतले लाकर रखदो"। रुपये के लोभ से दाई ने ऐसा ही किया और काठ के दो पुतले लाकर बड़ी रानी की दोनों बग़ल सुला दिये। इसके बाद छोटी रानी ने राजा से जाकर कहा कि तुम्हारी बड़ी रानी क्या ब्याई है जानते हो? तब राजा ने चाँद सा मुखड़े वाला लड़का हुआ होगा, सोच कर खुशी के साथ पूछा—"क्या हुआ है?" छोटी रानी ने कहा कि बड़ी रानी के काठ का एक बेटा हुआ है और एक बेटी।" सुन कर राजा चकित हो गये। उनके जी में बड़ी रानी पर बड़ा ग़ुस्सा हुआ। वे पहले से ही उसको प्यार नहीं करते थे। अब उन्होंने हुक्म दिया—"बड़ी रानी को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोबरपथनी बनाओ।" तब बड़ी रानी रोते रोते गोबर पाथने वाले घर में गई। उसके दुःख का ठिकाना न रहा।

यों ही कुछ दिन बीते। एक राजा के मन्त्री ने आकर कहा—"राजाजी! जान बख्श पाऊँ तो कहूँ।" राजा ने कहा—"कहो।" तब मन्त्री ने कहा—"महाराज! आपके महल का कूड़ा-कर्कट जहाँ फेंका जाता है उस घूर पर एक पौधे में ऐसे सुन्दर दो फूल खिले हुए हैं कि वैसे फूल कभी आपके बग़ीचे में भी नहीं हुए।" राजा ने कहा—"मुझे वे फूल ला दो।" मन्त्री फूल लाने गया। पर उसने ज्यों ही फूल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया त्यों ही दोनों फूल ऊपर सरक गये। एक एक करके सब लोग फूल तोड़ने गये। मगर कोई उन दोनों फूलों को नहीं पा सका। राजा यह देख कर चकित हो गये। पीछे छोटी रानी को फूल तोड़ने के लिए कहा गया। पर वह भी नहीं तोड़ सकी। जब और कोई उन फूलों को नहीं तोड़ सका तब मन्त्री ने कहा—"महाराज! सब लोग फूल तोड़ने गये पर कोई तोड़ न सका। आपका हुक्म हो तो एक बार आपकी गोबरपथनी को भी फूल तोड़ने के लिए कहा जाय।" राजा ने कहा—"अच्छा, उसको बुलाओ।"

गोबरपथनी बुला लाई गई। वह ज्यों ही आकर उस पौधे के नीचे खड़ी हुई त्यों ही दोनों फूलों में से दो सुन्दर लड़की लड़के निकल कर उसकी गोद में आ कूदे। सब लोग चकित हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तब राजा ने दोनों लड़के लड़की को पास बुला कर प्यार से पूछा—"तुम लोग कौन हो ?" दोनों बालकों ने कहा—"हम आपके बेटा बेटी हैं। बड़ी रानी हमारी माँ है। जब हमारा जन्म हुआ तब हमारी माँ से डाह करके छोटी रानी ने दाई की मार्फ़त हमको घूर पर गड़वा दिया। वहाँ हम फूल बन कर उगे थे।" यह सुन कर राजा ने कहा—"आदमी कहीं फूल होता है ?" तब बच्चों ने कहा—"आदमी के पेट से कहीं काठ की पुतली पैदा होती है ?" तब राजा को सब बातें याद आईं। उनके जी में बड़ा अफ़सोस हुआ। वह बोले—"ठीक कहते हो, मेरी ही नासमझी से बड़ी रानी को इतना कष्ट हुआ।" आँखों से आँसुओं की धारा चलने लगी। छोटी रानी की चालाकी की बात सोच कर राजा क्रोध से काँपने लगे। उन्होंने गड्ढा खोद कर छोटी रानी को जीते गड़वा देने का हुक्म दिया। पीछे बड़ी रानी को लेकर सुख से राज करने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूचना

यह अद्भुत कथा श्रीश्यामाचरण दे-प्रणीत 'वङ्गेर उपकथा' का हिन्दी अनुवाद है। बालक-बालिकागण स्वभावत: किस्से-कहानी सुनने के अनुरागी होते हैं। इस पुस्तक में ऐसी विचित्र विचित्र हृदयाकर्षक कहानियाँ हैं, जिन्हें लड़के बड़े चाव से सुनें और पढ़ेंगे। साथ साथ उनको हिन्दी पढ़ने का अभ्यास भी अनायास ही प्राप्त होगा और इन कहानियों से उन्हें बहुत कुछ शिक्षा भी मिलेगी। सम्भवत: यही सोच कर ग्रन्थकर्ता महाशय ने उक्त पुस्तक का निर्म्माण किया है। यह बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी के पढ़ने योग्य है।

इस पुस्तक के अनुवाद में मुझे स्वर्णमाला बनारस के अध्यक्ष बाबू महावीरप्रसाद गहमरी से पूरी सहायता मिली है, इसलिए मैं उन्हें शतश: धन्यवाद देता हूँ।

यदि इस पुस्तक के प्रचार से हिन्दी के पाठक कुछ लाभ उठावेंगे तो अनुवादक तथा प्रकाशक अपने आयास को सफल समझेंगे।

जनार्दन झा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुफलकुमार की कथा

एक बहुत बड़ा तालाब था। तालाब के पास ही बग़ीचा था। उसमें तरह तरह के फल-फूल और पेड़ थे। राजा की लड़की सखियों-सहित वहाँ जाकर सात पौधों से सात डाली फूल तोड़ती। संध्या को हवा में फूलों की खुशबू फैल कर चारों ओर महकने लगती थी। राजा की लड़की उस समय सखियों को लेकर बग़ीचे में टहलने आती। बग़ीचे के बाद थोड़ी ही दूर पर सघन वन था। वहाँ कोई मनुष्य न जाता था, सिर्फ़ बाघ-भालुओं की आवाज़ और चिड़ियों की चहचह सुनाई देती। वह परिस्तान था। वहाँ सात परियाँ रहती थीं।

उस राज्य के राजा के एक लड़का था और एक लड़की। लड़के का नाम सुफलकुमार था। बचपन में वह बग़ीचे में बैठा रहता और परियाँ ऊपर से आया जाया करतीं। परियाँ छोटेपन से राजकुमार को बहुत प्यार करतीं। सात परियों में से छोटी परी के साथ कुमार का अधिक प्रेम था। परियाँ आदमी से मिलतीं पर किसी आदमी को अपने राज्य में घुसने नहीं देतीं।

कुमार बग़ीचे के बँगले में बैठ कर परियों के साथ खेला करता। एक दिन परियों ने खेलते समय कहा—"भाई कुमार!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुमको व्याह करने की ज़रूरत नहीं है। अगर तुम व्याह करोगे तो बचोगे नहीं"। कुमार ने कहा—"अच्छा, तुम लोग कहती हो तो मैं व्याह नहीं करूँगा, तुम्हीं लोगों का कहना करूँगा"। इधर राजा-रानी में कुमार के व्याह की बात चल रही थी। राजा ने कहा—"कुमार बड़ा हुआ, अब उसका व्याह कर देना चाहिए। तुम ज़रा उससे पूछ तो देखो"। रानी ने कहा—"उससे क्या पूछना होगा? तुम व्याह का ठीक-ठाक करो"। इसके बाद व्याह ठीक हो गया। नाई-ब्राह्मण कन्या देख आये। ज्योतिषी ने गणना करके राशि-वर्ग मिला दिया। कुमार यह ख़बर पाकर बड़े सोच में पड़ा। उसने रानी से जाकर कहा—"माताजी! आप लोग क्यों मेरे व्याह का बन्दोबस्त कर रहे हैं? मैं कभी व्याह नहीं करूँगा। परियों ने कहा है कि व्याह करने से ही मैं मर जाऊँगा"। रानी ने कहा—"राम राम छिः! यह क्या कहते हो? ऐसी बात मुँह पर मत लाना। अगर व्याह करने से ही आदमी मर जाते तो दुनिया में कोई आदमी न दिखाई देता। बेटा! यह सब विचार तुमको नहीं करना होगा। हम लोग जो करते हैं तुम्हारे अच्छे के लिए ही करते हैं। तुम झूठ मूठ ख़राब बात मत सोचो"।

रानी की बातों से कुमार के जी का बोझ हलका नहीं हुआ। दूसरे दिन जब परियों से भेंट हुई तब कुमार का चेहरा देख कर ही परियाँ सब समझ गईं। छोटी परी ने कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"कुमार ! राजा किसी की नहीं सुनेंगे। वह तुम्हारा ब्याह ज़रूर कर देंगे। तुम कुछ उज्र मत करो। अलबत्ता राजा से इतना कह रक्खो कि तुम्हारे मरने पर तुम्हारी लाश जलाई न जाय, वन की तरफ़ एक मन्दिर बनवा कर उसी के भीतर रख दी जाय।" दूसरे दिन कुमार ने रानी से जाकर कहा—"माताजी ! अगर आप लोगों की मेरा ब्याह कर देने की ऐसी ही इच्छा है तो मेरी बात माननी होगी। यह सच मानो कि ब्याह होते ही मैं मर जाऊँगा। मर जाऊँ तो मेरी लाश को जलाने के बदले एक मन्दिर बनवा कर उसमें रखवा देना। यह सुन कर रानी ने कहा—"बच्चा ! तुम पागल हो गये हो क्या ? ऐसी अशुभ बात मत बोलो"। कुमार और कुछ न कह कर चला गया।

इसके बाद ब्याह का दिन आया। राजमहल में धूम मच गई। चारों ओर से निमन्त्रित लोग, मिठाई-पूरी आदि न जाने क्या क्या आने लगा। यह ले, वह दे, यहाँ जाओ, उसको बुलाओ, की आवाज़ों से चहल पहल होने लगी। सबेरे से ही सहनाई बज रही है; धीरे धीरे ढाक-ढोल बैण्ड आदि की गड़गड़ाहट होने लगी। दिन भर धूमधाम रही।

एक पहर रात गई। ब्याह का लग्न आगया है। अभी सुमंगली होगी। वर-कन्या को पहना ओढ़ा कर मण्डप में ले गये। ब्याह का कार्य आरम्भ हुआ। स्त्रियाँ मङ्गल-गीत गाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगीं। दोनों ओर के पुरोहितों ने शाखोच्चार किया। अन्त में ज्योंही सात भाँवरी समाप्त हुईं त्योंही कुमार लुढ़क गया। सब लोग हाय हाय करने लगे। राजा और रानी को शोक से मूर्च्छा आ गई। पर जो होना था वह हो गया। कोई क्या करता? कुमार की लाश जलाई नहीं गई, वह राजकुमार के कहने के अनुसार एक मन्दिर के भीतर रख दी गई। राजा-रानी को जो शोक हुआ उसका क्या बयान किया जाय।

मन्दिर के भीतर किसी के जाने योग्य नहीं है। परियाँ वहाँ आया जाया करतीं। डर के मारे उधर से कोई नहीं जाता।

एक दिन दो दिन, महीना दो महीने, वर्ष दो वर्ष करते करते पाँच वर्ष बीत गये। कुमार की स्त्री अब सयानी हो गई। व्याह के बाद पति से भेंट नहीं हुई। एक दिन कुमार की स्त्री ने मन्दिर के पास जाकर द्वार को तीन बार खटखटाया। धड़ से दरवाज़ा खुल गया।

केवल परियाँ उस दरवाज़े को खोलना जानती थीं; और कोई नहीं। दरवाज़ा खुलते ही कुमार की स्त्री मन्दिर के भीतर बैठ गई। उसने भीतर जाकर देखा कि चारपाई पर कुमार मुर्दे की तरह पड़ा है और उसके सिराहने एक सोने की लकड़ी और पैताने एक चाँदी की लकड़ी पड़ी है। उसने योंही दोनों लकड़ियों को हाथ में उठा लिया। फिर क्या जाने क्या सोच कर वह जहाँ की लकड़ी वहाँ रखने लगी। उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय ठीक याद नहीं रहा कि कौन लकड़ी कहाँ थी। उसने सोने की लकड़ी पैताने और चाँदी की लकड़ी सिरहाने रख दी। ऐसा करना था कि कुमार उठ कर बैठ गया! कुमार चकित रह गया। फिर उसने पूछा—"तुम कौन हो? इस मन्दिर के भीतर क्यों आई हो"? उसकी स्त्री ने कहा—"मैं तुम्हारी स्त्री हूँ; जब मैं दस वर्ष की थी तब तुम्हारे साथ मेरा व्याह हुआ था। व्याह के दिन ही मैं विधवा हो गई। क्या तुमको कुछ याद नहीं है"? यह बात सुन कर कुमार ने कहा—"हाँ हाँ याद पड़ता है। तो तुम यहाँ आ गई हो? परियाँ देखेंगी तो तुमको मार डालेंगी। और मुझे भी मार डालेंगी। तब दोनों आदमी एक दम मारे जायँगे"!

कुमार की स्त्री ने कहा—"इतने दिनों के बाद जब मैंने तुमको पाया है तब मैं किसी तरह तुमको छोड़ कर नहीं जाऊँगी"। तब कुमार ने कुछ देर चुप रह कर सोचा और फिर कहा—"अच्छा एक काम करो। इस सोने की लकड़ी को धोकर पानी पी जाओ। तब तुम मक्खी हो जाओगी और कोई तुमको देख नहीं सकेगा। फिर जब कोई न रहे तब चाँदी की लकड़ी पर आकर बैठने से ही आदमी हो जाओगी"। यह सुन कर उसकी स्त्री बहुत ख़ुश हुई। तब से परियों के मन्दिर में आने का समय होने पर कुमार सो रहता और उसकी स्त्री पैताने की लकड़ी सिरहाने और सिरहाने की लकड़ी पैताने रख देती। और

२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप मक्खी बन कर छिप जाती। परियाँ मन्दिर में आते ही जिलातीं और जाने के समय मुर्दा बना देतीं।

जिस दिन कुमार की स्त्री मन्दिर में आई उसी दिन परियों ने मन्दिर में पैर रखते ही कुमार से पूछा—"कुमार! आज मन्दिर के भीतर आदमी की महक क्यों आती है"? कुमार ने कहा—"आदमी की महक यहाँ कहाँ से आवेगी? तुम लोग जानती ही हो कि यहाँ कोई आदमी नहीं आ सकता"। तब परियों ने सोचा कि हम लोगों की ही भूल होगी। दूसरे दिन छोटी परी ने आकर कहा—"ज़रूर यहाँ कोई आदमी आया है"। तब कुमार ने कुछ क्रोध करके कहा—"तो क्या मेरी बात पर विश्वास नहीं होता? तुम लोगों के सिवा और कौन मन्दिर का द्वार खोल सकता है? तुम लोग जाने के समय रोज़ मुझको मुर्दा बना जाती हो और तुम्हीं लोग आकर मुझको जिलाती हो तो भी मुझ पर सन्देह होता है"। तब दूसरी परियों ने छोटी परी से कहा—"क्यों झूठ मूठ एक आदमी पर सन्देह करती है"? तब छोटी परी चुप हो गई। इसके बाद परियाँ जैसे रोज़ जाती थीं वैसे चली गईं।

इस तरह बहुत दिन बीत गये। कुमार की स्त्री के गर्भ रह गया। देखते ही देखते दस महीने पूरे हो गये। लड़का होने का समय आया। कुमार बड़े सोच में पड़ा। बहुत सोच-विचार कर उसने कहा—"अब तुम्हारा यहाँ रहना ठीक नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यहाँ रहने से परियाँ ज़रूर जान जायँगी"। उसकी स्त्री विपद जान कर रोने लगी और कुमार से बोली—"अब क्या उपाय है। मेरा और कौन है कि जिसके पास जाकर रहूँगी"? कुमार ने कहा—"एक काम करो। तुम मेरी माँ के पास जाओ। माँ अगर तुमको जगह न दे तो मेरी बहन के पास जाना, वह ज़रूर तुमको जगह देगी"। बेचारी क्या करती, रो-कलप कर वह मन्दिर से बाहर निकल पड़ी।

कुमार की स्त्री एक भिखमंगिन की शकल लेकर राजमहल में गई। उसने वहाँ जाकर रानी से कहा—"माँ जी! मैं बड़ी दुखिया हूँ। रानी जी से ज़रा जगह माँगती हूँ। मुझे महल में रहने के लिए स्थान दीजिए।" रानी ने कहा—"तू कौन है, किस जाति की लड़की है, तुझे कैसे जगह दूँ?" उसने डब-डबाई आँखों से कहा—"रानी जी! मैं बड़ी दुखिया हूँ, इस दुनिया में मेरा और कोई नहीं है। तिस पर मेरे दस महीने पूरे हो गये हैं, मुझे किसी कोने में जगह दीजिए।" रानी ने झुँझला कर कहा—"नहीं नहीं। न जाने कौन कहाँ से आई है। राजमहल में तुझे जगह नहीं मिलेगी।" राजा की लड़की वहाँ बैठी थी। रानी की यह बात सुन कर उसके चित्त पर चोट लगी। उसने रानी से कहा—"माँ! क्या तुम्हारे जी में कुछ भी दया नहीं है? बेचारी किसी भले घर की बहू-बेटी है, दुःख में पड़ कर यहाँ आई है। रहने के लिए थोड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जगह दे न दो माँ !" तब रानी का मन ज़रा पिघला। उसने लड़की की बात सुन कर कहा—"बेटी ! कहाँ कोठरी है कि दूँ ? दम पाकर कुमार की स्त्री ने कहा—"माँ जी ! इस कोठरी का द्वार बन्द है, इसी को दीजिए न। आप लोगों की दया होने पर क्या कोठरी की कमी होगी ?" राजा की लड़की ने कहा—"उस कोठरी की बात मत कहो। उस कोठरी का द्वार एक दम बन्द हो गया है, अब वह खुलता ही नहीं। जब से मेरे भैया मरे तब से वह कोठरी यों ही पड़ी है। तुम आओ, तुम्हें कोठरी देती हूँ।" कुमार की स्त्री ने कहा— "चलो न राजकुमारी ! एक बार उस कोठरी को देखें। यह कह कर उसने जाकर दरवाज़े पर धक्का दिया। तब क्या हुआ कि ज्यों ही छुआ त्यों ही दरवाज़ा खुल गया। सब लोग एक दूसरे का मुँह देखने लगे। रानी ने कहा—"बड़े आश्चर्य की बात है ! जब से कुमार मरा तब से इस घर का द्वार किसी से नहीं खुला और इस भिखमंगिन ने ज्यों ही छुआ त्यों ही द्वार खुल गया !" रानी ने उसी घर में उसको रख दिया।

कुछ दिन बीते। एक दिन रात को परियाँ कुमार के साथ हँस-बोल रही थीं, इतने में अचानक राजमहल से सोहर की आवाज़ सुन पड़ी। कुमार समझ गया कि मेरी स्त्री के लड़का हुआ। इसके साथ क्या हुआ कि कुमार का बदन काँप उठा। परियों ने कहा—"यह क्या ? तुम ऐसा क्यों करते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो ?" कुमार ने सिटपिटा कर कहा—"क्या जाने क्यों मेरा बदन काँप उठा।" छोटी परी ने कहा—"कुमार! मैं तुम्हारी सब चालबाज़ी समझ गई हूँ।" कुमार ने ज़रा मुँह फुला कर कहा—"तुम सिर्फ़ मेरा दोष ढूँढ़ा करती हो।" तब दूसरी परियों ने कहा—"क्यों तू बिना जाने बूझे एक आदमी पर शक करती है ?" तब छोटी परी चुप मार गई। उस दिन परियों के जाते समय कुमार ने बड़ी परी से कहा—"आज मुझे मुर्दा मत बनाओ।" तब परियों ने पूछा—"आज ऐसा क्यों कहते हो ?" कुमार ने अनखा कर कहा—"रोज़ ही तो तुम लोग मुझे मुर्दा बना जाती हो। आज मन कर गया है इसी से कहता हूँ। आदमी का मन क्या नहीं करता ? मैं अगर माँ को अपना शरीर मन्दिर में रखने के लिए न कहता तो तुम लोग मुझे कहाँ पातीं ? मुझे तीन दिन मुर्दा मत बनाओ। मेरा मन करता है कि देखें कैसा लगता है।"

छोटी परी ने कहा—"यह कभी नहीं होगा।" दूसरी परियों को दया आई। उन्होंने कहा—"अच्छा, तीन दिन तो नहीं मगर तीन रात हम तुमको नहीं मारेंगी।" छोटी परी और कुछ नहीं बोली। कुमार ने कहा—"अच्छा, यही सही।" इसके बाद उसने छोटी परी की ओर कनखी ताक कर कहा—"तुम लोग मुझे मुर्दा बना कर चली जाती हो और रोज़ आकर जिलाती हो। तुम लोग वन-जंगल में घूमती हो। अगर तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगों को कोई मार आर डाले तब मेरी क्या हालत होगी ?" यह सुन कर बड़ी परी ने कहा—"अजी ! ऐसा कभी हो सकता है ? किसका दिन है कि हम लोगों को मारेगा ? यह जो छोटी परी के गले में सात लड़ियों का हार देखते हैं उसी में हम लोगों का प्राण बसता है। तुमको मुर्दा बना कर हम लोग तकिये के नीचे वह हार रख जाती हैं। हम लोगों के बिना आये मन्दिर का द्वार भी नहीं खुलेगा। और तुम भी जीते नहीं रहते कि तुमको सोच होगा।" कुमार ने कहा—"ख़ैर आज से मेरी एक चिन्ता मिटी। पर एक बात जानने की मेरी बड़ी इच्छा होती है। हार की लड़ियों में तुम लोगों का प्राण कैसे बसता है ?" बड़ी परी ने जवाब दिया—"इन सात लड़ियों से हम सातों का जन्म हुआ है। एक एक लड़ी के तोड़ने से एक एक परी का प्राण जायगा।" कुमार ने चकरा कर कहा—"ऐसा ! तब तो इस हार को ख़ूब ख़बरदारी से रखना होगा।" उस दिन और कोई बात नहीं हुई।

रात हो गई। राजमहल में सब लोग सो गये। सन्नाटा छा गया। कुमार की स्त्री बालक को लेकर सोई थी। जब से लड़का हुआ तब से राजा की लड़की भी उसी घर में सोती थी। परियाँ साँझ होने पर जिधर तिधर चली गईं। कुमार जागता रहा। इसके बाद सुनसान रात को वह चुपके चुपके मन्दिर से बाहर निकला और धीरे धीरे अपनी कोठरी की खिड़की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की तरफ़ पिछवाड़े आकर खड़ा हुआ। उसने आवाज़ दी—"जागती हो ?" स्त्री आवाज़ सुनते ही पहचान गई। वह बोली—"जागती हूँ।"

प्रश्न—आज क्या खाया ?

उत्तर—दाल-भात।

प्रश्न—सोई हो किस पर ?

उत्तर—फटी चटाई पर।

प्रश्न—घर में कौन कौन हैं ?

उत्तर—मैं, तुम्हारा लड़का और तुम्हारी बहन (मेरी ननन्द)।

इसके अनन्तर कुमार—"कुछ परवा नहीं" कह कर मन्दिर को चला गया। राजा की लड़की ने कान लगा कर सब सुना।

बिलकुल सबेरा भी नहीं होने पाया था कि राजा की लड़की उठ कर रानी के पास दौड़ी गई और बोली—"मा! कल रात को जो हुआ वह तुम से क्या बताऊँ ? यह स्त्री और कोई नहीं, तुम्हारी ही पतोहू है। कल अधिक रात जाने पर भैया आकर मकान के पिछवाड़े से इसके साथ बात-चीत कर गये। मैंने कान लगा कर सब बातें सुनीं।" रानी सुन कर इतनी ख़ुश हुई मानो हाथ में चाँद पा गई। वह बोली—"तो क्या मेरा लाल अभी जीता है ?" रानी का मन डाँवाडोल होने लगा। उसने कहा—"आज मैं ही सौरीघर में जाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोऊँगी। अपने कानों से आज अपने लाल की बातें सुनूँगी।" दिन भर रानी यही बात सोचती रही कि कब रात हो, कब रात हो। रात होने पर कुमार फिर आकर पिछवाड़े से बोला—"जागती हो?"

उत्तर—जागती हूँ।

प्रश्न—घर में कौन कौन हैं?

उत्तर—मैं, तुम्हारा लड़का और तुम्हारी माँ (मेरी सास)।

प्रश्न—आज क्या खाया?

उत्तर—ओछवानी।

प्रश्न—किस पर सोई हो?

उत्तर—खाट पर।

इसके बाद "कुछ परवा नहीं" कह कर उस दिन भी कुमार चला गया। रानी ने कान लगा कर सब सुना।

रात भर रानी को नींद नहीं आई। सवेरा होते ही रानी ने जाकर राजा से सब हाल कहा। राजा सुन कर आश्चर्य में आगये। उन्होंने कहा—"आज मैं भी सुनूँगा"। आज भी रानी जाकर उसी कोठरी में सोई। राजा एक पेड़ की आड़ में खड़े हो गये। रोज़ की तरह कुमार ने आकर पिछवाड़े से पुकारा—"जागती हो?"

उत्तर—जागती हूँ।

प्रश्न—घर में कौन कौन हैं?

उत्तर—मैं, तुम्हारा लड़का और तुम्हारी माँ (मेरी सास)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा से अब रहा नहीं गया। वह झटपट कुमार को पकड़ने गये। कुमार ने पीछे हट कर कहा—"मत, मत, मुझे छुइए मत। मुझको छुइएगा तो परियाँ मुझे एक दम मार डालेंगी।" राजा ने कहा—"इतने दिनों के बाद तुमको पाया है, आज किसी तरह नहीं जाने दूँगा।" कुमार ने कहा—"मेरा उद्धार इस समय मेरी स्त्री के हाथ में है। वह बरही के दिन नाखून कटा नहा-धो शुद्ध होकर मन्दिर के भीतर जाय और मेरे तकिये के नीचे जो एक हार रक्खा है उसे उठा लावे। उस हार की एक एक लड़ी तोड़ने से एक एक परी का प्राण जायगा।" राजा ने सब सुन लिया।

धीरे धीरे बरही आई। कुमार की स्त्री सौरीघर से निकल कर नहा-धो कर शुद्ध हुई। फिर उसने मन्दिर में जाकर जियन-लकड़ी मरणलकड़ी उलट पुलट करके कुमार को जिलाया। पीछे उसने तकिये के नीचे से हार उठा लिया। तब परियों को छनग हुआ। वे मन्दिर की ओर दौड़ीं। इधर कुमार की स्त्री हार की एक एक लड़ी तोड़ने लगी और उधर एक एक परी गिर कर धरती में लोटने लगी। इस तरह मन्दिर के पास पहुँचते पहुँचते सातों परियाँ मारी गईं। तब कुमार स्त्री को लेकर घर आया। रानी ने आकर बेटे को गोद में लिया और आँचल बिछा कर बहू को बिठाया। राजा की लड़की ने आरती उतारी। राजधानी फिर आनन्द से गुलज़ार हुई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राक्षसी रानी की कथा

(१)

एक ग़रीब ब्राह्मण के चार लड़के थे। उनके दिन बड़े दुःख से कटते थे। माँ-बाप या अपना कोई नहीं था। घर में कोई औरत भी नहीं थी कि रोटी तो पका देती। वे किसी तरह गुज़र करते थे। एक दिन तीन भाई जङ्गल में लकड़ी काटने गये और छोटे भाई को रसोई-पानी करने के लिए घर पर छोड़ गये। कुछ देर बाद तीनों भाई लकड़ियाँ लिये लौट रहे थे कि इतने में उन्होंने देखा कि रास्ते में एक सुन्दर बकरी खड़ी है। वे लोग वहाँ खड़े होकर बकरी को देखने लगे। उनको खड़े देख कर बकरी डग बढ़ाती हुई वन में चली गई।

बोझ लिये लिये तीनों भाई थक गये, इससे उन्होंने सोचा कि किसी पेड़ के नीचे बैठ कर ज़रा सुस्ता लें। सब अपना अपना बोझ उतार कर पेड़ तले बैठ गये। वे बैठे बैठे बातचीत कर रहे थे कि इतने में वह बकरी एक राक्षसी का रूप धर कर अचानक उन पर टूट पड़ी। वे सब ठिठक गये। देखते ही देखते वह राक्षसी तीनों भाइयों को निगल गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर छोटा भाई रसोई-पानी करके बड़े भाइयों की बाट देखता था। अब आते हैं, अब आते हैं, करते करते बहुत विलम्ब होगया। तब उसके जी में खटका होने लगा। जब उसने किसी को आते न देखा तब वह उनकी खोज में घर से निकला। वह चलते चलते उसी पेड़ के नीचे आ पहुँचा। वहाँ उसने जो कुछ देखा उससे उसका सिर चक्कर खाने लगा। उसने पेड़ के नीचे लहू लगे तीन कपड़े और तीन कुल्हाड़ियाँ पड़ी देखीं। कपड़े और कुल्हाड़ियाँ देखते ही वह पहचान गया कि ये सब चीज़ें मेरे ही भाइयों की हैं। तब वह समझ गया कि मेरी भाइयों की यह क्या दशा हुई है। भाइयों के शोक में वह फूट फूट कर रोने लगा। उसका रोना सुन कर वह बकरी फिर धीरे धीरे उसके सामने आने लगी।

कुछ देर रो-कलप कर छोटा भाई उदास मन से घर लौटा। उसने फिर कर पीछे देखा कि पीछे पीछे एक बकरी आ रही है। उसने कुछ ख़याल नहीं किया और वह आगे बढ़ता गया। कुछ दूर जाने पर उसने फिर उलट कर देखा तो वह बकरी उसकी ओर दौड़ती आती दिखाई पड़ी। उसने उस समय नहीं समझा कि बकरी दौड़ी क्यों आ रही है। अधिक देर होते देख कर वह तेज़ी से चलने लगा। फिर जो उसने पीछे उलट कर ताका तो बकरी नदारद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किन्तु उसके पीछे ही पीछे एक बड़ी खूबसूरत कन्या आ रही थी। तब उसके मन में सन्देह हुआ। उसने सोचा—"बकरी थी कि राक्षसी ? क्या जाने यह कन्या ही कौन है ? यह सब राक्षसी की लीला तो नहीं है ? तो क्या यही राक्षसी मेरे तीनों भाइयों को खा गई है ? अब मुझे भी खाने के लिए कन्या का भेष धर कर मेरे पीछे लगी है।" यह सोच कर वह दौड़ने लगा। तब वह कन्या के भेष वाली राक्षसी भी पीछे पीछे दौड़ने लगी।

वह इस तरह दौड़ते दौड़ते बहुत दूर निकल आया। सामने राजमहल आ गया। रास्ते में लोगों को देख कर वह कन्या कहने लगी—"देखो हे लोगो ! मेरा पति मुझको छोड़-कर चला जाता है। मैं तुम लोगों के पैरों पड़ती हूँ। एक बार मेरे पति को पकड़ा दो।" राह चलते लोगों ने सोचा—यह क्या माजरा है ? यह आदमी इस तरह क्यों दौड़ा जाता है ? और यह स्त्री ऐसा क्यों कहती है ? राजमहल के सामने लोगों की भीड़ लग गई। महल के सामने शोरगुल सुन कर पहरेदार सिपाहियों ने ब्राह्मण के लड़के और उस कन्या को पकड़ कर राजा के सामने पेश किया। मंत्री ने ब्राह्मण के लड़के से पूछा—"तुम लोग कौन हो ?" ब्राह्मण के लड़के ने कहा—"यह स्त्री राक्षसी है। मेरे तीन भाई लकड़ी काटने गये थे, यह राक्षसी उनको पकड़ कर खा गई है। अब यह मुझे खाने के लिए पीछे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ी है।" स्त्री कहने लगी—"यह मेरे पति हैं ! मुझ पर नाराज़ होकर मुझे छोड़ भागे जाते हैं। दुहाई राजा की ! इसका विचार कीजिए।" तब राजा ने ब्राह्मण के लड़के से कहा—"तुम स्त्री को छोड़कर चले जाते हो, यह कभी नहीं होने पावेगा। तुम जल्द इसको लेकर घर जाओ, नहीं तो मैं तुमको दण्ड दूँगा।" ब्राह्मण के लड़के ने कहा—"दुहाई राजा की ! मैं झूठ नहीं कहता। यह आदमी नहीं है, असल में राक्षसी है।"

राजा ने कहा—"हत् पागल ! ऐसा भी कहीं होता है ? तुमने क्या मुझे मूर्ख समझा है ? मैं सब समझ गया। सुन्दर आदमी है, इसको तू राक्षसी कहता है ? भला चाहता है तो तू इसको लेकर घर जा।" ब्राह्मण का लड़का बड़े संकट में पड़ा। उसने हाथ जोड़ कर कहा—"अगर आप इसको आदमी समझते हैं तो आप ही व्याह करके इसे अपने घर रक्खें। देखते हैं कैसा सोने का सा रूप है। नागिन सी लट छटक रही है। ऐसी कन्या को रानी बनाने से अँधेरे घर में उजाला होगा।" राजा को यह बात बहुत पसन्द आई। वह बोले—"अच्छा ! यही होगा।" ब्राह्मण का लड़का राक्षसी के हाथ से बच कर राजा को आशीर्वाद देते हुए घर चला गया।"

(२)

राजा ने बाजे-गाजे के साथ भोजभात करके बड़ी धूमधाम से उस कन्या से व्याह किया। रानी होकर कन्या बहुत ख़ुश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुई। अब राजा दो रानियों सहित रहने लगे। कुछ दिन बीते, एक दिन चरवाहे ने आकर कहा—"राजा जी! रोज़ दो एक भेड़ें ला-पता हो रही हैं।" इसके बाद उसने एक दिन कहा—"राजा जी! रोज़ दो एक गाय-बैल ग़ायब हो रहे हैं।" अस्तबल से ख़बर आई कि कई घोड़े नहीं मिलते। इस तरह हथसाल में हाथी, घुड़साल में घोड़े और चिड़ियाख़ाने में चिड़ियाँ रोज़ रोज़ घटने लगीं। चारों ओर से रोज़ ऐसी ही ख़बरें आने लगीं। राजा बड़े सोच में पड़े। उनकी समझ में नहीं आया कि ऐसा क्यों हो रहा है। सिपाही, चौकीदार, फ़ौज-पलटन से कुछ भी पता नहीं चलता। रात को कड़ा पहरा रहता है, तो भी रोज़ राज्य के हाथी, घोड़े, गाय, बैल एक एक करके गुम होने लगे। शहर-कोतवाल ने बड़ी जाँच-पड़ताल की। तो भी चोर पकड़ा नहीं गया। राज्य में खलबली पड़ गई।

लोग कानाफूसी करने लगे कि छोटी रानी जब से आई है तब से राज्य में ऐसा अमंगल हो रहा है। सब लोग कहने लगे कि राजा का एक बेजानी-बूझी लड़की से ब्याह कर लेना अच्छा नहीं हुआ। उस ब्राह्मण के लड़के ने जो कहा था वही हुआ। अब राजा क्या करें, चुप रहने से काम नहीं चलता। सात पाँच करके राजा ने मंत्री को बुलाकर कहा—"राज्य में तो गड़बड़ मच रही है, इसका उपाय क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मंत्री ने कहा—"महाराज! जान बख़्श पाऊँ तो कहूँ।" राजा ने कहा—"कहो"। तब मंत्री ने कहा कि महाराज! मुझे जान पड़ता है कि उस ब्राह्मण के लड़के की बात ही सच है। आपकी छोटी रानी शायद राक्षसी ही है। मालूम होता है कि यह सब उसी की कारस्तानी है।" दूसरे आदमियों ने भी यही बात कही। तब राजा ने कहा—"आज मैं ही छोटी रानी पर पहरा दूँगा।" इधर राक्षसी रानी को चुपके चुपके सब पता लग गया।

इसके बाद रोज़ की तरह खा पीकर सब लोग सोने गये। सिपाही-संतरी चारों ओर पहरा देने लगे। राजा आज छोटी रानी के घर सोने गये। आज उन्होंने पहले की तरह प्यार नहीं किया। दोनों मुँह फुलाये हुए थे। पर रह रहकर जी बहलाने के लिए हँस-बोल देते थे। राजा इस फ़िक्र में हैं कि छोटी रानी सचमुच राक्षसी है कि नहीं। और छोटी रानी इस फ़िक्र में है कि राजा कब सोवेंगे। इसके बाद छोटी रानी आँखें मूँद कर झूठमूठ नाक बजाने लगी, मानो सो गई। रानी सो गई जान कर राजा भी सोगये। राजा ने सोचा था कि रात भर जागूँगा। पर ठीक समय पर खुर्राटे लेने लगे।

ज्यों ही राजा सो गये त्योंही रानी ने झटपट बिछौने से उठ कर, एक जड़ी राजा को सुँघा दी। राजा बे-ख़बर सो गये। तब उस सुनसान रात में राक्षसी रानी धीरे धीरे महल से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकल कर गोशाला में गई। वहाँ कितने ही सिपाही-संतरी पहरा देते थे। राक्षसी ने ऐसा रूप धरा कि कोई उसको देख न सका। राक्षसी रानी गोशाला के भीतर घुस गई और वहाँ एक बैल मार कर खाने लगी। देखते ही देखते वह चाम मांस सब खा गई; सिर्फ़ एक टाँग और थोड़ा लहू उसने छोड़ दिया। पीछे वह टाँग और लहू लेकर चुपके चुपके महल में बड़ी रानी के घर गई। बड़ी रानी उस समय बे-ख़बर सोई हुई थी। राक्षसी रानी ने चुपके चुपके पलँग पर जाकर रानी के मुँह और कपड़े में ख़ून लपेट दिया और टाँग कोठरी के एक कोने में रखकर वह झट बाहर निकल गई। फिर वह अपने घर में जाकर चुपके से सो रही।

राजा ने सवेरे नींद से उठ कर देखा कि छोटी रानी बग़ल में ज्यों की त्यों सोई हुई है। राजा ने सोचा कि छोटी रानी कभी राक्षसी नहीं हो सकती। राजा के उठने के थोड़ी ही देर बाद छोटी रानी अँगड़ाई लेकर उठ बैठी। वह राजा से बोली—"महाराज! चलिए देखें बड़ी रानी कैसे सोती है"। यह कह कर वह राजा का हाथ धर कर बड़ी रानी के घर लिवा ले गई। राजा घर में घुसते ही बड़ी रानी के मुँह में और कपड़े पर लहू के दाग़ देख कर चौंक पड़े। तब उन्होंने उसको जगा कर पूछा—"तुम्हारे मुँह और कपड़े पर लहू का दाग़ कैसा है"? रानी अकचका कर बोली—"क्या जानें। मुझे तो कुछ मालूम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं"। बड़ी रानी के सिर पर मानो वज्र आ गिरा। बेचारी क्या बोले, मुँह से बात नहीं निकलती। इतने में छोटी रानी ने कहा—"आप लोग झूठ मूठ मेरे ऊपर सन्देह करते हैं कि मैं राज्य के सब पशुओं को पकड़ कर खा जाती हूँ। अब तो आपने देख लिया कि यह सब कौन करता है। बड़ी रानी ने कल गोशाला से बैल पकड़ कर खाया है, इसी से उसके मुँह और कपड़े में खून के दाग़ लगे हैं। और यह देखिए घर के कोने में एक टाँग भी पड़ी हुई है। छिः छिः। आप राजा होकर बेक़सूर आदमी पर सन्देह करते हैं? मुझ पर आप लोगों का कलङ्क लगाना क्या उचित है"?

राजा छोटी रानी की बात पर विश्वास करके क्रोध से काँपते काँपते बड़ी रानी के घर से बाहर चले गये। इसके बाद उन्होंने बड़ी रानी को वन में खदेड़ देने का हुक्म दिया।

(३)

राजा ने और किसी की बात नहीं सुनी, उसी राक्षसी रानी की बात पर विश्वास करके बड़ी रानी को घर से निकाल दिया। मंत्री-दीवान और राज्य के सब लोग राजा का हुक्म सुन कर अफ़सोस करने लगे। सब लोगों के चेहरे पर उदासी छा गई। बड़ी रानी रोती-कलपती वन को चली गई। उस समय उसके पाँच महीने का गर्भ था। उसके शोक से पेड़-पत्ते भी बिलखने लगे। रानी कंगालिन के भेष में वन वन ठोकर खाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगी। जाते जाते एक ग्वालिन से उसकी भेट हुई। रानी भिखमंगिन बन कर उस ग्वालिन के घर के पास एक झोंपड़ी बना कर रहने लगी। रोते रोते रानी के दिन कटते थे। ग्वालिन उसको समझाया करती—"माँजी! तुम रोओ मत। दीनबन्धु भगवान् सब दुःख दूर करेंगे"। होते होते रानी के दस महीने पूरे हो गये। तब झोंपड़ी के भीतर रानी के एक सुन्दर लड़का हुआ। ग्वालिन ने सौरी का सब काम कर दिया। लड़का झोपड़ी में दूज के चाँद की तरह रोज़ एक जौ बढ़ने लगा। रानी को वन का दुःख भूल गया। योंही करते करते कई वर्ष बीत गये। धीरे धीरे बड़ी रानी के बेटे ने दसवें वर्ष में पैर रक्खा। वह अब बहुत बातें समझता बूझता था। वह रोज़ लकड़हारों के लड़कों के संग खेलने जाता। एक दिन वन में खेलते खेलते लकड़हारों के लड़के उसे पूछ बैठे—"क्यों भाई! क्या तुम्हारे बाप नहीं हैं? हम सबके तो बाप हैं। तुम्हारे बाप कहाँ हैं"? यह कहके लड़के उसकी दिल्लगी उड़ाने लगे। रानी के लड़के ने उनकी बात का कुछ जवाब न दे सकने के कारण लाज से अपना सिर नीचे कर लिया। वह खेल छोड़ कर धीरे धीरे माँ के पास चला आया।

रानी झोंपड़ी के भीतर बैठ कर अपने भाग्य की बात सोच रही थी, इतने में आँखों में आँसू भरे कुमार अन्दर आया। रानी ने पीछे फिर कर देखा कि लाल की आँखें डबडबाई हुई हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रानी ने लड़के को गोद में उठा कर मुँह चूम और कहा—"मेरे लाल! क्यों रोते हो? क्या हुआ है? क्या किसी ने मारा है"? लड़के से रहा नहीं गया। वह रोने लगा। तब माँ की आँखों में भी आँसू आ गये। उसने बच्चे के मुँह पर हाथ फेर कर कहा—"क्या हुआ है बेटा? इतना क्यों रोते हो? बताओ मेरे हीरा"!

तब लड़के ने कहा—"नहीं माँ! मुझे किसी ने मारा नहीं"। फिर कहा—"अच्छा माँ! क्या मेरे बाप नहीं हैं? सबके बाप होते हैं, तब मेरे बाप क्यों नहीं हैं"? रानी ने लम्बी साँस लेकर कहा—"क्यों बेटा! आज यह बात क्यों पूछते हो? क्या हुआ है सब साफ़ साफ़ कहो"। तब बालक ने लकड़हारों के लड़कों से जो बातें हुई थीं कह सुनाईं। तब रानी को सब बातें याद पड़ीं, उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। उसने आंचल से आँख-मुँह पोंछ कर कहा—"बेटा! लकड़हारों के लड़के तुमको कैसे पहचानेंगे? जो इस राज्य के राजा हैं वही तुम्हारे बाप हैं। मैं अभागिनी हूँ। इसी से आज तुम्हारी यह दशा है।" रानी रोते रोते सब हाल आदि से अन्त तक कह गई। कुमार सब बातें सुन कर कुछ देर चुप रहा। फिर बोला—"माँ! मैं राजा के पास जाऊँगा।" रानी ने कहा—"बेटा! तुम क्या कहते हो? तुम वहाँ जाओगे तो राक्षसी तुमको खा जायगी।" लड़के ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा—"नहीं मा! राक्षसी मेरा कुछ नहीं कर सकेगी। मैं वहाँ जाकर यह थोड़े कहूँगा कि मैं तुम्हारा लड़का हूँ। मैं ग्वालिन मौसी के संग जाकर कहूँगा कि मैं इसका नाती हूँ।" तब रानी ने कहा—"अच्छा बेटा! जाना। इस घड़ी कुछ खा लो; कल ग्वालिन बहन के संग जाना।"

दूसरे दिन ग्वालिन के संग कुमार राजमहल को गया। राक्षसी रानी ने ग्वालिन से पूछा—"तुम्हारे साथ यह सुन्दर लड़का किसका है?" ग्वालिन ने कहा—"यह मेरा नाती है।" राक्षसी को न जाने क्यों शक हुआ। राजा ने भी लड़के को देख कर पूछा—"ग्वालिन! तेरे साथ यह लड़का कौन है?" ग्वालिन ने वही जवाब दिया—"सरकार! मेरा नाती है।" तब राजा ने लड़के को अपने पास बुलाया। लड़के को देख कर राजा का मन न जानें कैसा करने लगा, वह लड़के को पास बिठा कर प्यार करने लगे। अवसर जान कर लड़के ने कहा—"महाराज! अगर कृपा करके मुझे कोई नौकरी तो इस ग़रीब का बड़ा उपकार हो।" राजा एकटक बाल के मुँह की ओर देख रहे थे, यह बात उनके कानों में न गई। बालक ने फिर कहा—"महाराज! इस ग़रीब को क हुक्म होता है?" तब राजा का ध्यान टूटा। उन्होंने पूछा—"तू अभी लड़का है, काम काज क्या जाने? तुझे कौन स काम दूँ जिसे तू कर सकेगा?" लड़के ने कहा—महाराज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं इसी उम्र में बहुत काम कर सकता हूँ। ग़रीब पर दया होने की देर है।" राजा ने पूछा—"तूने इस उम्र में क्या काम सीखा है"? बालक ने कहा—"महाराज! जो काम और कोई नहीं कर सकेगा वह काम मैं करूँगा"। राजा ने हँस कर कहा—"अच्छा, आज से तू राजमहल में पड़ा रह, तुझे कोई काम नहीं करना पड़ेगा"।

(४)

कुछ दिन बीत गये। एक दिन राक्षसी रानी किसी तरह पता पा गई कि यह बालक और कोई नहीं, उस बड़ी रानी का लड़का है। तब डाह से राक्षसी का जी जलने लगा। उसने मन ही मन कहा कि यह एक दूसरी बला कहाँ से आई? राजा अगर जान जायगा तो मेरा आदर-मान नहीं रहेगा। जैसे हो इसको इस दुनिया से बिदा करना होगा। तब उसने क्या किया कि रज़ाई-दुलाई ओढ़ कर चारपाई पर पड़ गई और छटपटा छटपटा कर आह ऊह करने लगी। राजा के पास ख़बर गई कि रानीजी बीमार हैं। सुन कर राजा अन्दर गये। आकर देखते क्या हैं कि रानी बिछौने पर पड़ी छटपटा रही है। तब राजा ने रानी का बदन सुहरा कर पूछा—"रानी! तुम्हें क्या हुआ है"? रानी ने कुछ जवाब नहीं दिया, वह सिर्फ़ छटपटाती और आह ऊह करती रही। राजा ने फिर पूछा—"क्या हुआ है रानी? तुम्हारा यह कष्ट मुझसे देखा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं जाता"। अब रानी ने राजा की ओर देखा और कराहते कराहते कहा—"महाराज ! मुझे हड़बाई हुई है"। राजा ने कहा—"मैं अभी वैद्य बुलाता हूँ"। राक्षसी ने कहा—"नहीं महाराज ! मैं दूसरे पुरुष का मुँह नहीं देखूँगी। इसके सिवा यह रोग वैद्य की दवा से नहीं जायगा"। राजा ने पूछा—"तब कैसे जायगा"। राक्षसी रानी बोली—"मैं ख़ुद इसकी दवा जानती हूँ। लेकिन आप क्या वह दवा मँगा दे सकेंगे"? राजा ने कहा—"यह क्या बात है ? तुम बताओ, मैं अभी वह दवा मँगा देता हूँ"। तब राक्षसी रानी मन ही मन बहुत ख़ुश हुई। उसने सोचा कि किसी तरह लड़के को एक बार राक्षसों के देश में भेज सकूँ तो ठीक। वहाँ जाकर बच्चा नहीं लौटेंगे। बस बला टल जायगी। यह सोच राक्षसी बोली—"महाराज ! उत्तर दिशा में बहुत दूर एक देश है। उस देश में अमृत-कुण्ड नाम का एक कुण्ड है। उसी कुण्ड का पानी पीने से यह रोग दूर होगा। मगर आपके राज्य में ऐसा कोई नहीं है जो अमृत-कुण्ड का पानी ला सके। हाँ, ग्वालिन का नाती ला सके तो ला सके। उसने कहा है न कि जो काम और कोई नहीं कर सकेगा वह काम मैं करूँगा, एक बार उसको भेज कर देखिए न"। यह सुन कर राजा ने उस लड़के को तुरत बुला भेजा। बुलाहट सुनते ही बड़ी रानी का लड़का आकर हाज़िर हुआ। राजा ने उसको सब बातें समझा कर कहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुन कर लड़के ने कहा—"बहुत अच्छा, मैं अभी वहाँ जाता हूँ"।

तब राक्षसी रानी ने उसको अच्छी तरह समझा-बुझा दिया कि किधर को, किस रास्ते, कहाँ, कैसे जाना होगा। और उसने राजा से छिपा कर राक्षसी-भाषा में एक चिट्ठी लिख कर लड़के के हाथ में दी और कहा कि यह चिट्ठी देने से ही वहाँ वाले तुमको वह पानी दे देंगे।

(५)

जाते जाते लड़के ने एक दिन रास्ते में एक बहुत बड़ा पहाड़ देखा। वह आगा-पीछा करके उस पहाड़ पर चढ़ने लगा। चोटी पर पहुँच कर उसने एक गुफा देखी। उसके पास जाकर देखा कि एक साधु मृगछाला के ऊपर बैठे ध्यान लगा रहे हैं। लड़के ने उनके सामने जाकर प्रणाम किया। उसी समय साधु का ध्यान टूटा। उन्होंने आँखें खोल कर देखा कि सामने एक लड़का खड़ा है। साधु बाबा उसको देख कर अकचका गये कि ऐसा राजपुत्र के समान सुन्दर लड़का यहाँ कहाँ से आया। उन्होंने लड़के से पूछा— 'तुम अकेले इस सुनसान पहाड़ पर क्यों आये हो"? लड़के ने कहा—" हमारे देश की रानी बहुत बीमार है। उसी ने मुझे दवा लेने के लिए उत्तर देश में भेजा है। वहाँ से अमृत-कुण्ड का जल ले जाना होगा। रानीजी ने मुझे एक चिट्ठी दी है"। साधु ने कहा—"क्या कहा?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्तर देश, वहाँ क्या आदमी जा सकता है? वह तो राक्षसों का देश है। जो वहाँ जायगा वह क्या कभी लौट सकेगा? लाओ तो बच्चा! चिट्ठी देखूँ। तुम लोगों की रानी मायाविनी राक्षसी है क्या? और तुमको मार डालने के लिए तो वहाँ नहीं भेजा है"? तब लड़के के जी में बड़ा डर हुआ। उसने झटपट चिट्ठी निकाल कर साधु के हाथ में दी। साधु महाराज राक्षसी-भाषा जानते थे। चिट्ठी पढ़ कर उनके रोंगटे खड़े हो गये। उन्होंने कहा कि मैंने जो समझा था ठीक वही बात है। ख़ैर, अब कुछ परवा नहीं है। मैं जो कहता हूँ वह करो। यह लो पहले यह जिरहबख़्तर पहन लो। ऊपर से अपना कपड़ा पहन लेना। तुम वहाँ जाओगे तो राक्षस लोग प्यार से तुम्हारा बदन सुहरावेंगे और चिकोटी काटेंगे। तुम अगर कष्ट पाकर चिल्लाओगे तो वे तुमको आदमी समझ जायँगे। फिर और कुछ न कह कर तुमको तुरत खा जायँगे। और अगर तुमको दर्द नहीं होगा तो वे तुमको राक्षस समझ कर आदर-मान से रक्खेंगे।

एक चिट्ठी लिख कर तुमको देता हूँ, वही ले जाकर देना। साधु ने पहली चिट्ठी फाड़ कर फेंक दी और उसी भाषा में एक दूसरी चिट्ठी लिख दी। उन्होंने लड़के को वह चिट्ठी और थोड़ा भूना हुआ चना देकर कहा—"वहाँ जाने पर राक्षस लोग तुमको लोहे का चना चबाने को देंगे। तुम उसको किसी [illegible] कहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देना और यह चना चबा लेना। तब राक्षस लोग तुमको आदमी नहीं समझेंगे। जाओ बच्चा! अब कुछ डर नहीं है"। तब बड़ी रानी का लड़का साधु को प्रणाम करके चल पड़ा।

इसके बाद वह जाते जाते राक्षसों के नगर में जा पहुँचा। वह मकान के पास जाकर पुकारने लगा—"नानी! नानी! ओ नानी! घर में हो कि नहीं"? आवाज़ सुन कर बुढ़िया राक्षसी घर से बाहर निकली तो उसने देखा कि एक सुन्दर लड़का खड़ा है। बुढ़िया को देखते ही लड़के ने कहा—"क्यों नानी! कैसे हो? नाती को पहचानती हो कि नहीं? कैसे पहचानेगी। तुमसे यही पहली भेंट है"। यह सुन कर बुढ़िया के जी में कुछ खटका होने लगा। यह मेरा नाती है या आदमी बहाना कर के आया है। उसने सोचा, अच्छा पता लग जाता है।

तब बुढ़िया ने कहा—"बेटा! कैसे पहचानूँ? एक तो मैं बुढ़िया ठहरी, दूसरे मैंने तुमको और कभी देखा नहीं। लेकिन बच्चा! कुछ दूसरा मत मानना"। यह कह कर बुढ़िया उसका बदन सुहराने के बहाने चिकोटी काटने लगी। बदन पर जिरहबख़्तर था इससे चिकोटी काटने से कुछ दर्द नहीं हुआ। तब बुढ़िया ने सोचा कि यह सचमुच नाती जान पड़ता है।
८२ उसने अपने लड़कों को पुकार कर कहा—"अरे, तुम लोग कहाँ
रानीजी नी! तुम्हारा भानजा आया है"। तब हाँऊ माँऊ काँऊ करके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब राक्षस आ जुटे। "अजी भानजे! कैसे हो"? कह कर वे सब बड़ी रानी के लड़के के बदन पर हाथ फेरते हुए चिकोटी काटने लगे। पर उससे होता क्या? बदन में तो कुछ लगा नहीं कि वह रोता। तब सब मिल कर उसको घर के भीतर ले गये। वहाँ उन्होंने उसको लोहे का चना खाने को दिया। बड़ी रानी का लड़का अपना चना निकाल कर चबाने लगा और लोहे का चना उसने किसी बहाने चूहे के बिल में फेंक दिया। तब बुढ़िया राक्षसी बहुत ख़ुश हुई। इसके बाद उस लड़के ने वह चिट्ठी निकाल कर बुढ़िया राक्षसी के हाथ में दी। चिट्ठी पढ़ कर बुढ़िया को और कुछ सन्देह नहीं रहा।

लड़की की बीमारी की ख़बर सुन कर बुढ़िया को बड़ा सोच हुआ। तब बुढ़िया ने झटपट एक चिट्ठी लिख कर नाती के हाथ में दी और कहा—"यह जो उत्तर ओर मैदान दिखाई देता है उसके पास ही अमृतकुण्ड है। वहाँ जाकर यह चिट्ठी देने से वे लोग तुमको जल देंगे"। नाती चिट्ठी लेकर उसी मैदान की ओर गया। उसने मैदान पार होकर देखा कि कुछ दूर पर एक तालाब सा है। उसके चारों ओर सैकड़ों राक्षस घूम रहे हैं, उसको देखते ही राक्षस मुँह बा कर खाने दौड़े। तब बेचारा दूर से ही चिल्लाने लगा—"राक्षस मामा! राक्षस मामा! तुम लोगों का भानजा आया है। यह लो नानी की चिट्ठी"। यह कह कर उसने दूर से चिट्ठी फेंक दी। एक राक्षस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिट्ठी उठा कर पढ़ने लगा। उसने और सबसे कहा—"भाई! इसको मत खाओ। यह हमारा भानजा है। माँ ने इसको भेजा है। यह एक घड़ा जल लेने आया है"। उस राक्षस ने कुण्ड से एक घड़ा जल भर दिया। फिर क्या पूछना? जल लेकर वह नौ दो ग्यारह हुआ। बिना दायें बायें देखे वह सीधे राज-महल में जा पहुँचा।

(६)

बड़ी रानी के लड़के के आने की ख़बर सुन कर राक्षसी रानी ने मन ही मन कहा—"मैंने वैसी चिट्ठी लिख दी तो भी लड़के को सही-सलामत लौटने दिया? और अमृतकुण्ड का पानी भी दे दिया! अच्छा, देखें इस बार कैसे बच के आता है"।

इसके कुछ दिन बाद छोटी रानी ने क्या किया कि फिर चारपाई पर पड़ कर आह-ऊह करने लगी। फिर राजा के पास ख़बर गई। राजा ने दौड़े आकर पूछा—"रानी! तुम्हें फिर क्या हुआ"? राक्षसी रानी कराहते कराहते बोली—"महाराज! फिर मुझे हड़बाई हुई है। कुण्ड का पानी पीने से ज़रा कम हुई थी अब फिर बढ़ गई है।" राजा ने पूछा—"तो अब क्या उपाय है? क्या इस रोग की कोई दवा नहीं है"? राक्षसी रानी बोली—"है क्यों नहीं? उस देश में एक तरह का धान होता है जिसको नगदनारायण कहते हैं। वह धान बोते ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूट कर पौधा बन जाता है। और उसी दिन उसमें बाल लग जाती है। उस धान की खोई (लावा) खाने से यह रोग एक दम मिट जाता है। उसी लड़के से यह काम हो सकता है।" राजा ने लड़के को फिर बुला भेजा। रानी ने उसके हाथ में एक चिट्ठी देकर कहा—"चिट्ठी में सब ब्यौरा लिख दिया है, वहाँ जाने से ही धान पा जाओगे"।

इसके बाद बड़ी रानी के लड़के ने उसी तरह पहले जाकर संन्यासी से भेंट की। संन्यासी बाबा चिट्ठी पढ़ कर सब समझ गये। तब उन्होंने वह चिट्ठी फाड़ कर एक दूसरी चिट्ठी लिख दी। वह संन्यासी से बिदा लेकर उन राक्षसों के देश में गया। वह इस बार भी जाकर, "नानी! नानी! मैं आया हूँ तेरा नाती" कह कर पुकारने लगा। इस बार कुछ डर नहीं था। बुढ़िया राक्षसी भी प्यार करके नाती को घर में ले गई। नाती ने चिट्ठी निकाल कर बुढ़िया को दी। इसके बाद कहा—"नानी! अब के मैं दो एक दिन रहूँगा। उस बार आया था तो मैं एक दिन भी नहीं रहने पाया था।" बुढ़िया ने कहा—"अच्छी बात है, जितने दिन तुम्हारा जी चाहे रहो। जल्द जाने की क्या ज़रूरत है"।

दिन पर दिन बीतने लगे। रोज़ साँझ होते ही बड़ी रानी का लड़का झूठमूठ सो रहता। भानजे को सोया समझ कर राक्षस रोज़ न जाने कहाँ निकल जाते और सबेरा होने से पहले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही पेट भर कर घर लौट आते। बड़ी रानी के लड़के ने तीन दिन यह तमाशा देखा। चौथे दिन जब साँझ हुई तब नाती ने कहा—"नानी! आज मेरा बदन दर्द करता है, आज मैं तुम्हारे पास सोऊँगा"। बुढ़िया राक्षसी ने कहा—"अच्छी बात है"।

उस दिन बुढ़िया का बाहर जाना नहीं हुआ। बुढ़िया इधर उधर करवटें बदलने लगी। उसका इरादा है कि नाती सो जाय तो मैं जाऊँ। इस इरादे से वह नाती को सुलाने की कोशिश करने लगी। कुछ देर बाद नाती ने कहा—"नानी! माँ को छोड़े बहुत दिन हो गये। माँ के लिए मन न जाने कैसा करता है। कहीं माँ मर जाय तो मेरा क्या हाल होगा"?

बुढ़िया ने कहा—"धत् पागल! तेरी माँ मरेगी कैसे? उसका प्राण तो मेरे हाथ में है।" नाती ने कहा—"क्या कहा? मा का प्राण तेरे हाथ में है? यह कैसे?" तब बुढ़िया बोली—"तेरी माँ को क्या कोई मार सकता है? यह जो पींजरे में मैना चिड़िया है उसी में तेरी मा का प्राण बसता है। इसका एक डैना तोड़ने से तेरी माँ का हाथ टूट जायगा। इसका एक पैर तोड़ने से तेरी माँ का पैर टूट जायगा और गला मरोड़ने से तेरी माँ का प्राण निकल जायगा। मैना जब तक मेरे पास है तब तक डर किस बात का है?" बड़ी रानी का लड़का ध्यान से सब सुनता गया। वह कुछ देर चुप रह कर बोला—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नानी ! तू जितने दिन है उतने दिन मैना तेरे पास रहेगी। तू मर जायगी तब क्या होगा ?" बुढ़िया राक्षसी बोली—"अजी ऐसा भी कहीं होने का है ? मेरी मौत मेरे ही हाथ में है।" तब नाती ने बुढ़िया के गले में हाथ डाल कर कहा—"नानी ! यह कैसे ? मुझे बता दे। यह सब सुनने में मुझे बड़ा अच्छा लगता है।" तब बुढ़िया कहने लगी—"अच्छा कहती हूँ सुन। इस दक्खिन के घर के पिछवाड़े कद्दू का एक पौधा है। उसमें बहुत से कद्दू लगे हैं। उन कद्दुओं में ख़ास ख़ास गुण हैं। एक का नाम 'जोंक-कद्दू' है। उस कद्दू को पटकने से मुझे सैकड़ों जोंकें काटने लगेंगी। एक का नाम, 'मच्छड़-कद्दू' है। उसको पटकने से चारों ओर से हज़ारों मच्छड़ आकर मुझे काटने लगेंगे। एक का नाम 'आग-कद्दू' है। उसको पटकने से मेरे बदन में आग लग जायगी। एक का नाम 'प्राण-कद्दू' है। उसको पटकने से मेरा प्राण चला जायगा। और एक बहुत बड़ा कद्दू पत्तों के नीचे ढका है, उसका नाम 'काल-कद्दू' है। उसको पटकने से इस मकान में जितने लोग हैं सब एक साथ ही मर जायँगे।" यह सुन कर नाती ने कहा—"तब फिर डर क्या है नानी ? मेरी सब फ़िक्र मिट गई।"

दूसरे दिन साँझ होते ही नाती सो गया। यह देख कर बुढ़िया ने झटपट बिस्तर लगा दिया। इसके बाद रोज़ की तरह सब लोग बाहर चले गये। सब चरते खाते बहुत दूर निकल गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आधी रात को बड़ी रानी के लड़के ने उठ कर देखा कि आज घर में और कोई नहीं है। तब वह उठ कर पौधे से उन कद्दुओं को तोड़ लाया। फिर उसने 'जोंक-कद्दू' को उठा कर ऐसा पटका कि वह दो टूक हो गया। तब बुढ़िया राक्षसी जोंकों के काटने से विकल होकर घर की ओर दौड़ी। कुछ देर में लड़के ने 'मच्छड़-कद्दू' को पटका; तब बुढ़िया मच्छड़ों के काटने से चिल्लाती हुई दौड़ी। बुढ़िया ज्यों ही घर के पास पहुँची त्योंही लड़के ने 'आग-कद्दू' को पटक दिया। बुढ़िया के सारे बदन में आग लग गई। "अरे मुँह-झौंसा नाती! मैं तुझे खाऊँगी, मैं तुझे खाऊँगी" कह कर बुढ़िया मुँह बाये उसके पास पहुँची ही थी कि लड़के ने 'प्राण-कद्दू' पटक दिया। बुढ़िया ज़ोर से चिल्ला कर मर गई। उसकी चिल्लाहट सुन कर और राक्षस खाऊँ खाऊँ करके दौड़े। बड़ी रानी के लड़के ने 'काल-कद्दू' को उठा कर पटका। बस सब के सब मर कर ढेर हो गये।

(७)

इसके बाद बड़ी रानी का लड़का मैना को लेकर देश को लौटा। राक्षसी रानी सुन कर जल कर खाक़ हो गई। इधर बड़ी रानी के लड़के के लौट आने से राजा बहुत ख़ुश हुए। वह उसको गोद में लेकर प्यार करने लगे और पूछने लगे—"जिस चीज़ के लिए तुम गये थे वह चीज़ ले आये?" बड़ी रानी के लड़के ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा—"महाराज ! मैं जिस चीज़ के लिए गया था उससे अजीब चीज़ लाया हूँ। यह जो मैना चिड़िया देखते हैं उसका गुण, आप हुक्म दें तो, राजदरबार में दिखा सकता हूँ।" सुन कर राजा ने कहा—"अभी दिखाओ, तुम्हारी मैना में ऐसा क्या गुण है ?" मुसाहिब लोग भी बोल उठे "हाँ महाराज ! अभी देखा जाय।" राजदरबार भरा हुआ था; सभी लोग मैना की ओर टकटकी लगाये हुए थे। बड़ी रानी के लड़के ने मैना को पींजरे से बाहर निकाल कर उसका एक डैना तोड़ दिया। बस राक्षसी रानी का एक हाथ टूट गया और वह महल के भीतर चिल्लाने लगी। इसके बाद लड़के ने मैना का दूसरा डैना तोड़ डाला। तब रानी का दूसरा हाथ भी टूट गया। राक्षसी चिल्लाती हुई दौड़ी।

इधर रानी के लड़के ने मैना का एक पैर तोड़ दिया। राक्षसी रानी का भी एक पैर टूट गया। तब वह एक टाँग घसीटती हुई आने लगी। राजा, मन्त्री, मुसाहिब और सब लोग चकित हो गये। लड़के ने चिड़िया का दूसरा पैर भी तोड़ दिया। बकरी राक्षसी की दूसरी टाँग भी टूट गई। तब वह घिसकती घिसकती मुँह बाकर लड़के को खाने चली। पास पहुँचते पहुँचते लड़के ने मैना का सिर मरोड़ दिया। बकरी राक्षसी बड़े ज़ोर से चिल्ला कर मर गई। राजा और सब लोग यह तमाशा देख कर दङ्ग रह गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तब राजा ने लड़के को पास बुला कर पूछा—"बेटा ! यह सब कैसे क्या हुआ, मुझे समझा कर कहो।" तब रानी का लड़का आदि से अन्त तक सब हाल कह गया। सुन कर सब लोग दाँतों उँगली काटने लगे। इसके बाद उसने अपनी माँ से जो कुछ सुना था वह सब भी कह सुनाया। राजा सब सुन कर लड़के को गले लगा कर रोने लगे। लोग लड़के को धन्य धन्य कहने लगे। राजा आप ही डोली कहार लेकर बड़ी रानी को लिवा लाये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोने का बेल

एक देश में राजकुमार था और दूसरे देश में राजकुमारी थी। दोनों का एक दूसरे से व्याह हुआ। बाजे गाजे के साथ राजपुत्र राजकन्या को घर ले आया। रात को दोनों सोये थे। राजकन्या एक वार उठ कर बाहर गई। घर के पिछवाड़े कई पेड़ थे। राजकन्या ने देखा कि एक पेड़ पर एक बेल दूसरे बेल से जुड़ता है और फिर थोड़ी देर बाद हट जाता है। राजकन्या बड़ी देर तक खड़ी खड़ी यह तमाशा देखती रही। उसके बाद जब वह अन्दर गई तब राजपुत्र ने पूछा—"इतनी देर तक बाहर क्या होता था?" राजकन्या ने कहा—"घर के पिछवाड़े एक अजीब चीज़ देखी, उसी को देखते देखते देर हो गई"। राजपुत्र ने पूछा—"ऐसी क्या चीज़ थी जो इतनी देर देखती रहीं? मुझे भी एक बार वह चीज़ दिखा सकती हो?" राजकन्या बोली—"हाँ, बाहर चलो अभी दिखा देती हूँ। ऐसी सुन्दर चीज़ मैंने और कभी नहीं देखी थी।" दोनों आदमी बाहर आये। राजकन्या ने राजपुत्र को वह बेल दिखा दिया। राजपुत्र ने देख कर कहा—"इसी को देख कर तुम्हें आश्चर्य हुआ? यह क्या तुमको इतना पसन्द है? अच्छा, मैं तुमको ठीक ऐसा ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोने का बेल गढ़ा दूँगा।" इसके बाद राजपुत्र विदेश चला गया। स्त्री से कह गया कि मैं वहाँ से तुम्हारे लिए सोने का बेल गढ़ा कर भेजूँगा।

राजपुत्र के चले जाने के कुछ दिन बाद राजकन्या अपने भाई के व्याह में मायके चली गई। राजपुत्र ने विदेश जाने के कुछ ही दिन बाद सोने का बेल गढ़ा कर और एक डिबिया में रख कर एक सफ़ेद कव्वे के मार्फ़त भेजा। उस कव्वे ने रास्ते में आते आते देखा कि एक घर में व्याह की धूम है, लोग बैठ कर पत्तलों में खा रहे हैं। पत्तलों में पूरी, कचौरी, हलवा, रबड़ी आदि चीज़ें परोसी जा रही हैं। चारों ओर हल्ला मचा हुआ है। यह देख कर कव्वे की जीभ में पानी आ गया। वह उस डिबिया को उसी मकान की छत पर एक कोने में रख कर खाने बैठ गया।

इधर मकान की लौंडी किसी काम से छत पर आई। उसने आते ही देखा कि छत के कोने में एक डिबिया पड़ी है। उसने झट डिबिया को उठा कर खोला तो देखा कि उसमें एक सोने का बेल है। देख कर लौंडी से लोभ सम्हाला नहीं गया। उसने क्या किया कि बेल को तो आँचल में बाँध लिया और डिबिया में नाख़ून, बाल और महावर की रुई भर कर उसे जहाँ का तहाँ रख दिया। खा पीकर कव्वा आया और डिबिया चोंच में लेकर चलता हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजकन्या तीसरे पहर हाथ मुँह धोकर, सिर के बाल बाँध कर और सेंदुर पहन कर सखियों के साथ छत पर बैठी गपशप कर रही थी। बात पर बात निकलने पर उस सोने के बेल का ज़िक्र भी आ छिड़ा। इसी बीच में कव्वे ने वहाँ पहुँच कर राजकन्या के सामने डिबिया ढँगला दी।" राजकन्या ने डिबिया को हाथ में लेकर सोचा, न जाने इसके भीतर क्या है। उसने झटपट डिबिया को खोला तो क्या देखा कि उसके भीतर बाल, नाख़ून और महावर के सिवा और कुछ नहीं है। यह देख सखियाँ ठट्ठा मार कर हँस पड़ीं। राजकन्या लाज से मर गई। सखियाँ जितनी ही दिल्लगी करने लगीं, उसका क्रोध राजपुत्र पर उतना ही बढ़ने लगा। उसने मन ही मन प्रण किया कि मैं अब राजपुत्र से इस जन्म में नहीं बोलूँगी।

बहुत दिनों के बाद राजपुत्र देश को लौटा। घर आते समय वह राह में ससुराल से स्त्री को बिदा कराते लाया। राज-पुत्र ने रास्ते में स्त्री से पूछा—"मैंने जो बेल भेजा वह तुम्हें पसन्द आया कि नहीं? तुम्हारी सखियों ने देख कर क्या कहा?" राजकन्या कुछ न बोली। राजपुत्र ने फिर पूछा—"अजी ए! बोलती क्यों नहीं? पसन्द आया कि नहीं?" फिर भी राजकन्या के मुँह से बात न निकली। बार बार पूछने पर भी जब राजपुत्र ने कुछ उत्तर न पाया तब उसको बड़ा क्रोध आया। उसने रास्ते में एक नाई बुला कर राजकन्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का सिर मुड़वा दिया। इसके बाद जब वह घर पहुँचा तब उसकी माँ बहू को देख कर बहुत रोई गाई। और पूछने लगी कि बहू का सिर क्यों मुड़ाया गया ? राजपुत्र ने कुछ जवाब न दिया। माँ बड़े सोच में पड़ी। इन दोनों को क्या हुआ है। बहुत कहने सुनने पर राजपुत्र ने कहा—"माँ ! मैं कुछ पूछता हूँ तो यह जवाब नहीं देती, इसी से मैंने इसका सिर मुड़ा दिया है। तुम ज़रा पूछ तो देखो, यह मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देती।"

तब सास ने एकान्त में बहू से पूछा—"बहू ! तुम्हें क्या हो गया है ? पूछने पर बात का जवाब क्यों नहीं देती हो ?" राजकन्या ने इस बात का कुछ जवाब न देकर दूसरी बात छेड़ दी। कोई जान नहीं सका कि वह राजपुत्र से क्यों नहीं बोलती।

इस तरह कुछ दिन बीते। राजपुत्र से राजकन्या कुछ नहीं बोलती। तब राजपुत्र ने क्या किया कि आप साधु बना और एक मैदान में अपने चारों ओर धूनी लगाकर आँख मूँदे बैठ रहा। जाने से पहले माँ से कह गया कि आज महल्ले में किसी के घर चूल्हा न जलने पावे। आग की ज़रूरत हो तो मैदान में जो एक नये साधु आये हैं उनसे जाकर आग माँग लाई जाय। हमारे घर आग की ज़रूरत हो तो तुम अपनी बहू को साधु के पास आग लेने के लिए भेज देना। और कोई आग लेने न जाय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजकन्या तीसरे पहर हाथ मुँह धोकर, सिर के बाल बाँध कर और सेंदुर पहन कर सखियों के साथ छत पर बैठी गपशप कर रही थी। बात पर बात निकलने पर उस सोने के बेल का ज़िक्र भी आ छिड़ा। इसी बीच में कव्वे ने वहाँ पहुँच कर राजकन्या के सामने डिबिया ढँगला दी।" राजकन्या ने डिबिया को हाथ में लेकर सोचा, न जाने इसके भीतर क्या है। उसने झटपट डिबिया को खोला तो क्या देखा कि उसके भीतर बाल, नाखून और महावर के सिवा और कुछ नहीं है। यह देख सखियाँ ठट्ठा मार कर हँस पड़ीं। राजकन्या लाज से मर गई। सखियाँ जितनी ही दिल्लगी करने लगीं, उसका क्रोध राजपुत्र पर उतना ही बढ़ने लगा। उसने मन ही मन प्रण किया कि मैं अब राजपुत्र से इस जन्म में नहीं बोलूँगी।

बहुत दिनों के बाद राजपुत्र देश को लौटा। घर आते समय वह राह में ससुराल से स्त्री को बिदा कराते लाया। राजपुत्र ने रास्ते में स्त्री से पूछा—"मैंने जो बेल भेजा वह तुम्हें पसन्द आया कि नहीं? तुम्हारी सखियों ने देख कर क्या कहा?" राजकन्या कुछ न बोली। राजपुत्र ने फिर पूछा—"अजी ए! बोलती क्यों नहीं? पसन्द आया कि नहीं?" फिर भी राजकन्या के मुँह से बात न निकली। बार बार पूछने पर भी जब राजपुत्र ने कुछ उत्तर न पाया तब उसको बड़ा क्रोध आया। उसने रास्ते में एक नाई बुला कर राजकन्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का सिर मुड़वा दिया। इसके बाद जब वह घर पहुँचा तब उसकी माँ बहू को देख कर बहुत रोई गाई। और पूछने लगी कि बहू का सिर क्यों मुड़ाया गया? राजपुत्र ने कुछ जवाब न दिया। माँ बड़े सोच में पड़ी। इन दोनों को क्या हुआ है। बहुत कहने सुनने पर राजपुत्र ने कहा—"माँ! मैं कुछ पूछता हूँ तो यह जवाब नहीं देती, इसी से मैंने इसका सिर मुड़ा दिया है। तुम ज़रा पूछ तो देखो, यह मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देती।"

तब सास ने एकान्त में बहू से पूछा—"बहू! तुम्हें क्या हो गया है? पूछने पर बात का जवाब क्यों नहीं देती हो?" राजकन्या ने इस बात का कुछ जवाब न देकर दूसरी बात छेड़ दी। कोई जान नहीं सका कि वह राजपुत्र से क्यों नहीं बोलती।

इस तरह कुछ दिन बीते। राजपुत्र से राजकन्या कुछ नहीं बोलती। तब राजपुत्र ने क्या किया कि आप साधु बना और एक मैदान में अपने चारों ओर धूनी लगाकर आँख मूँदे बैठ रहा। जाने से पहले माँ से कह गया कि आज महल्ले में किसी के घर चूल्हा न जलने पावे। आग की ज़रूरत हो तो मैदान में जो एक नये साधु आये हैं उनसे जाकर आग माँग लाई जाय। हमारे घर आग की ज़रूरत हो तो तुम अपनी बहू को साधु के पास आग लेने के लिए भेज देना। और कोई आग लेने न जाय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसके बाद रानी ने लड़के के कहने के मुताबिक बहू को साधु के पास आग लेने के लिए भेजा। राज्यकन्या ने धीरे धीरे उस मैदान में जाकर साधु से आग माँगी। उसने कहा—"साधुजी महाराज! मुझे ज़रा आग दीजिए।" साधु राजकन्या को देख कर बम बम करने लगा, मानो उसने राजकन्या की बात सुनी ही नहीं। राजकन्या ने फिर कहा—"साधु महाराज! ज़रा आग दीजिएगा?" अब के साधु जी बोले—"तुम कौन हो? क्या चाहती हो?" राजकन्या ने कहा—"मैं यहाँ के राजपुत्र की स्त्री हूँ। उन्होंने हुकम दिया है कि आज महल्ले भर में कोई चूल्हा न जलावे। किसी को आग की ज़रूरत हो तो आपसे आकर माँग ले जाय। इसी से मेरी सास ने मुझे आपके पास आग लेने के लिए भेजा है।"

साधु ने कुछ देर चुप रह कर कहा—"तुम राजपुत्र की स्त्री हो तो तुम्हारा सिर मुड़ा हुआ क्यों है?" राजकन्या ने कहा—"इन सब बातों से आप को क्या मतलब है? मैं आग माँगने आई हूँ; आप देंगे कि नहीं?" साधु ने कहा—"मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही पूछता हूँ। तुम्हारा चेहरा देखने से जान पड़ता है कि तुम्हारे मन में कोई बड़ा भारी दुःख है। हम साधु लोग बहुत कुछ तन्त्र मन्त्र जानते हैं। अगर तुम मुझ से सब हाल साफ़ साफ़ कह दो तो मैं तुम्हारा सब दुःख दूर कर दे सकता हूँ। अगर कोई बात छिपाओगी तो तुम्हारा ही अमङ्गल होगा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह कह कर राजपुत्र ने राजकन्या के पेट से सब बातें निकाल लीं। फिर उसने कहा—"अब से तुम्हारे मन को कोई दुःख न होगा।" राजकन्या आग लेकर घर गई। राजकन्या के घर पहुँचने से पहले ही राजपुत्र झटपट साधु का वेष छोड़ कर एक दूसरे रास्ते से घर पहुँच गया। कुछ देर के बाद राजकन्या आग लेकर घर आई।

उस दिन रात को जब राजकन्या सोने गई तब राजपुत्र ने कहा—"तुमने मुझ से पहले क्यों नहीं कहा कि सोने का बेल नहीं मिला, उसके बदले बाल, नाखून और महावर मिले। मैं फिर कभी दुबारा सोने का बेल गढ़ा देता। तब तुम्हारा सिर भी नहीं मूड़ा जाता और मुझे भी कष्ट न भोगना पड़ता।" इसके बाद राजपुत्र ने जिस तरह कव्वे की मार्फ़त सोने का बेल भेजा था वह सब हाल कह सुनाया।

तब राजकन्या ने मुँह खोला। उसने कहा—"मैं क्या जानती थी कि तुमने असल चीज़ भेजी थी? सखियों के सामने मेरी इतनी बेइज़्ज़ती हुई कि मैं लाज के मारे मर गई। इससे आदमी को गुस्सा होता है कि नहीं; यह क्या तुम नहीं समझ सकते? मैंने क्या भर सक तुम से बोलचाल बन्द की थी?" राजपुत्र ने कहा—"अच्छा, जो हो गया सो हो गया। मैं सात दिन में सोने का बेल गढ़ा कर अपने हाथ से तुम्हें ला दूँगा। दूसरे दिन राजपुत्र फिर विदेश चला गया और सात दिन में सोने का बेल गढ़ा कर ले आया। तब से उनके दिन आनन्द से बीतने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पत्थर की चिड़िया

(१)

एक बहेलिया था। वह रोज़ जाल फैला कर चिड़ियों को पकड़ता। जाल में रोज़ तीन चिड़ियाँ फँसतीं। वह एक चिड़िया राजा को देता, एक चिड़िया मंत्री को देता और एक चिड़िया को बेच कर गुज़ारा करता। कुछ दिन यों ही बीते। एक दिन क्या हुआ कि वह दिन भर जाल फैला कर बैठा रहा पर एक भी चिड़िया नहीं फँसी। तब बहेलिया बैठे बैठे सोचने लगा कि आज का दिन कैसे कटेगा। सोचते सोचते साँझ होगई। तब अचानक एक बहुत बड़ी चिड़िया आ फँसी।

बहेलिया चिड़िया को लेकर घर गया। अब वह सोचने लगा—"आज एक ही चिड़िया मिली। क्या राजा को दूँ, क्या मंत्री को दूँ और क्या अपने गुज़ारे के लिए रक्खूँ?" बहेलिये को सोच में पड़ा देख कर चिड़िया बोली—"तुम किस सोच में पड़े हो?" बहेलिया चिड़िया की बात सुन कर चौंक पड़ा। उसने सोचा—यह क्या! फिर वह बोला—"किस सोच में पड़ा हूँ सो क्या बताऊँ? मैं रोज़ तीन चिड़ियाँ पकड़ता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनमें से एक राजा को देता था, एक मंत्री को देता था और एक को बेच कर गुज़ारा करता था।" यह सुनकर चिड़िया ने कहा—"इसके लिए क्या चिन्ता है? तुम एक काम करो। आज की रात किसी तरह विताओ। कल दिन को मुझे बेचने से तुम्हारी ग़रीबी मिट जायगी। जब मुझे बेचने ले जाना तब कोई मेरा दाम पूछे तो कह देना कि "चिड़िया खुद अपना दाम कहेगी।"

दूसरे दिन बहेलिया चिड़िया को बाज़ार में ले जा रहा था कि उधर से एक बहुत बड़ा धनी आदमी गाड़ी पर चढ़ा चला आता था। चिड़िया को देख कर उसे ख़रीदने की इच्छा हुई। उसने बहेलिया को पुकार कर कहा—"इस चिड़िया को बेचोगे?" बहेलिया ने कहा—"हाँ साहब! क्यों नहीं बेचूँगा?" धनी ने पूछा—"इसका दाम?" बहेलिया ने कहा—"चिड़िया को पूछने से वही अपना दाम बतावेगी।" तब उस धनी ने विस्मित होकर चिड़िया से पूछा—"अरी चिड़िया! बता तो सही, तेरा क्या दाम है?" चिड़िया बोली—"मेरा दाम तुम क्या दोगे? तुम्हारे जैसे मेरे दस नौकर हैं। यह सुनते ही वह जलभुन कर चला गया। इसके बाद राजा के मन्त्री से भेट हुई। मंत्री ने भी चिड़िया को मोल लेना चाहा। उसको भी चिड़िया ने वैसा ही जवाब दिया। वह भी गुस्सा करके चले गये। बहेलिया सोचने लगा—हैं! अच्छे अच्छे ग्राहक तो लौटे जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर मंत्री ने जाकर राजा से चिड़िया का हाल कहा। सुनकर राजा ने कहा—"ऐसी चिड़िया को ज़रूर लेना चाहिए। तुम अभी बहेलिया को चिड़िया सहित बुलाओ।" तब बहेलिया बुलाया गया। राजा ने चिड़िया को देख कर पूछा—"क्यों बे बहेलिया! तेरी चिड़िया का क्या दाम है?" बहेलिया ने कहा—"सरकार! चिड़िया ही अपना दाम बतावेगी।" राजा ने कहा—"हाँ? अच्छा चिड़िया से ही पूछता हूँ। बता री चिड़िया! तेरा क्या दाम है?" चिड़िया बोली—मेरा दाम बहुत अधिक है। उतना क्या आप देंगे? इस बहेलिया को बीस हज़ार रुपये देकर आप मुझे मोल ले सकते हैं।" राजा ने कहा—"अच्छा, ऐसा ही होगा"। राजा ने तुरंत बीस हज़ार रुपये देकर चिड़िया को ख़रीद लेने का हुक्म दिया।

इसके बाद राजा चिड़िया को लेकर रानी के पास गये। उन्होंने चिड़िया दिखा कर रानी से कहा—"इस चिड़िया ने ख़ुद अपना दाम बीस हज़ार रुपये दिलवाया है। देखना, इस चिड़िया की सेवा-सम्हाल में कुछ त्रुटि न हो। दस नौकर इसकी सेवा में रहेंगे। आज से आदमी तैनात कर देता हूँ। अब चिड़िया की बड़ी ख़ातिर होने लगी। इस तरह कुछ दिन बीते। रानी एक दिन चिड़िया की बात बिलकुल भूल गई। समय बीत गया, तब भी किसी ने चिड़िया को चारा नहीं डाला। रानी किसी काम से बाहर निकली तो चिड़िया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने कहा—"क्यों रानी ! इतनी देर हो गई तो भी मेरा चारा क्यों नहीं आया ? अपने खाने में तो भूल नहीं होती न ?" चिड़िया की बात सुन कर रानी को बड़ा .गुस्सा आया। रानी ने कहा—"ऐं ! छोटे मुँह बड़ी बात ? उठा कर पटक दूँगी, मर ही जाओगी।" क्रोध करके रानी ने उस दिन चिड़िया को कुछ भी चारा नहीं डालने दिया।

दूसरे दिन राजा ज्यों ही चिड़िया के पास गये त्यों ही चिड़िया बोली—"राजा साहब ! मुझे कल दिन भर खाने को नहीं मिला। और रानी ने मुझे मार डालने की धमकी दी है।" यह बात सुन कर राजा क्रोध से रानी को मारने चले। तब चिड़िया ने कहा—" राजा साहब ! उसको मारने से क्या होगा ? आप एक काम कीजिए। मेरे साथ चलिए। मैं एक ऐसी राजकन्या से आपका ब्याह करा दूँगी जिसके पैर के तलवे के ऐसा भी इसका मुँह नहीं है।" राजा रानी पर नाराज़ थे ही; उन्होंने कहा—"मैं अभी चलने को तैयार हूँ।" चिड़िया ने कहा—"आप मेरी पीठ पर चढ़िए, मैं आपको अभी ले चलती हूँ।" राजा को पीठ पर सवार कराके चिड़िया फुर्र से उड़ गई।

(२)

वह चिड़िया उड़ते उड़ते बहुत दूर एक दूसरे देश में जाकर आकाश से नीचे उतरी। उसने उतर कर देखा कि सामने एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत बड़ा नगर है। पास जाकर देखा कि उस नगर के मकान आकाश से बातें कर रहे हैं। वह चिड़िया राजा को एक पेड़ के नीचे बिठा कर उस नगर में पैठी। उसने वहाँ जाकर देखा कि केवल एक राजकन्या है। वहाँ मर्द का नाम नहीं है। हज़ारों दासियाँ राजकन्या की सेवा करती हैं। हज़ारों सखियाँ उसका जी बहलाती हैं। वहाँ चौकीदार सिपाही सब ज़नाने हैं। राजकन्या का रूप ऐसा था कि न इस द्वीप का न उस द्वीप का। देखने से आँखों की पलकें नहीं गिरतीं। वह ऐसी सुन्दर है मानो एक फूल है। और वज़न में वह एक सौ फूलों के बराबर थी। राजकन्या जिस नगर में रहती थी उसके भीतर एक फुलवारी थी। उसमें एक सौ गुलाब के पेड़ थे। सौ पेड़ों में रोज़ सौ फूल उगते थे। उस राज्य के राजा के हुक्म से हर पूर्णमासी के दिन राजकन्या उन्हीं सौ फूलों से तोली जाती थी। और यह बात थी कि जो कोई मर्द राजकन्या के महल में घुसेगा वह गुलाब का पेड़ बन जायगा। मगर जो कोई अपनी अँगूठी राजकन्या की अँगूठी से फेर-बदल कर लेगा वही राजकन्या का पति होगा।

चिड़िया इधर उधर सब देख कर धीरे धीरे बाहर निकल आई। इसके बाद वह राजा को लेकर एक बाज़ार में पहुँची। वहाँ राजा ने एक मकान भाड़े लिया। इसके बाद आधी रात को जब चारों ओर सन्नाटा छा गया, सब सो गये, उस समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिड़िया राजा को पीठ पर चढ़ा कर महल के अन्दर घुसी। उसने राजकन्या के घर के दरवाज़े पर राजा को उतार दिया। राजा चुपके चुपके दरवाज़ा खोल कर राजकन्या के घर में घुसे। उन्होंने भीतर जाकर देखा कि राजकन्या सोई हुई है। राजा ने कुछ न कह कर चुपके चुपके झटपट राजकन्या की उँगली से अँगूठी निकाल कर आप पहन ली और अपनी अँगूठी राज-कन्या के हाथ में पहना दी। इसके बाद राजकन्या के पास रूमाल छोड़ कर वह घर से निकल आये।

चिड़िया राजा को पीठ पर चढ़ा कर भाड़े के मकान में ले गई। दूसरे दिन बिचली रात को वह फिर राजा को राज-कन्या के महल में ले गई। उस दिन राज-कन्या सोई नहीं थी। अँगूठी बदली देख कर वह मन ही मन हैरान थी, किसी से बोलती चालती नहीं थी। उसका मन डाँवाडोल हो रहा था। वह यही सोचती थी कि यह क्या हो गया। ज्यों ज्यों साँझ होने लगी त्यों त्यों मानो किसी को देखने के लिए उसका जी छटपटाने लगा। राजा के घर में घुसते ही वह बोली—"तुम यहाँ कैसे आये? क्या तुम्हीं कल अँगूठी बदलौअल कर गये थे?" राजा ने कहा—"हाँ, मैंने ही किया था। मेरे एक चिड़िया है उसी ने तुम्हारा पता बताया है। उसी की पीठ पर चढ़ कर मैं आया हूँ। तुम्हारे रूप पर मोहित होकर मैंने अँगूठी बदलौअल किया है।" तब राज-कन्या भी बड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रसन्न हुई। दोनों को मानो आकाश का चन्द्रमा मिल गया। राजा रात भर राजकन्या के पास रहे। इसके बाद सवेरा होने से पहले ही वह चिड़िया की पीठ पर सवार होकर डेरे पर लौट आये। इस प्रकार राजा रोज़ राजकन्या के पास आने जाने लगे। राजा और राजकन्या के अँगूठी बदलौअल के कुछ ही दिन बाद पूर्णमासी आई। दासियों ने राजकन्या को वज़न करके देखा कि उसका वज़न एक फूल बढ़ गया है। तब राजा के पास ख़बर गई। वह सुन कर बड़े सोच में पड़े। उन्होंने दासियों को बुला कर कहा—"इस नगर में किसी पुरुष के घुसने का हुक्म नहीं है। तब यहाँ पुरुष कैसे आया?" दासियों ने कहा—"महाराज! आकाश, पाताल जहाँ से होगा हम लोग इसका पता लगावेंगी।"

राजकन्या के बाप ने बिगड़ कर कहा—"तुम लोग जैसी हो वह मालूम हो गया।" पास एक झोंपड़े में एक बुढ़िया रहती थी। राजकन्या के पिता ने उसको बुलवाया। उसके आने पर उन्होंने कहा—"बुढ़िया! तू उस चोर को पकड़ सकेगी?" बुढ़िया बोली—"क्यों नहीं पकड़ सकूँगी महाराज! मेरा काम क्या है? मैं आज ही चोर को पकड़ दूँगी। मुझे इ दस मन सुरखी चूना देना होगा।" राजा के हुक्म से उसी राज ड़ो बुढ़िया के पास दस मन सुरखी चूना और राजमिस्त्री जब ा गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर रात होने पर रोज़ की तरह राजा चिड़िया की पीठ पर सवार होकर राजकन्या के महल में गये। जाते समय खिड़की के पास सुरख़ी चूना देख कर चिड़िया के मन में कुछ सन्देह हुआ। उसने राजा को राजकन्या के घर में जाते समय चिता दिया कि अगर आप पकड़े जायँगे तो शायद इस देश के राजा के हुक्म से आपको फाँसी की सज़ा होगी। तब आप कहना कि मैं पेड़ पर कभी नहीं चढ़ा हूँ। मुझे पहले एक पेड़ पर चढ़ने दो, उसके बाद फाँसी पर लटकाना। मैं पेड़ पर बैठी रहूँगी। ज्योंही आप पेड़ पर चढ़ेंगे त्योंही मैं आपको पीठ पर चढ़ा कर उड़ जाऊँगी।" यह कह कर चिड़िया चली गई। इसके बाद राजा राजकन्या के पास जाकर रोज़ की तरह आनन्द मनाने लगे।

बुढ़िया ने क्या किया कि ज्योंही रात हुई त्योंही मज़दूर और सुरख़ी चूना लेकर राजकन्या के घर के पास गई। इसके बाद जब उसने कान लगा कर सुना कि दो आदमी हँसी दिल्लगी कर रहे हैं, तब झट राज-मिस्त्रियों को हुक्म दिया कि तुम लोग तुरन्त सुरख़ी से राजकन्या के घर की खिड़की मूँद दो। हुक्म पाते ही राजमिस्त्री काम में लग गये। सुरख़ी से खिड़की बन्द हो गई। इसके बाद बुढ़िया ने जाकर राजकन्या के पिता को ख़बर दी कि चोर पकड़ा गया है। राजकन्या के पिता ने नगर-कोतवाल को चोर पकड़ लाने के लिए भेजा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोतवाल ने आकर द्वार खोल कर राजकन्या के घर के भीतर देखा कि एक राजपुत्र बैठा हुआ है।

इसके बाद उस देश के राजा के पास इस राजा का विचार हुआ। विचार से इस राजा को फाँसी का हुक्म हुआ। जल्लाद जब राजा को फाँसी के स्थान में ले गये तब चिड़िया ने जैसा सिखा दिया था राजा ने वैसा ही कहा। राजा की बेड़ी खोल दी गई और वह एक पेड़ पर चढ़ा दिया गया। राजा के पेड़ पर चढ़ते ही चिड़िया उनको पीठ पर बिठा कर उड़ गई। यह देख कर सब लोग चकित हो गये और "क्या हुआ, क्या हुआ" कह कर पछताने लगे।

चिड़िया राजा को लेकर सीधी राजकन्या के पास पहुँची। राजकन्या ने सब हाल सुन कर कहा—"तो मुझे भी यहाँ से ले चलो। अब यहाँ रहने का कुछ काम नहीं है। चलो तुम्हारे राज्य में चले चलें।" तब चिड़िया ने राजा और राजकन्या दोनों को पीठ पर चढ़ने के लिए कहा। उनके सवार होते ही चिड़िया हवा से बातें करने लगी।

(३)

जाते जाते रास्ते में एक समुद्र पड़ा। समुद्र के ऊपर से जाते समय राजकन्या ने एक मछली देख कर राजा से कहा—"यह मछली खाने की मेरी बड़ी इच्छा होती है। इस मछली को पकड़ दो।" तब वे दोनों समुद्र के किनारे चिड़िया की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पीठ से उतरे। इसके बाद बड़े तरद्दुद से राजा ने मछली को पकड़ा। किसी तरह मछली काटी भी गई। अब उसे पकाने के लिए आग की ज़रूरत पड़ी। वहाँ आग कहाँ मिले ? चिड़िया बोली—"मेरी पीठ पर एक लकड़ी बाँध दीजिए, मैं उसी लकड़ी में आग धरा कर ले आऊँगी।" राजा ने ऐसा ही किया। चिड़िया उड़ चली। बहुत दूर जाने पर धुआँ दिखाई दिया। देख कर चिड़िया वहाँ उतर गई। वह उस लकड़ी में आग सुलगा कर समुद्र के ऊपर से आने लगी। इतने में ज़ोर से हवा बहने के कारण समूची लकड़ी जल उठी। चिड़िया के पंख जल गये। बेचारी डैनों के जल जाने से समुद्र के किनारे गिर पड़ी।

कभी की गई हुई चिड़िया जब नहीं लौटी तब राजा ने मन ही मन सोचा कि चिड़िया ज़रूर किसी संकट में पड़ गई है। सारा दिन बीत गया, रात हो गई, तोभी चिड़िया का पता नहीं लगा। तब दोनों ने एक पेड़ के नीचे किसी तरह रात बिताई। तरह तरह की चिन्ता से राजा को रात भर नींद नहीं आई। सबेरा होते ही राजा ने राजकन्या से कहा—"अब सोच विचार करने से क्या होगा ? आओ हम लोग इस लम्बी लम्बी घास से दो नाव बनावें।" तब दोनों आदमी मिल कर नाव बनाने लगे। नाव बनाने में दस दिन लग गये। वन से कन्द-मूल खाकर उन्होंने किसी तरह दस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिन बिताये। जब नावें तैयार हो गईं तब दोनों नावों को एक साथ बाँध कर दोनों सवार हुए और उन्होंने नावें समुद्र में छोड़ दीं। समुद्र में घास की जुड़ी हुई दो नावें लहरों के साथ बह चलीं। समुद्र का आरपार नहीं दिखाई देता, कहाँ जायँगे कुछ ठिकाना नहीं है। कुछ दूर जाकर राजकन्या ने देखा कि एक चूहा पानी में डूब रहा है। यह देख कर राज-कन्या ने राजा से कहा—"हाय! हाय! यह देखो एक चूहा पानी में डूब रहा है। उसको नाव पर चढ़ा लो नहीं तो बेचारा डूब जायगा।" राजा ने कहा—"नहीं, नहीं, उसको बचाने की ज़रूरत नहीं है। चूहों का स्वभाव ख़राब होता है, कहीं पीछे से वह हमारी नावों में छेद न कर दे। तब हम लोग ही डूब जायँगे।" राजकन्या ने कहा—"नहीं, नहीं, वह कुछ नहीं करेगा, उसका प्राण जा रहा है। इस तरह डूबते छोड़ देना अच्छा नहीं।" तब राजा ने राजकन्या के बार बार कहने से चूहे को नाव पर चढ़ा लिया।

तीन दिन बीत गये, राजा और राजकन्या दोनों अपार समुद्र में बहते चले जा रहे हैं। इधर चूहे ने क्या किया कि घास कुतर कुतर कर दोनों नावों की जो गाँठ थी उसे एक दिन काट दिया। बस दोनों नावें दो ओर बह चलीं, यह देख कर राजकन्या चिल्लाने लगी—"हाय रे दैया! हाय रे मैया! यह क्या हुआ?" राजा समझ गये। परन्तु अब क्या उपाय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था ? धीरे धीरे दोनों नावें एक दूसरे से बहुत दूर चली गईं। राजा हज़ार चेष्टा करने पर भी किसी तरह दोनों नावों को एक जगह नहीं कर सके। राजा एक ओर को बह गये और राजकन्या दूसरी ओर को वह गई।

(४)

राजा की नाव जाते जाते एक धोबी के घाट पर लगी। बिना खाये पिये कई दिन बीत जाने से राजा भूख-प्यास के मारे मुर्दा हो रहे थे। धोबी की स्त्री घाट पर पैर धोने को आई। उसने देखा कि एक आदमी मुर्दे की तरह घाट पर पड़ा हुआ है। उसने झटपट घर जाकर सबको ख़बर दी। घाट पर बहुत लोग जमा हो गये। धोबी ने बाहर निकाल कर देखा कि बड़ा सुन्दर चेहरा है। समझा कि किसी देश का राजा या राजकुमार होगा। धोबी झटपट उस शरीर को गोद में उठा कर अपने घर ले गया। उसने धोबिन से कहा—"जल्दी दूध गरम करके ले आ।" यह कह कर वह राजा को बिछौने पर सुला कर पङ्खा करने लगा। बड़ी बड़ी कोशिशों से राजा बचे।

उधर राजकन्या अकेली समुद्र में बहती बहती एक राजा के राज्य से दूसरे राजा के राज्य में निकल गई। उस देश में एक बादशाह था। उस बादशाह के लड़के ने राजकन्या को देख कर आदमी भेज कर उठवा मँगाया। राजकन्या का रूप देख कर शाहज़ादा उससे ब्याह करने के लिए पागल हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया। यह बात बादशाह के कानों तक पहुँची। बादशाह ने इजाज़त दी। तब शाहज़ादे ने राजकन्या से जाकर कहा—"मैं तुम पर मोह गया हूँ, तुम मुझसे शादी करो।" राजकन्या सुन कर सन्न हो गई। परन्तु कोई उपाय नहीं था। क्योंकि शाहज़ादा किसी तरह माननेवाला नहीं था। राजकन्या ने बहुत सोच विचार कर कहा—"अच्छी बात है, मगर मेरा एक व्रत है, मैं ६ महीने तक किसी मर्द का मुँह नहीं देखूँगी, ६ महीने तुम मेरे पास मत आना। इसके बाद बात--" शाहज़ादा राज़ी हो गया। तब राजकन्या के लिए एक अलग मकान बनाया गया। वहाँ बादशाह की एक लड़की आकर राजकन्या के साथ रहने लगी।

(५)

इधर ज्यों ज्यों दिन बीतने लगे त्यों त्यों चिड़िया के डैने अच्छे होने लगे। जब वह चिड़िया बिलकुल अच्छी हो गई तब वह राजा और राजकन्या को ढूँढ़ने लगी। इधर उधर ढूँढ़ते बहुत दिनों के बाद, जिस धोबी के घर राजा थे उसी धोबी की बँड़ेर पर वह चिड़िया एक दिन आधी रात को जा बैठी। उस समय राजा मन ही मन अफ़सोस करते और उस चिड़िया की बात याद कर पछताते थे। चिड़िया उनकी आवाज़ सुनते ही दरवाज़े के पास जाकर राजा को पुकारने लगी। राजा चिड़िया की आवाज़ सुन कर ख़ुशी के मारे उछल पड़े। वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुरन्त दरवाज़ा खोल कर बाहर आये तो उन्होंने देखा कि चिड़िया बाहर खड़ी है। राजा ने दौड़ कर चिड़िया को गले लगाया और कहा—"इतने दिन तू कहाँ थी? तुम्हारे न रहने से मुझ पर कितनी विपत्ति पड़ी सो क्या बताऊँ!" यह कह कर राजा ने चिड़िया से सब हाल कह सुनाया। सुन कर चिड़िया बहुत अफ़सोस करने लगी। और बोली—"आप यहाँ हैं और मैं कहाँ कहाँ ढूँढ़ती फिरी।" राजा ने कहा—"तू आग लाने जाकर हम लोगों को भूल गई थी क्या?" तब चिड़िया बोली—"आग लाते समय डैने जल जाने से मैं समुद्र के किनारे गिर पड़ी। वहाँ बहुत दिन रहने के बाद जब नये पङ्ख जमे, तब मैं आप लोगों को खोजने लगी। आप से भेंट हो गई यह बड़ी बात हुई। आप यहीं और कुछ दिन रहिए, मैं राजकन्या का पता लगा लाऊँ।" यह कह कर चिड़िया राजकन्या की खोज में उड़ गई।

इधर एक दो दिन करते करते छः महीने बीत गये। राजकन्या के व्रत की मियाद पूरी हो चली। तो भी किसी का पता नहीं लगा। जिस दिन छठा महीना पूरा हुआ, उसी दिन जिस घर में राजकन्या थी, चिड़िया ढूँढ़ते ढूँढ़ते थक कर, उसी घर की छत पर आ बैठी। दासियों ने देखते ही राजकन्या से जाकर कहा—"छत पर एक बहुत बड़ी चिड़िया आकर बैठी है। उतनी बड़ी चिड़िया हम लोगों ने कभी नहीं देखी। यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुन कर राजकन्या उस चिड़िया को देखने के लिए तुरन्त घर से बाहर निकली। उसने आकर देखा कि चिड़िया और कोई नहीं, वही है। राजकन्या को देखते ही वह चिड़िया भी झटपट छत से नीचे उतर कर उसके पास चली आई। राजकन्या की खुशी का ठिकाना न रहा। वह पूछ बैठी—"अरी चिड़िया! तेरे राजा कहाँ हैं?" चिड़िया ने सब हाल कह सुनाया। चिड़िया के साथ राजकन्या को बातचीत करते देखकर दासियों ने तुरन्त जाकर शाहज़ादी से यह हाल कहा। शाहज़ादी ने भी आकर देखा कि सचमुच एक बहुत बड़ी चिड़िया के साथ राजकन्या बात-चीत कर रही है। वह दौड़ कर शाहज़ादे से कहने गई। इस बीच में चिड़िया राजकन्या को पीठ पर बिठा कर सर्राटे के साथ उड़ गई।

(६)

शाहज़ादी के मुँह से सब हाल सुन कर शाहज़ादा पागल हो गया। यह बात बादशाह के कानों तक पहुँची। बादशाह बड़े सोच में पड़े। उन्होंने लड़के को बहुत समझाया बुझाया; लड़के ने एक न सुनी। वह सिर्फ़ यही कहने लगा—"उसको नहीं पाऊँगा तो जान दे दूँगा।" बादशाह देश देश से वैद्य ओझा बुला कर दवा-दारू और मन्त्र-तन्त्र कराने लगे। एक ओझा ने मन्त्र के बल से उस राजा के महल के सामने इतना बड़ा फाटक बना दिया कि उसके फाटक से महल में घुसते ही राजा के सिर पर फाटक गिर पड़े।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर चिड़िया राजकन्या को लेकर राजा के पास हाज़िर हुई। वहाँ से वह राजा और राजकन्या को लेकर देश को चली। राजा अपने राज्य की सीमा में जाते ही राजकन्या सहित चिड़िया की पीठ से उतर पड़े। उन्होंने मन्त्री के पास ख़बर भेजी। मन्त्री हाथी, घोड़ा, फ़ौज और लश्कर लेकर राजा की अगवानी करने आये। राजा ज्योंही महल के पास पहुँचे त्योंही वह जादू का बड़ा फाटक नज़र आया। राजा फाटक के भीतर से जाना ही चाहते थे कि तुरन्त चिड़िया आकर सामने खड़ी हो गई। चिड़िया राजा को किसी तरह आगे बढ़ने नहीं देती। तब राजा वह फाटक छोड़ कर दूसरे फाटक से भीतर चले गये और जादू का फाटक भी भहरा कर गिर पड़ा!

बादशाह ने इस ओझा से कुछ न होते देख कर किसी दूसरे जादूगर को लाने का हुक्म दिया। चारों ओर आदमी दौड़े। बहुत खोज-ढूँढ़ करने पर एक जादूगर मिला। उसने क्या किया कि मन्त्र पढ़ कर दो कबूतर बनाये। दोनों कबूतर राजा-रानी बग़ीचे में जहाँ बैठे गप-शप कर रहे थे, ठीक वहीं आकर चुगने लगे। राजा सुन्दर कबूतर का जोड़ा देख कर ज्योंही पकड़ने चले त्योंही पता पाकर चिड़िया ने, डैनों के झपट्टे से दोनों कबूतरों को मार डाला! देख कर रानी ने कहा—"राम राम! यह क्या किया? ऐसे सुन्दर कबूतर-जोड़े को मार डाला! चिड़िया बड़ी बदमाश है"! राजा ने कहा—"चिड़िया जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करती है मेरे भले के लिए ही करती है"। राजा इस बार भी बच गये। इससे भी कुछ न हुआ देख कर एक दूसरा जादूगर बुलाया गया। उसने मन्त्र पढ़ कर एक लाठी छोड़ी। वह लाठा राजा के सामने आकर उतरने लगी। इस बार भी ख़बर पाकर चिड़िया ने लाठी को तोड़ डाला। इस तरह वह राजा को बार बार बचाने लगी।

इस बार भी कुछ फल न देख कर राजा ने कहा—"इस जादू-मन्त्र से कुछ न होगा"। शाहज़ादा तब भी चुप नहीं हुआ। अबके वह आप ही एक जादूगर को बुला लाया। जादूगर ने फूलों का एक गुच्छा मन्त्र से फूँक कर फेंका। राजा-रानी बग़ीचे में टहल रहे थे इतने में वह गुच्छा आसमान से राजा के सामने उतरने लगा। राजा फूलों का सुन्दर गुच्छा देख कर ज्योंही पकड़ने चले त्योंही चिड़िया ने दौड़ कर एक झपट्टे में गुच्छे को दूर फेंक दिया। रानी ने इस बार भी झुँझला कर कहा—"देखी चिड़िया की बदमाशी! बदमाश चिड़िया ने क्या किया"? राजा ने कहा—"तुम समझती नहीं हो, चिड़िया ने मेरी भलाई के लिए ही ऐसा किया है"। रानी ने मुँह फुला लिया। इधर शाहज़ादे ने जब देखा कि इससे भी कुछ नहीं हुआ तब वह एक और जादूगर को बुला लाया। उसने मन्त्र पढ़ कर एक अजगर छोड़ा।

राजा-रानी सोये थे इतने में साँप फुफकारते हुए आ पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह देख कर चिड़िया बड़े सोच में पड़ी। शब्द होने से राजा-रानी की नींद टूट जायगी और इतनी रात को मुझे मकान में देख कर वे लोग नाराज़ होंगे इसकी उसे चिन्ता होने लगी। वह सोचने लगी कि कैसे राजा को बचाऊँ। साँप राजा के पास पहुँच गया, उसके काटने में ज़रा सी देर थी। चिड़िया ने साँप को ऐसा एक झपट्टा मारा कि वह तीन टुकड़े हो गया। इसके बाद चिड़िया ने देखा कि साँप का एक बूँद खून रानी के ललाट पर चू गया है। चिड़िया खून को पोंछने गई। खून पोंछते समय रानी की नींद खुल गई। रानी चिड़िया पर बेतरह झुँझलाई। रात को हम लोग सोये हैं, तू घर में आकर क्या देखती थी? हल्ला सुन कर राजा भी जाग पड़े। उन्होंने पूछा—"क्या हुआ?" तब चिड़िया बोली—"यह देखिए एक अजगर आपको खाने आया था, मैंने उसको मार डाला है। मारते समय एक बूँद लहू रानी के ललाट पर चू गया था। उसी को मैं पोंछ रही थी, इतने में रानी की नींद खुल गई। इसी के लिए रानी मुझे डाँट रही है"। राजा तब और कुछ नहीं बोले"।

(७)

कुछ दिन बीते राजा मन ही मन अकसर सोचते थे कि चिड़िया ने मुझे कबूतर, फूलों के गुच्छे, लाठी वग़ैरह को क्यों नहीं छूने दिया? एक दिन पूछना चाहिए। एक दिन राजा ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिड़िया से इसका ज़िक्र छेड़ा। चिड़िया बोली—"इन सब बातों को मुझसे मत पूछिए। नहीं तो आप मुझे नहीं पाइएगा। मैं कहने के साथ पत्थर हो जाऊँगी"। राजा ने सोचा कि न जाने इसमें क्या गूढ़ भेद है। इससे राजा को सुनने का और भी शौक़ हुआ। राजा तब चिड़िया से कहने के लिए बार बार हठ करने लगे। जब चिड़िया ने देखा कि राजा किसी तरह पिण्ड नहीं छोड़ेंगे तब वह सब बातें बताने लगी—"आप महल में जिस फाटक से होकर जा रहे थे उस फाटक को जादूगर ने बनाया था। अगर आप उस फाटक के नीचे से होकर जाते तो तुरन्त ही नीचे दब कर मर जाते"। यह कहते ही चिड़िया की दुम पत्थर की हो गई। चिड़िया बोली—"देखिए राजा! मुझसे आप लोगों का बहुत उपकार हुआ है; आगे भी होगा! अब भी मान जाइए; आगे की बात मत पूछिए"। राजा ने कहा—"नहीं, सब बताना होगा। मुझसे बिना सुने रहा नहीं जाता"। तब चिड़िया बेचारी क्या करती? कहने लगी—"जादूगर ने दो कबूतर बना के भेजे थे। आप उनको छूते ही मर जाते"। यह बात और लाठी की बात कहते ही चिड़िया के गले तक पत्थर हो गया। तब चिड़िया बोली—"अब सिर्फ़ मुँह बाक़ी रह गया है, अब भी उपकार हो सकता है। आगे मत पूछिए"। राजा ने पूछा—"अच्छा तू यह बता कि फिर तू चिड़िया बनाई जा सकती है कि नहीं"। चिड़िया बोली—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"यह काम आप लोगों से नहीं होगा। इसलिए कहना फ़िज़ूल है"। राजा ने कहा—"तू बता तो सही। हम लोग ज़रूर करेंगे। तब चिड़िया बोली—"वह काम बड़ा कठिन है। जब आप लोगों के लड़का हो और उस लड़के को काट कर उसके लहू से मुझे नहलावें तब मैं फिर चिड़िया हो सकती हूँ"। राजा ने कहा—"अच्छा तो अब आगे का हाल बता जा"। चिड़िया ने तब अजगर की बात कही। कहने के साथ ही उस चिड़िया का सारा बदन पत्थर का हो गया।

तब राजा ने पत्थर की चिड़िया को सावधानी से रख दिया। कुछ ही दिनों के बाद रानी के लड़का हुआ। जिस घर में पत्थर की चिड़िया थी उसी घर में राजा ने दाई को लड़का ले चलने के लिए कहा। इसके बाद उन्होंने लड़के को चिड़िया के ऊपर रक्खा और आँखें मूँद कर एक छुरा मारा। लड़के का लहू लगते ही चिड़िया जी उठी। उसने दाई से कहा—"झट-पट थोड़ी दूब ले आओ"। दाई झटपट एक मुट्ठी दूब (घास) ले आई। चिड़िया ने दूब लेकर दो तीन बार लड़के के बदन पर फेरा। लड़का जी गया। तब सब लोग सुख से रहने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हीरे मोती के दो कबूतर

एक राजा थे। उनके दो लड़के थे। दोनों लड़कों में बड़ा मेल था। दोनों एक साथ खाते, एक साथ खेलते और एक साथ सोते। देख कर लोग कहते कि दोनों राजकुमार मानो मोती-जोड़े हैं। बड़ा राजकुमार ज़रा सयाना हुआ तो राजा ने खूब धूम-धाम के साथ उसका ब्याह कर दिया। उसके कुछ दिन बाद राजा मर गये। उस समय बड़ा राजकुमार दस वर्ष का और छोटा राजकुमार पाँच वर्ष का था। उस समय मन्त्री ही सब राज-काज देखने लगे। उन्हीं के हुक्म से सब काम होने लगा। राजा के मर जाने पर रानी मन्त्री से फँस गई। रानी के डर के मारे कोई मन्त्री को कुछ कहता नहीं था। राजकुमार भी मन्त्री के ताबे होगये। रानी अब अपने लड़कों को वैसा प्यार नहीं करती थी।

राजा के एक जोड़ा कबूतर थे। दोनों में यह गुण था कि जो कोई नर को खायगा वह राजा होगा और जो मादा को खायगा उसके हँसने से मोती झरेंगे और रोने से हीरे। यह बात रानी के सिवा कोई नहीं जानता था। राजा की एक बुढ़िया लौंडी थी वह भी जानती थी। उसी लौंडी ने राजकुमारों को खेलाया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ दिन बीतने पर रानी को उन कबूतरों की बात याद पड़ी। तब रानी ने बुढ़िया लौंडी को बुलाकर हुक्म दिया कि दोनों कबूतरों को मार कर अलग अलग पकाकर ले आ। यह सुन कर लौंडी के मन में बड़ा अफ़सोस हुआ। उसने मन ही मन कहा—"यह नहीं होने पावेगा।" इसके बाद उसने दोनों कबूतरों को मारकर और पकाकर एक जगह छिपा रक्खा। फिर दूसरे दो कबूतर मारकर पकाये और अलग अलग रानी के पास ले गई।

इधर दोनों राजकुमार तीसरे पहर खेल कूद कर ज्योंही आये त्योंही लौंडी उनको चुपके चुपके लिवा ले गई। और उसने बड़े राजपुत्र को नर कबूतर खिला दिया और छोटे राजपुत्र को मादा। उधर रानी ने ख़ुद एक कबूतर खाया और एक कबूतर मन्त्री को खिलाया।

कुछ दिन बाद रानी ने सोचा कि एक बार परीक्षा लेनी चाहिए। यह सोच कर वह एक कोठरी का दरवाज़ा बन्द कर बैठ गई और बहुत देर तक हँसती रही। परन्तु उसने मुँह से कुछ झरते नहीं देखा। तब वह बहुत देर तक आँखें मल मल कर रोई। उससे भी कुछ नहीं हुआ। तब रानी के मन में सन्देह हुआ। उसने लौंडी को बुलाकर पूछा कि "ठीक वही कबूतर दिये थे कि नहीं?" बुढ़िया बोली—"ठीक वही दिये थे।" रानी ने धमकाया कि झूठ बोलेगी तो सिर उतरवा लूँगी। तब लौंडी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने डर के मारे सच बात कह दी। रानी ने जाकर मन्त्री से सब हाल कहा। मन्त्री ने सुनकर हुक्म दिया कि राजकुमारों के सिर उतार लिये जायँ। लौंडी बड़ी चिन्ता में पड़ी। वह सोचने लगी कि किस तरह राजकुमारों को बचाऊँ। उसने बड़े राजकुमार की बहू से जाकर कहा—"बड़ी आफ़त है। मन्त्री के हुक्म से आज राजपुत्रों के सिर उतारे जायँगे। वे दोनों टहलने गये हैं, तुम झटपट इसी रास्ते से चली जाओ। थोड़ी ही दूर जाने पर उनसे भेंट हो जायगी। उनसे सब बात बता कर किसी ओर लिवा ले जाना। वे यहाँ आवेंगे तो आज उनके प्राण नहीं बचेंगे।" यह कहकर उसने उसको झटपट बाहर कर दिया। कुछ दूर जाने पर राजपुत्रों ने उसे देखा। देख कर बड़े राजपुत्र ने कहा—"हैं! मेरी स्त्री रास्ते में घूम रही है। मैं उसको अभी मार डालूँगा।" छोटे कुमार ने कहा—"नहीं भाई साहब! जाँच लीजिए कि क्या बात है? वह तो हम लोगों की तरफ़ ही आ रही है। पहले हाल-चाल पूछ कर तब कुछ करना चाहिए।" इतने में बड़े कुमार की स्त्री पास आ गई। उसने सब हाल कहा और उन दोनों को घर लौटने से मना किया। तब तीनों आदमियों ने जङ्गल का रास्ता लिया।

राजा की पतोहू राजमहल में रहती थी, कभी ज़मीन पर पैर नहीं रखती थी। सारा बदन हीरे मोतियों के गहनों से लदा रहता था। वह आज जङ्गल में काँटे-कुश के ऊपर से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जा रही है। तिस पर वह गर्भवती है। चलते चलते मुँह सूख गया, घास की नोक पैर में गड़ गई, प्यास से तालू सूखने लगा। बहुत दूर जाने पर वे लोग एक पेड़ के नीचे बैठ गये। विपद पर विपद आई। रास्ता चलने की थकावट से बहू का पेट पिराने लगा। वहाँ न घर था न दाई—परन्तु कुछ चारा नहीं। उसी पेड़ के नीचे एक सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ। अब आग की ज़रूरत पड़ी। जंगल में आग कहाँ मिले? बड़ा राजकुमार आग ढूंढ़ने निकला।

उसने बहुत दूर निकल जाने पर एक जगह धुआँ देखा। राजपुत्र उधर को ही चला। वह जिस राज्य में जा पहुँचा था उस राज्य का राजा थोड़े ही दिन हुए मर गया था। उस राज्य के नियम के अनुसार राज-हाथी छोड़ा गया था। यह नियम था कि यह राज-हाथी जिसको पीठ पर चढ़ा ले जायगा वह उस राज्य का राजा होगा। बड़ा राजकुमार धुआँ देख कर आगे बढ़ रहा था, इतने में पीछे से उस राज-हाथी ने आकर उसको सूंड़ से उठा कर अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और सीधे राजमहल में ले जाकर सिंहासन पर बिठा दिया।

इधर छोटे राजपुत्र ने अपने भाई को न आते देख कर बहू से कहा—"भाभी! तुम यहीं रहो। मैं ज़रा देख तो आऊँ कि भाई साहब के आने में क्यों देर हो रही है और तुम्हारे लिए आग भी लेता आऊँ।" यह कह कर छोटा भाई भी आग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ढूँढ़ते हुए निकला। उसने कुछ दूर जाने पर देखा कि नदी के किनारे किसी सौदागर की नाव लगी है। उसने उस सौदागर से आग माँगी। सौदागर ने सुन्दर लड़का देख कर उसे नाव पर बिठा लिया। राजपुत्र बहुत रोया-गाया परन्तु उसने कुछ न सुनी। लाचार हो छोटा राजपुत्र सौदागर की नाव में पड़ रहा।

जहाँ राजकुमार की स्त्री पेड़ के नीचे पड़ी थी उस देश के मन्त्री के एक लड़का होकर मर गया है। मन्त्री उस लड़के के शोक में पागल से होकर वन वन घूमने लगे। उन्होंने, जहाँ राजकुमार की स्त्री पड़ी थी वहाँ, जाकर देखा कि एक सुन्दर लड़का पड़ा हुआ है। मन्त्री झटपट उस लड़के को गोद में उठा कर अपने घर ले गये। लड़का जनने के कष्ट और सरदी के मारे कुमार की स्त्री बेहोश हो गई थी। कुछ देर के बाद जब उसको होश हुआ तब किसी को न पाकर उसे चारों ओर अन्धकार दिखाई देने लगा। बहुत देर तक जहाँ की तहाँ पड़ी रहने के बाद जब उसने देखा कि कोई नहीं आया तब वह उठी और धीरे धीरे चलने लगी। बड़ी मुश्किल से वह एक गाँव में जा पहुँची। एक गृहस्थ ने उसको कष्ट में देख कर अपने यहाँ रहने की जगह दी।

बड़ा राजकुमार राजगद्दी पर बैठ कर सब बातें भूल गया। उसने राजकाज में मन लगाया। इधर मन्त्री जिस लड़के को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उठा लाये थे वह लड़का भी धीरे धीरे बड़ा होने लगा। वह लड़का कभी कभी मन्त्री के साथ राजा के यहाँ जाता। राजा ने जब से उस लड़के को देखा तब से अनायास उनके जी में उसके ऊपर प्रेम पैदा हो गया। वह सोचा करते कि इस लड़के पर मुझे इतना स्नेह क्यों होता है। वह यह सोचते और लड़के के मुँह की ओर देखते। मन में विचार उठा करते परन्तु वह खुल कर कुछ कहते नहीं थे।

इधर छोटा राजकुमार सौदागर के यहाँ रोके जाने से रोने लगा। वह जितना ही रोता उतने ही हीरे झरते। यह देख कर सौदागर ने उसे एक कमरे में बन्द कर रक्खा। वह कमरा हीरों से भर गया। वह रोज़ रोता और रोज़ उसके मुँह से हीरे झरते। रुलाई बन्द हो जाने पर सौदागर उसके रोक लगाता। इस प्रकार कई दिन बीते। इतने में सौदागर की चाल उसके देश में जा पहुँची।

सौदागर के एक गद्दू लड़का था। सौदागर ने मन ही मन सोचा कि इस लड़के को दिखा कर किसी राजकन्या से ब्याह करा दूँगा, और फिर उस कन्या को घर लाकर अपने लड़के को देदूँगा। ब्याह की सब बात-चीत तय हो गई। छोटे राजकुमार के साथ राजकन्या का ब्याह हुआ। ब्याह के बाद जब वर-कन्या एक घर में सोने गये तब छोटा राजकुमार दबक कर एक तरफ़ को सो रहा। उसने मुँह से चूँ न की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्यार वार की कोई बात न करते देख कर राजकन्या ने सोचा कि गूँगे के साथ तो मेरा व्याह नहीं हुआ। उसने राजपुत्र से कहा—"तुम चुप क्यों हो ? मैं क्या तुम्हारे पसन्द नहीं हूँ ?" राजकुमार ने कहा—"चुप न रहूँ तो क्या करूँ ? मेरी बात सुन कर क्या करोगी ? मेरी बात बहुत लम्बी है।" राजकन्या कहने के लिए हठ करने लगी। तब राजपुत्र ने कहा—"मेरे साथ तुम्हारा व्याह तो हुआ है, पर तुम मेरी स्त्री नहीं रहोगी। सौदागर के एक मूर्ख लड़का है उसी के लिए वह तुमको ले जाता है।" राजकन्या सुन कर चौंक पड़ी। उसने कहा—"ऐसी बात है ? यह कभी नहीं होने पावेगा। मैं इसका बन्दोबस्त करूँगी।" दूसरे दिन वर-कन्या को लेकर सौदागर घर आया। रात को जब उसने कन्या को गद्दू लड़के की कोठरी में भेज दिया तब राजकन्या ने क्या किया कि कुछ देर चुपचाप रहने के बाद जब सब सो गये तब वह अपने पति के पास चली आई। वह रोज़ ऐसा ही करती। गद्दू लड़का कुछ न समझता। इसी तरह दिन बीतने लगे।

बड़ा राजकुमार राजा होने के बाद एक दिन शिकार खेलने उसी सौदागर के मकान के सामने से जा रहा था। रास्ते में हाथी-घोड़े और फ़ौज-पलटन की धूम पड़ जाने से लोग देखने दौड़े। 'राजा आते हैं, राजा आते हैं' का शोर चारों ओर मच गया। छोटा राजपुत्र भी राजा को देखने दौड़ा। दूर से राजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को देखते ही उसने जी में सोचा कि यह मुखड़ा पहचाना हुआ सा लगता है। वह लोगों की भीड़ ठेल कर और सिपाही संतरियों के धक्के खाकर ज़रा और आगे बढ़ गया। जाकर देखा कि राजा और कोई नहीं मेरे भैया ही हैं। तब उसे सब बातें याद आईं। उसके जी में आया कि दौड़ कर भैया के गले लग जाऊँ और सब हाल कह सुनाऊँ। परन्तु उसे सिपाहियों के डर के मारे साहस नहीं हुआ। तब वह मन की साध मन ही में दबा कर घर लौट आया। उसने सोचा कि तब तो सौदागर मेरे भैया के राज्य में ही रहता है। यह बात उसने और किसी से नहीं कही पर रात को जब राजकन्या आई तो उसने उससे सब हाल कहा। इस पर दोनों में सलाह हुई कि एक दिन राजकन्या उस गद्दू लड़के को मार डाले और घर का दरवाज़ा बन्द करके पड़ी रहे, किसी तरह दरवाज़ा न खोले। जब स्वयं राजा आवें तब दरवाज़ा खोले। यह सलाह होने पर छोटे राजपुत्र ने एक चिट्ठी में सब बातें लिख कर राजकन्या के पास रख दीं। दूसरे दिन सलाह के मुताबिक़ कारवाई हुई। तब दरवाज़ा खोलने के लिए सब लोग किवाड़ खटखटाने लगे। राजकन्या ने किसी तरह दरवाज़ा नहीं खोला। वह भीतर से यही पुकारती—"दुहाई राजा की। राजाजी के आये बिना मैं दरवाज़ा नहीं खोलूँगी।" इस हत्या की ख़बर राजा तक पहुँची। राजा सुन कर स्वयं वहाँ आये। राजा के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आते ही राजकन्या ने दरवाज़ा खोल दिया। और वह चिट्ठी राजा के हाथ में देकर कहा—"दुहाई राजा की! यह चिट्ठी पढ़ कर तब मेरा विचार कीजिए।"

चिट्ठी पढ़ कर राजा को सब बातें याद आईं। राजा क्रोध से काँपने लगे। इसके बाद जिस कोठरी में उनके छोटे भाई को सौदागर ने बन्द कर रक्खा था उस कोठरी का दर्वाज़ा खोलने का हुक्म राजा ने दे दिया। दर्वाज़ा खुलते ही छोटा भाई आकर बड़े भाई के पैरों में गिर पड़ा। राजा छोटे भाई को गले लगा कर आँसू बहाने लगे। सब लोग देख कर दङ्ग हो गये। राजा ने सौदागर को जीते जी गढ़ा खोद कर गाड़ देने का हुक्म दिया। राजा भाई और राज-कन्या को लेकर राजमहल में चले गये।"

देखते देखते कई वर्ष बीत गये। मन्त्री का लड़का अब सयाना हो गया था। अब उसके कितने ही सङ्गी-साथी जुट गये थे। वह रात दिन केवल इधर उधर घूमा करता था। जिस गृहस्थ के घर उसकी माँ आकर रहने लगी थी, एक दिन मन्त्री का लड़का कई साथियों सहित उसी गृहस्थ के घर के पास से होकर घूमने जाता था। जाते जाते उन्होंने देखा कि एक बड़ी सुन्दर स्त्री घर के पिछवाड़े खड़ी है। मन्त्री का लड़का अपनी धुन में जा रहा था, उसके मित्रों में से एक ने कहा कि "देखो भाई! यह स्त्री कैसी सुन्दर है! आओ, हम लोग इसको यहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से भगा ले चलें"। तब सब ने मिल कर सलाह की कि रात को मन्त्री का लड़का आकर उसको हर ले जाय। इसके बाद सब अपने अपने घर चले गये।

मन्त्री का लड़का यही सोचता रहा कि कब रात हो, कब रात हो। रात होते ही मन्त्री का लड़का घर से निकला। उसके कुछ दूर जाते ही आकाश में बादल छा गये और टपाटप बूँदें पड़ने लगीं। मन्त्री का लड़का एक गृहस्थ की गोशाला में जाकर खड़ा हुआ। उस समय एक बछड़ा ज्योंही अपनी माँ का दूध पीने आया त्योंही गाय ने उसके एक लात मारी। बछड़े ने कहा—"माँ! मैं दूध पीना चाहता हूँ तो तू लात क्यों मारती है?" तब गाय बोली—"बेटा! बड़े होने पर तुम लोगों को अपनी माँ की याद नहीं रहती। इसका सबूत यह मन्त्री का लड़का है। यह अपनी ही माँ को भगा ले जाने जाता है, यह लड़का होकर अपनी माँ को नहीं पहचानता"। यह बात सुन कर मन्त्री का लड़का ठिठक गया! अरे राम! तो क्या मैं जिसको माँ समझता हूँ वह मेरी माँ नहीं है? यह बात सोचते सोचते वह घर लौट गया। दूसरे दिन वह लड़का अपने बिछौने से नहीं उठा। खिड़की के रास्ते धूप आ गई, सब घरों में झाड़ू-बुहारू हो गया, चरवाहे गाय-बैलों को चराने ले गये, चिड़ियाँ घोसले छोड़ कर चारे की खोज में उड़ गईं। दिन चढ़ता गया। मगर मन्त्री के लड़के ने घर का दर्वाज़ा नहीं खोला। सबको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिन्ता हुई। लोग आकर द्वार खटखटाने लगे। मन्त्री के लड़के ने साँस न ली। माँ ने पुकारा, बाप ने पुकारा, दासियों ने पुकारा। मन्त्री का लड़का चुप। इसके बाद जिस दाई ने उसको बचपन से पाला-पोसा था, वह जब आई तब लड़के ने द्वार खोल कर उसे भीतर बुला लिया और भीतर की सिटकनी लगादी। उसने दाई से पूछा—"सच बताओ, मैं किसका लड़का हूँ? अगर झूठ बोलोगी तो तलवार से सिर उतार लूँगा"। डर के मारे दाई का मुँह फीका हो गया। उसने काँपते काँपते कहा—"लल्ला! मन्त्री ने तुमको जङ्गल से उठा लाकर पाला-पोसा है। तुम्हारे असली माँ-बाप ये लोग नहीं हैं"। यह सुन कर मन्त्रि-पुत्र सब बातें समझ गया। तब वह किसी से कुछ न कह कर सीधे उस गृहस्थ के घर पहुँचा जहाँ उसकी माँ थी। उसने जाकर देखा कि उसकी माँ घर लीप रही है। लड़के ने पास जाकर कहा—"माँ! तुम मुझे पहचानती हो"? राजकुमार की स्त्री अकचका कर उसकी ओर एकटक ताकने लगी। मुँह से कोई बात नहीं निकली। यह देख कर उसके लड़के ने कहा—"तुम मेरी माँ हो, इस समय तुम मुझे नहीं पहचानती हो। मन्त्री ने मुझे जङ्गल से उठा ले आकर पाला-पोसा है"। तब धीरे धीरे उसको सब बातें याद आईं। वह रोने लगी और उसने लड़के को गोद में उठा लिया। लड़का भी माँ की गोद में सिर रख कर सुखी हुआ। माँ ने एक एक करके सब हाल कह सुनाया। सुन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर लड़का सन्नाटे में आ गया। फिर उसने सोचा कि माँ को पाया तो बाप को नहीं पाऊँगा? उसने माँ से कहा—"माँ! जब तुमको पाया है तब पिता को भी ढूँढ़ निकालना होगा। तुम यहाँ और कुछ दिन रहो। मैं पिता को ढूँढ़ देखूँ"। यह कह कर लड़का पिता की खोज में निकला।

इधर भाई को पाकर राजा को जब सब बातें याद आईं तब उन्होंने स्त्री और लड़के को ढूँढ़ने के लिए देश देश में आदमी भेजे। बहुत ढूँढ़ खोज करने पर जब कोई रानी और राजकुमार का पता नहीं लगा सका तब राजा का कोतवाल ख़ुद ढूँढ़ने निकला। उसने पहले उस सौदागर के मल्लाहों का पता लगाया। बहुत खोज पूछ करने पर एक मल्लाह का पता मिला। कोतवाल जिस समय मल्लाह से बातचीत कर रहा था उसी समय मन्त्री का पाला हुआ लड़का अपने बाप को खोजते खोजते वहाँ आ निकला। रास्ता चलते चलते उसे प्यास लग गई थी, वह मल्लाह के घर एक लोटा पानी माँगने गया। मल्लाह का लड़का घर के भीतर पानी लाने गया। उस समय कोतवाल और मल्लाह में जो बातचीत हो रही थी उसे मन्त्री का लड़का वहाँ खड़ा खड़ा सुनने लगा। मल्लाह ने कहा कि सौदागर जिस लड़के को पकड़ लाया था वह जितना ही रोता उसके मुँह से उतने ही हीरे झरते। यह सुनकर मन्त्री का लड़का उछल उठा। उसने पूछा—"वह लड़का फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहाँ गया ? अगर तुम मुझे उसका पता बता दो तो मैं तुम्हें एक सौ मोहर इनाम दूँगा"। तब मल्लाह को जो कुछ मालूम था वह सब उस लड़के को नाव पर चढ़ा लाने के बाद से सौदागर की मृत्यु तक उसने कह सुनाया। राजपुत्र ने कहा—"मुझे राजा के पास ले जा सकते हो" ? यह सब सुन कर कोतवाल ने सोचा कि यह लड़का क्या रानी और राजपुत्र का हाल जानता है ? यह सोच कर कोतवाल ने कहा—"हाँ, मैं तुमको राजा के पास ले जा सकता हूँ। तुम अगर हम लोगों की रानी और राजपुत्र का पता बता सको तो आधा राज-पाट पाओगे। नहीं तो तुम्हारा सिर कट जायगा"। राजपुत्र ने सोचा कि हो न हो यही राजा मेरा बाप है। उसने कोतवाल से कहा—"अच्छा यही सही"। तब कोतवाल उसको राजा के पास ले गया। राजा ने उस लड़के से पूछा—"क्या तुम रानी और राजपुत्र का पता बता सकते हो" ? लड़के ने कहा—"हाँ महाराज !" इसके बाद उसने अपनी माँ से जो कुछ सुना था वह सब कह सुनाया। राजा को सब बातें याद आ गईं, वह लड़के को गले लगा कर आँसू बहाने लगे। इसके बाद उन्होंने रानी को लाने के लिए लाव-लश्कर सहित पालकी भेजी। रानी के आने पर राजा ने उसको पहचाना। तब दोनों ने अपना दुःख-सुख सुना कर जी हलका किया। इसके बाद राजा, रानी, राजा के भाई और राजपुत्र आदि सबका मिलन हुआ। सब लोग सुख से रहने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वेलपति की कन्या

एक राजा के लड़के और मन्त्री के लड़के में बड़ी दोस्ती थी। दोनों एक साथ खाते और एक साथ उठते बैठते थे। एक के विना दूसरे को कल नहीं पड़ती थी। जब राजकुमार बड़ा हुआ तब एक राजकन्या से उसका व्याह हुआ। यह देख कर मन्त्री के लड़के को भी लालसा हुई कि मैं भी किसी राज-कन्या से व्याह करूँगा। एक दिन दोनों मित्र खाने बैठे। राजपुत्र की स्त्री पास बैठ कर खिलाती थी। बात बात में मन्त्री के लड़के के व्याह की बात उठी। राजकुमार की स्त्री ने दिल्लगी करके कहा—"मन्त्री के लड़के को राजकन्या थोड़े शोभेगी? वेलपति की कन्या के साथ व्याह हो तभी ठीक होगा।" यह बात मन्त्री के लड़के को बड़ी कड़वी लगी। दूसरे दिन वह विना किसी से कुछ कहे-सुने घर से निकल पड़ा और जिधर नज़र उठी उधर को ही जाने लगा।

राजपुत्र के साथ रहने से उसको हाथी घोड़े पर चढ़ कर ही जाने का अभ्यास था। वह कभी पैदल नहीं चला था। दिन भर चलते चलते मन्त्रि-कुमार के पैर दुखने लगे। तब वह थक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। बैठे बैठे सोचने लगा कि कहाँ जाऊँ। इतने में वहाँ एक साधु आ पहुँचा। मन्त्री के लड़के को वहाँ बैठा देख कर साधु ने पूछा—"बच्चा! तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? और कहाँ जाओगे? तुम्हारे चेहरे से जान पड़ता है कि तुम्हारे मन में कुछ कष्ट है।" यह सुन कर मन्त्री के लड़के ने सोचा कि यह साधु मेरे मन की बात कैसे समझ गये? जो हो, जब ये समझ गये तब इनसे कह देखना चाहिए शायद कुछ हो जाय। साधु लोग बहुत तन्त्र मन्त्र जानते हैं। यह सोच कर उसने साधु से उस दिन की सब बातें कह सुनाईं। साधु ने सब हाल सुन कर कहा—"बच्चा! कुछ चिन्ता मत करो। बेलपति की कन्या से ही तुम्हारा व्याह होगा। तुम एक काम करो। मैं जैसा बतलाता हूँ ठीक वैसे ही चलो तो तुम्हारी मन-कामना पूरी होगी। सावधान। मैं जो कहूँ उससे तनिक इधर उधर मत करना।" मन्त्री के लड़के ने कहा कि "बहुत अच्छा, ऐसा ही करूँगा।" साधु ने उसको एक घोड़ा देकर कहा—"इस घोड़े पर सवार होकर इसी रास्ते से सीधे दक्षिण को चले जाओ। जाते जाते बहुत दूर निकल जाओगे तो तुम्हें एक बेल का पेड़ दिखाई देगा।" उसमें केवल एक ही फल लगा हुआ मिलेगा। तुम इस घोड़े पर चढ़े ही चढ़े अपनी छड़ी से उस पेड़ की डाली को हिला देना और नीचे एक कपड़ा फैला रखना। ज्योंही बेल कपड़े पर आ गिरे, त्योंही वहाँ से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घोड़े को दौड़ा कर चल देना। सावधान! एक बार भी पीछे फिरकर मत देखना।"

मन्त्रि-पुत्र साधु के कहने के अनुसार घोड़े पर सवार होकर उसी ओर चला। कुछ दूर जाने पर उसे वह बेल का पेड़ दिखाई दिया। साधु ने जैसे जैसे बता दिया था ठीक वैसे ही उसने बेल को तोड़ लिया। इसके बाद जब वह घोड़ा दौड़ा कर चला तो पीछे से भयानक किचकिचाहट सुनाई पड़ी। मन्त्रि-पुत्र ने साधु की बात भूल कर पीछे की ओर देखा। पीछे उलट कर देखते ही वह पत्थर हो गया। वह बेल फिर जाकर पेड़ में लग गया।

कई दिन बीत गये और मन्त्रि-पुत्र नहीं लौटा तब साधु ने सोचा कि कुछ मामला गड़बड़ है। जान पड़ता है कि मैंने जिसके लिए मना कर दिया था उसने वही किया है। यह सोच कर साधुजी धीरे धीरे उसी ओर को चले। उन्होंने बेल के पेड़ के पास जाकर देखा तो वही बात थी। मन्त्री का लड़का पत्थर की मूर्त्ति होकर पड़ा है। साधु ने एक मुट्ठी धूल लेकर मन्त्र पढ़ा और वह धूल मूर्ति पर डाल दी। मन्त्री का लड़का फिर आदमी बन गया। तब साधु बाबा ने उसको डाटा और फिर कहा—"अब फिर जाओ पर ख़बरदार! जो कुछ बता दिया है उसमें तनिक भी इधर उधर मत करना।" इस बार मन्त्री का लड़का बेल लेकर लौट आया। यह देख कर साधु को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बड़ी खुशी हुई। साधु ने कहा—"इस बेल को लेकर सीधे घर चले जाओ। घर जाकर बेल को फोड़ोगे तो उसमें से एक कन्या निकलेगी। फिर बता देता हूँ कि रास्ते में बेल को कभी मत फोड़ना।"

साधु की बात सुन कर मन्त्रि-पुत्र बेल लिये घर को लौटा। वह मन ही मन सोचता जाता है—घर जाकर राजपुत्र की स्त्री को दिखलाऊँगा कि देखो मैं बेलपति की कन्या लाया कि नहीं। उसने फिर सोचा ऐसा न हो कि घर जाकर धोखा खाऊँ। एक बार यहीं न देख लूँ कि बेलपति-कन्या कैसी है। बस उसका धीरज जाता रहा। उसने एक पेड़ के नीचे बैठ कर बेल को फोड़ा। फोड़ने के साथ ही उसके भीतर से एक बड़ी सुन्दर कन्या निकल आई। कन्या ऐसी सुन्दर थी कि न इस द्वीप की न उस द्वीप की। उसके बदन की गोराई पक्के सोने की सी थी, नाक तोते की सी, भौंहें धनुष के समान, ओठ पके हुए कुँदरू के समान, चितवन कटारी की सी और बात ऐसी है कि मानो अमृत झरता है। ऐसी रूपवती कन्या को देख कर मन्त्री का लड़का मुग्ध होगया। उसने मन ही मन कहा—इसके सामने राजपुत्र की स्त्री किस गिनती में है? दोनों मिल-कर सुख-विलास करने लगे। मन्त्री का लड़का रास्ता चलते चलते थक गया था, वह थोड़ी देर में बेलपति-कन्या की जाँघ पर सिर रख कर सो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

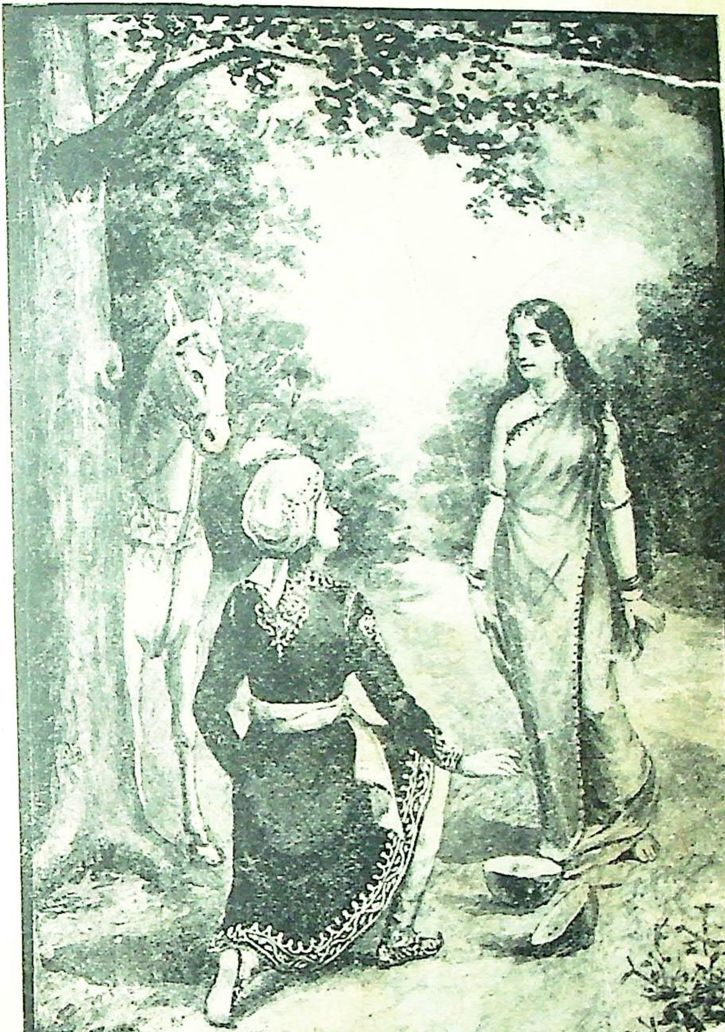

उस
आश्चर्य

मनोमोहिनी रूपवती कन्या को देख कर मन्त्री का लड़क
मुग्ध हो गया—पृष्ठ ८६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थक

सिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उधर से इन्द्र की एक परी जा रही थी। बेलपति-कन्या की जाँघ पर मन्त्रि-पुत्र को सोते देख कर उसको जलन हुई। उसने आकर अचानक उस लड़की का गला दबाकर उसको मार डाला। रास्ते की एक ओर तालाब था। परी उस कन्या को उस तालाब की कीचड़ में गाड़ आई और आप उस कन्या का वेष धर कर बैठ गई। मन्त्रि-पुत्र नींद से उठ कर झटपट उसको अपने घर ले गया। बेलपति-कन्या की जो दशा हुई उसका उसे कुछ पता नहीं लगा।

दूसरे दिन देखा गया कि परी ने जिस तालाब में बेलपति-कन्या को गाड़ दिया था उसमें एक सुन्दर कमल का फूल खिला हुआ है। वैसा फूल कभी किसी ने नहीं देखा था। बहुत लोग उसे तोड़ने गये पर वह किसी के हाथ नहीं आया। ज्योंही कोई तोड़ने जाता त्योंही वह फूल बीच में खिसक जाता। यह ख़बर चारों ओर फैल गई।

मन्त्री के लड़के ने एक दिन घूमते फिरते जाकर उस फूल को देखा। उसकी इच्छा हुई कि उस फूल को तोड़ूं। मन्त्रि-पुत्र के हाथ फैलाते ही फूल आप से आप उसके पास चला आया। उसने वह फूल लेकर परी को दिया। मन्त्रि-पुत्र के चले जाने पर परी ने फूल को मसल कर घर के पिछवाड़े फेंक दिया। दूसरे दिन घर के पिछवाड़े बेल का एक पेड़ लग गया। उस पेड़ में एक फल लगा था। यह देख कर सब लोगों को आश्चर्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ कि यहाँ कहीं कुछ न था, अचानक यह पेड़ कहाँ से लग गया। बहुत आदमी उसका फल तोड़ने गये पर किसी से वह फल टूटा नहीं। तब मन्त्री का लड़का फल तोड़ने गया। उसके हाथ फैलाते ही फल नीचे आ गया। मन्त्री के लड़के ने उसे तोड़ कर परी के हाथ में दिया। परी ने उस फल को टुकड़े टुकड़े करके दासी के हाथ दूर जङ्गल में फेंकवा दिया।

दूसरे दिन लकड़हारों ने लकड़ी काटने जाकर देखा कि जङ्गल के भीतर एक बहुत बड़ा महल बन गया है। उसकी दीवारें सोने की, छत चाँदी की और खम्भे हीरे मोतियों से जड़े थे। सोने का सिंह दरवाज़े पर बैठा था और सोने के पिँजरे में एक चिड़िया पली हुई थी। वह चिड़िया कभी गाती है, कभी हँसती है और तरह तरह की बोलियाँ बोलती है। इस कान से उस कान, उस कान से इस कान होते हुए यह बात धीरे धीरे मन्त्री के कानों तक पहुँची। मन्त्रि-पुत्र उस महल को देखने गया। मन्त्री का लड़का ज्योंही महल में घुसने लगा, त्योंही वह चिड़िया बोल उठी—"ऐसा बेवकूफ़ मन्त्रि-पुत्र किसी ने न देखा होगा। वेलपति की कन्या इस महल में है और वह एक परी को लेकर पड़ा हुआ है। परी ने वेलपति-कन्या का वेष धर कर धोखा दिया पर मन्त्रि-पुत्र ने कुछ नहीं समझा।" मन्त्री का लड़का यह बात सुन कर चौंक पड़ा। वह इधर उधर देखने लगा। तब चिड़िया फिर बोली—"भीतर जाकर देख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्यों नहीं लेते ? सच झूठ आप ही आप मालूम हो जायगा। कमल के फूल को नोच कर फेंक दिया तब एक बेल का पेड़ पैदा हुआ और उसमें एक ही फल लगा उससे भी कुछ नहीं समझा। परी ने समझ बूझ कर ही कमल के फूल को मसला और बेल को भी टुकड़े टुकड़े करके यहाँ फेंकवा दिया।" मन्त्रि-पुत्र ने ऊपर सिर उठा कर देखा कि एक चिड़िया ये सब बातें कह रही है। तब उसको और भी आश्चर्य हुआ। वह बिना कुछ बोले महल के भीतर घुस गया। वहाँ जाकर देखा कि सचमुच वह बेलपति की कन्या ही है। मन्त्री के लड़के ने उससे सब बातें पूछीं। मन्त्रि-पुत्र के सो जाने पर जो घटना हुई थी उसे बेलपति की कन्या ने कह सुनाया। मन्त्रि-पुत्र सब समझ कर बेलपति की कन्या को घर लिवा ले गया। उसने परी को उसी ता[illegible] दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पक्षीरूपी राजपुत्र

वज़ीर के लड़के, क़ाज़ी के लड़के, कोतवाल के लड़के और राजा के लड़के में बड़ी मित्रता थी। वे सब एक साथ खेलते और एक साथ घूमते थे। सब अपने अपने माँ-बाप के लाड़ले थे। वे दिन भर सिर्फ़ हाहा-ठीठी करते और खेलते फिरते थे। लिखने-पढ़ने या कुछ काम-काज करने में उनका जी नहीं लगता था। वे लोगों को छेड़ते और तङ्ग किया करते थे। राजा समझाते, मन्त्री समझाते पर कुछ फल नहीं होता था। वे चारों लोगों की सीख एक कान से सुनते और दूसरे कान से निकाल देते थे।

जब राजा ने देखा कि इनके सुधरने का और कोई उपाय नहीं है तब उन्होंने मन्त्री से मिल कर सलाह की कि राजपुत्र जब खाने बैठे तब भात के ऊपर राख छिड़क दी जाय। एक दिन ऐसा ही किया गया। राजकुमार की थाली में भात परोस कर ऊपर से राख छिड़क दी गई। भात पर राख देखते ही राजकुमार ने थाली उठा कर फेंक दी। और क्रोध में बड़बड़ाता मन्त्री[illegible]आ घर से निकल गया। इसके बाद चारों मित्र उस राजा देखने ल[illegible]ज्य छोड़ कर चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वे लोग जाते जाते एक दूसरे राजा के राज्य में जा पहुँचे। रास्ते में रात हो गई। वे चारों सोचने लगे कि कहाँ जायँ। आस पास कोई घर-मकान नहीं था। तब उन लोगों ने मैदान में एक पेड़ के नीचे रात बिताने की सलाह ठहराई। मैदान में चोर-डाकुओं का डर था। इससे उन लोगों ने यह सोचा कि सब लोग एक साथ न सोवें। एक एक पहर एक एक आदमी पहरा दे। पहले पहल राजकुमार का पहरा हुआ। राजकुमार जागता रहा और सब सो गये।

जिस पेड़ के नीचे वे लोग ठहरे थे उसके ऊपर दो चिड़ियाँ रहती थीं। कुछ दिन हुए उनके बच्चे हुए हैं, परन्तु अभी तक उन्होंने आँखें नहीं खोली हैं। जब राजकुमार पहरे पर था उस समय नर-मादा दोनों पक्षियों में इस प्रकार बातें होने लगीं--

मादा--इन बच्चों को पैदा हुए कई दिन बीत गये परन्तु अभी तक इनकी आँखें क्यों नहीं खुलीं?

नर--अब हम लोग चाहें तो इनकी आँखें खोल सकते हैं, मगर बच्चों को आदमी का मांस खाने को दें तो वे अभी आँखें खोल सकते हैं।

मादा--आदमी कहाँ पावेंगे कि उनका मांस खाने को देंगे?

नर—क्यों, आदमी तो इस पेड़ के नीचे ही हैं।

७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मादा—नहीं, नहीं ! मांस लेने से आदमी का प्राण चला जायगा।

नर—नहीं, प्राण नहीं जायगा। फिर उनके बचाने का उपाय है।

मादा—तब तो अच्छा है। अच्छा, इस अमृतवृक्ष के फल में कोई गुण है ?

नर—हाँ, है क्यों नहीं ? इस डाल में जो चार फल हैं उनमें एक एक का एक गुण है। एक फल खाने से मुँह से मोहर झरेगी। एक के खाने से आदमी राजा होगा। और बाक़ी दो के खाने से चोर होगा।

इसके बाद चिड़ियाँ चुप हो गईं। राजकुमार ने उनकी बातें याद रक्खीं। एक पहर के बाद वज़ीर के लड़के को जगा कर राजकुमार सोने गया। जब सबेरा हुआ तब उसने उस नर पक्षी को बुला कर अपने बदन से मांस लेने के लिए कहा। पक्षी ने चोंच से थोड़ा मांस निकाल लिया और एक पेड़ का पत्ता रगड़ कर घाव पर चढ़ा दिया। घाव तुरन्त भर गया। इसके बाद राजकुमार ने चारों फल तोड़ कर एक आप खाया, एक वज़ीर के लड़के को खाने को दिया और बाक़ी दो क़ाज़ी और कोतवाल के लड़कों को दिये। राजपुत्र ने फलों के गुण किसी से नहीं बताये।

कुछ देर के बाद राजकुमार ने फल के गुण की परीक्षा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेने के लिए एक झाड़ी की आड़ में जाकर ज्योंही मुँह वाया त्योंही मुँह में से झन से एक अशरफ़ी गिर पड़ी। राजपुत्र ने वह अशरफ़ी वज़ीर के लड़के को देकर कहा—"भाई! बाज़ार में जाओ और इसको भुना कर खाने पीने का सामान ले आओ।" वज़ीर का लड़का बाज़ार जा रहा था इतने में उधर से उस देश का राज-हाथी आ निकला। वज़ीर के लड़के को देखते ही राज-हाथी ने सूँड़ से उठा कर अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और सीधे राजमहल में लेजाकर सिंहासन पर बिठा दिया। उस देश का राजा मर गया था। उस राज्य का यह नियम था कि राज-हाथी जिसको सिंहासन पर बैठावेगा वही उस देश का राजा होगा।

वज़ीर के लड़के के आने में विलम्ब देख कर राजपुत्र ने मुँह से फिर एक अशरफ़ी निकाली और उसे क़ाज़ी के लड़के को देकर बाज़ार भेजा। क़ाज़ी के लड़के के हाथ में मोहर देख कर उस देश के कोतवाल ने उसको चोर समझ कर पकड़ लिया। क़ाज़ी के लड़के को भी लौटते न देख कर राजकुमार ने और एक मोहर निकाल कर कोतवाल के लड़के को बाज़ार भेजा। उसके बाज़ार में जाते ही सिपाही उसे भी चोर समझ कर पकड़ ले गये। इसके बाद राजपुत्र ने जब बहुत देर तक बैठे बैठे देखा कि कोई नहीं आया तब वह धीरे धीरे आप ही चला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाते जाते राजपुत्र एक ब्राह्मण के घर गया। उस समय उसे बड़ी भूख लगी थी। उसने ब्राह्मण से कुछ खाने को माँगा। ब्राह्मण ने कहा—"मैं ख़ुद भीख माँगकर दिन काटता हूँ, तुमको कहाँ से खाने को दूँ ?" राजपुत्र ने कहा—"मैं तुम से मुफ़्त में खाने को नहीं माँगता। मैं तुमको रोज़ एक मोहर दूँगा, तुम मुझे रोज़ दोनों समय खाने को दिया करना।" यह सुन कर ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुआ। वह बोला—"अच्छी बात है, तुम एक आदमी कितना खाओगे।" तब से ब्राह्मण रोज़ एक मोहर पाने लगा और राजपुत्र को दोनों समय खाने को देने लगा।

राजपुत्र रोज़ संध्या को घूमने जाता। यह देख कर ब्राह्मण ने एक दिन कहा—"बाबू साहब! सब तरफ़ जाइएगा पर बाज़ार के रास्ते मत जाइएगा। अगर कभी जाइएगा तो आफ़त में फँस जाइएगा।" राजपुत्र ने पूछा—"क्यों, उस रास्ते में ऐसी क्या बात है ?" ब्राह्मण ने इसका कुछ जवाब न देकर कहा—"अगर अपना भला चाहें तो मेरी बात मान कर चलिएगा।" एक दिन जब ब्राह्मण घर पर नहीं था तब राजकुमार उसी ओर को चला जिस ओर जाने से ब्राह्मण ने मना किया था। वह आगे बढ़ता जाता था और सोचता जाता था कि ब्राह्मण ने मुझे इधर जाने से क्यों मना किया था? एक बार देखना चाहिए कि इस रास्ते में क्या है। इसने कुछ दूर जाकर देखा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि एक स्त्री घर के दरवाज़े पर ख़ूब सिँगार-पिटार करके खड़ी है। राजपुत्र को देखते ही वह स्त्री बुलाने लगी। राजपुत्र उसके पास गया। वह स्त्री मायाविनी थी। उसने बहुत लोगों पर जादू करके उन्हें चौपट कर दिया था। उसके साथ भोग-विलास करके लौटते समय राजपुत्र एक मोहर निकाल कर उसको देता आया। लौटते समय मायाविनी ने राजपुत्र को फिर आने के लिए बार बार कहा।

अब राजपुत्र रोज़ उसके यहाँ जाता और घर लौटते समय एक मोहर दे आता। ब्राह्मण को इसकी कुछ ख़बर न थी। वह भी रोज़ एक मोहर पाता था। इधर रोज़ एक मोहर पाने से उस स्त्री का लोभ बढ़ गया। एक दिन राजपुत्र के वहाँ जाते ही उस स्त्री ने उसकी जेब और टेंट टटोली तो कुछ नहीं पाया। उस दिन राजपुत्र ने जब एकान्त में मुँह बाकर मोहर निकाली तब उस स्त्री ने छिप कर देख लिया। रोज़ की तरह उस दिन भी राजपुत्र एक मोहर देकर चला गया। उस स्त्री ने सोचा कि इसके पेट में कोई विद्या जान पड़ती है। इसकी परीक्षा लेनी चाहिए।

दूसरे दिन राजपुत्र के आने पर वह स्त्री उसका बहुत आदर-मान करने लगी। उसने ख़ूब पान-तमाख़ू खिलाया पिलाया और गा-बजा कर ख़ूब रिझाया। उसके बाद एक ग्लास शरबत पीने को दिया। शरबत पीते ही राजपुत्र का सि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घूमने लगा। वह धीरे धीरे बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़ा। फिर वह कै करने लगा। कै करते करते राजपुत्र के पेट से वह अमृत फल बाहर निकल आया। वह ठगिनी तुरन्त उस फल को उठा कर निगल गई।

कुछ देर के बाद राजकुमार को होश हुआ। उसने आँखें खोल कर देखा कि वहाँ कोई नहीं है। वह बड़ी मुश्किल से उठ कर धीरे धीरे ब्राह्मण के घर लौट आया। ब्राह्मण ने रोज़ के नियमानुसार आकर मोहर माँगी। राजपुत्र घर के पिछवाड़े मुँह बाकर खाँसने लगा। पर, अब मोहर कहाँ से निकले ? तब तो राजपुत्र को चारों ओर अन्धकार दिखाई देने लगा। वह घर में आकर सिर पर हाथ धर कर बैठ गया। मन में सोचने लगा—हाय ! हाय ! किसने मेरा सर्वस्व लूटा ? अब मैं क्या करूँ ? ब्राह्मण ने कहा—"मोहर दो।" राजपुत्र ने कहा—"आज किसी तरह काम चलाओ, कल दूँगा।" ब्राह्मण ने उसकी बात नहीं मानी। मोहर न देने से उसने उस दिन उसको कुछ खाने को नहीं दिया।

तब राजपुत्र झींख झाँक कर एक सघन वन में चला गया। बहुत दूर जाकर उसने देखा कि एक साधु बाबा चारों ओर धूनी जगा कर बीच में योगासन पर बैठे हैं। राजपुत्र ने सामने जाकर प्रणाम किया। प्रणाम करते ही साधु का ध्यान भङ्ग हुआ। साधु ने आँखें खोलते ही राजपुत्र को देख कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा—"तुम कौन हो ? यहाँ क्यों आये हो ? ऐसे असमय में आकर तुमने मेरा ध्यान भङ्ग क्यों किया ?" राजपुत्र ने कहा—"मैं बड़ा अभागा हूँ, आप कृपा करके मेरा दुखड़ा सुनिए।" तब राजपुत्र आदि से अन्त तक सब अपना हाल कह गया। सुन कर साधु ने कहा—"जो होना था वह हो गया। उसके लिए अब व्यर्थ सोच मत करो। यह लो, मैं एक उड़न-खटोला तुमको देता हूँ। इस पर चढ़ कर तुम जहाँ चाहोगे चले जाओगे। और यह एक थैली लो, जब जितने रुपये की ज़रूरत हो इससे माँग लेना।" राजपुत्र वह उड़न-खटोला और थैली लेकर साधु के यहाँ से बिदा हुआ। जङ्गल से बाहर निकल कर वह उड़न-खटोले पर सवार हुआ और बोला—"चल तो रे उड़न-खटोला ! उस ब्राह्मण के घर।" उड़न-खटोला उड़ कर वहाँ पहुँच गया।

ब्राह्मण उसे देखकर विस्मित हुआ। उसने पूछा—"इतने दिन के बाद तुम कहाँ से आ गये ?" राजपुत्र ने कहा—"यह पूछ कर क्या करोगे ? यह लो अपनी मुहर और मुझे खाने को दो।" ब्राह्मण ने मोहर पाकर फिर कुछ नहीं पूछा। राजपुत्र खा-पी कर रोज़ उड़न-खटोले पर चढ़कर घूमता। एक दिन वह उड़न-खटोले पर चढ़ा हुआ उधर से जा निकला जिस ओर उस ठगिन का घर था। उसको देख कर उस स्त्री ने सोचा—"अरे ! इस आदमी में तो अभी और भी गुण हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब यह उड़न-खटोले पर घूम रहा है। उसका उड़न-खटोला हथियाना चाहिए।" यह सोच कर वह राजपुत्र को बार बार पुकारने लगी। राजपुत्र पहले तो नहीं आया, पर, जब वह स्त्री बहुत रोई गिड़गिड़ाई तब राजपुत्र उस ठगिन के घर गया। उस स्त्री ने तरह तरह की बातें बना कर कुछ देर में राजकुमार को वश में कर लिया। इसके बाद वह थाली में परोस कर बढ़िया बढ़िया चीज़ें खाने को ले आई। राजपुत्र ने खाना नहीं चाहा, परन्तु बहुत कहने सुनने से कई लड्डू खाये। लड्डू खाते ही राजपुत्र को नशा हो गया। उस ठगिन ने उसके पास बैठ कर बात ही बात में उस उड़न-खटोले और थैली का गुण पूछ लिया। राजपुत्र नशे की झोंक में सब बक गया।

राजपुत्र के जाते समय उस स्त्री ने कहा—"मैं भी तुम्हारे साथ उड़न-खटोले पर चढ़ कर घूमूँगी।" राजपुत्र ने कहा—"अच्छा आओ, दोनों आदमी चलें।" तब दोनों आदमी उड़न-खटोले पर सवार हुए। उस स्त्री ने कहा—"चल तो रे खटोला! समुद्र के ऊपर।" उड़न-खटोला तुरंत समुद्र की तरफ़ उड़ा। जब वह समुद्र के बीचों बीच पहुँचा तब उस स्त्री ने राजपुत्र से कहा—"तुम ज़रा अपनी थैली तो दिखाओ।" यह कह कर उसने राजपुत्र से थैली अपने हाथ में ले ली। इसके बाद अचानक राजपुत्र को एक धक्का देकर समुद्र में गिरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिया। राजपुत्र समुद्र में डुबकों डुबकों करने लगा और वह ठगिन मौज से उड़न-खटोले पर घर लौट गई।

राजपुत्र डूब रहा था कि उधर से पार्वती और महादेवजी आ निकले। वे कैलास पर्वत को जा रहे थे। राजपुत्र को डूबते देख कर पार्वतीजी ने कहा—"स्वामीजी! यह देखिए एक आदमी डूब रहा है। इसको जल्द बचाइए।" महादेवजी बोले—"तुम्हारे मारे तो रास्ता चलना कठिन है। उसका काल आ गया होगा, वह मर जायगा। तुमको उसकी क्या फ़िक्र है?" पार्वतीजी बोलीं—"तुम्हारा बड़ा कठिन कलेजा है। आँखों के सामने एक आदमी डूब रहा है और तुम चुप-चाप चले जा रहे हो!" तब महादेवजी ने कहा—"तुम्हारी नज़र चारों ओर रहती है। इतनी दया करने से सृष्टि नहीं चल सकती।" महादेव ने जब कुछ नहीं किया तब पार्वतीजी ने अपने सिर का एक बाल तोड़ कर राजपुत्र के ऊपर फेंक दिया। बाल राजपुत्र के गले में जा सटा। सटते ही राजपुत्र एक पक्षी बन कर उड़ गया।

राजपुत्र उड़ते उड़ते एक राजा के राज्य में पहुँचा। उस राजा की लड़की चिड़ियों को बहुत प्यार करती थी। वह अपने हाथ से चिड़ियों को खिलाती पिलाती थी। वहाँ देश देश के पक्षी आकर उसके हाथ से चारा चुगते थे। हज़ारों पक्षी आकर जमा होते। एक दिन वह पक्षीरूपी राजपुत्र एक पेड़ पर बैठा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था, इतने में उसने देखा कि सैकड़ों पक्षी एक तरफ़ को उड़े जा रहे हैं। यह देख कर पक्षी-रूपी राजपुत्र ने पूछा कि भाई! तुम लोग कहाँ जाते हो? एक पक्षी बोला—"तू कहाँ का पंछी है? क्या तू नहीं जानता कि इस देश की राजकन्या रोज़ हज़ारों पक्षियों को मेवा-मिठाई खिलाती है?" पक्षीरूपी राजपुत्र ने कहा—"नहीं, भाई! मैं विदेश से आया हूँ, मुझे कुछ मालूम नहीं है।" तब वह चिड़िया बोली—"अच्छा, तो आ, हम लोगों के साथ चल।" पक्षीरूपी राजपुत्र उनके सङ्ग हो लिया।

राजकन्या खाने की चीज़ें डालती थी और झुण्ड के झुण्ड पक्षी आकर खाते थे। इतने में पक्षीरूपी राजपुत्र वहाँ जा पहुँचा। जहाँ पक्षी चुगते थे वहाँ न जाकर पक्षीरूपी राजपुत्र छत के एक कोने में बैठ गया। राजकन्या ने पक्षियों को चारा डालते डालते इधर उधर दृष्टि फेरी तो क्या देखा कि एक नये रङ्ग का पक्षी छत के एक कोने में बैठा है। तब राजकन्या ने हाथ फैला कर कहा—"अहा! कैसा सुन्दर पक्षी है! तुम वहाँ अकेले क्यों बैठे हो? मेरी गोद में आओ, मैं तुमको आँचल से खाने को दूँगी।" पक्षी उड़ कर राजकन्या की गोद में जा बैठा। राजकन्या उसे खिलाने और उसका बदन सुहराने लगी। सुहराते सुहराते राजकन्या ने पक्षी के गले में एक बाल लिपटा देखा। उसने धीरे धीरे वह बाल निकाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिया। बाल हटाते ही पक्षी एक सुन्दर राजकुमार [illegible] बन गया। देख कर राजकन्या आश्चर्य से चुप रही। उसको लज्जा आने लगी। उसने झटपट बाल उसके गले में फिर बाँध दिया। राजपुत्र फिर पक्षी बन गया। राजकन्या उस पक्षी को प्यार करके घर ले गई। इसके बाद उसने नौकरों से राजा के पास ख़बर भेजी कि राजकन्या ने एक बड़ा ही विचित्र पक्षी पकड़ा है। यह सुन कर राजा देखने आये। राजकन्या ने पक्षी के गले से बाल निकाल लिया और पक्षी राजकुमार बन गया—देख कर राजा ने आश्चर्य से उसका हाल पूछा। राजपुत्र ने आदि से अन्त तक सब हाल कह सुनाया। राजा ने प्रसन्न होकर उसको राजमहल में रक्खा और धीरे धीरे राजपुत्र और राजकन्या में प्रेम हो गया। तब राजा ने धूम-धाम से दोनों का ब्याह कर दिया।

एक सौदागर देश देश में व्यापार करता फिरता था। वह इधर उधर घूमता हुआ सात नाव माल लिये उसी राजा की राजधानी में आ पहुँचा और उसने राजमहल के घाट पर नावों का लंगर डाला। एक दिन राजकन्या मन्दिर में आरती लेने गई। वहाँ वह सौदागर भी गया था। वह राजकन्या को देख कर पागल हो गया और 'हाय राजकन्या, हाय राजकन्या' करने लगा। वह रुपये-पैसे का लोभ दिखा कर राजमहल के नौकर-चाकरों को वश में करने की चेष्टा करने लगा। किन्तु राजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के डर से कोई सौदागर की बात पर राज़ी न हुआ। एक दिन सौदागर बैठे बैठे बन्दिश बाँध रहा था इतने में उसने देखा कि एक स्त्री उड़न-खटोले पर चढ़ी हुई आकाश से जा रही है। वह स्त्री वही ठगिन थी जिसने राजपुत्र को ठगा था। सौदागर ने उसकी ओर देखकर कहा—"तुम देवी हो कि दानवी ? तुम आदमी हो चाहे देवता, एक वार दया करके मेरे पास आओ। मैं बड़ी विपद् में पड़ कर तुमको बुला रहा हूँ।" यह सुनते ही वह ठगिन सौदागर के पास उतर आई और उसने सौदागर से पूछा—"तुम क्या चाहते हो ?" सौदागर ने कहा—"तुम में बड़ा भारी गुण दिखाई देता है। शायद तुमसे मेरा काम हो जाय।" उस स्त्री ने कहा—"रुपया देने से जो काम कहोगे वह काम मैं कर दूँगी।" सौदागर बोला—"इस देश की राज-कन्या को मेरी नाव पर ला दे सकोगी ?" ठगिन ने कहा—"यह कौन बड़ी बात है ? एक लाख रुपये देने से अभी लादूँगी।" सौदागर ने कहा—"लाख रुपये अभी ले लो।" इसके बाद वह स्त्री उड़न-खटोले पर चढ़ कर राजमहल के ऊपर चक्कर लगाने लगी; परन्तु उसने राजकन्या को नहीं देखा। एक दिन राजकन्या सखियों सहित बगीचे में घूम रही थी कि इतने में वह ठगिन उड़न-खटोले पर चढ़ी उधर से जा निकली। एक सखी ने उसे देख कर राजकुमारी से कहा—"यह देखो राजकुमारी! आकाश में क्या जा रहा है।" राजकन्या ने ज्यों ही उधर ताका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

योंही उड़न-खटोला आकर उसके पास ठहर गया। राजकन्या यह देख कर आश्चर्य करने लगी। ठगिन बोली—"तुम उड़न-खटोले पर चढ़ कर घूमोगी ? इस खटोले पर चढ़ने से तुम जहाँ चाहो वहाँ जा सकती हो।"

राजकन्या ने कहा—"मैं कहीं नहीं जाना चाहती।" ठगिन ने कहा—"कहीं जाना मत, चारों ओर घूम कर और देश देश के तमाशे देख कर फिर लौट आना।" राजकन्या ने पूछा—"संध्या तक लौट आ सकूँगी ?" ठगिन ने कहा—"क्यों नहीं ? संध्या से बहुत पहले लौट आ सकोगी। ज़रा चढ़ कर मज़ा तो देखो। आओ, झटपट खटोले पर चढ़ जाओ और मुझे पकड़े रहना।"

तब राजकन्या उस खटोले पर सवार हुई। वह ठगिन बोली—"चल तो रे उड़न-खटोला ! उस सौदागर की नाव पर।" खटोला आकाश में उड़ चला ! तब राजकन्या अपनी विपद् समझ गई। इधर सखियाँ हाय हाय करने लगीं। तब राजमहल में हलचल मच गई। जाने के समय राजकन्या चिल्ला कर सखियों से कहती गई—"अपने मेहमान से कह देना कि तकिये के नीचे एक डिबिया में बाल है।" और कुछ नहीं सुन पड़ा। आँख की पलक गिरते गिरते उड़न-खटोला सौदागर की नाव पर पहुँच गया। सौदागर बड़ा खुश हुआ। ठगिन लाख रुपये लेकर तुरंत खटोले पर सवार हो चली गई और राजकन्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सौदागर की नाव पर रोक ली गई। वह किसी बात का जवाब न देकर चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी। सौदागर ने कहा—"राजकन्या! रोओ मत। मेरे यहाँ धन-दौलत की कमी नहीं है। आज से मैं तुम्हारा ग़ुलाम बन कर रहूँगा। मैं तुम्हारे रूप पर मोहित हूँ। तुम सब बातें भूल जाओ और आज से मुझे ही पति जानो।" यह सुन कर राजकन्या के सिर पर मानो वज्र आ पड़ा। वह मन ही मन सोचने लगी कि कैसे इस विपत्ति से उद्धार पाऊँ। तब वह बेचारी क्या करती, ध्यान धर कर भगवान् को पुकारने लगी। सौदागर जब व्याह के लिए बार बार तङ्ग करने लगा; तब राजकन्या ने और कोई उपाय न देख कर कहा—"देखो सौदागर! मैं एक व्रत कर रही हूँ। उस व्रत के पूरा होने में एक महीने की और देर है। मुझे एक महीने का समय दो। उसके बाद मैं तुम्हारी बात का जवाब दूँगी।" सौदागर ने सोचा—अच्छा एक महीना कौन बड़ी बात है? अब यह मेरे हाथ से निकल कर कहाँ जायगी? एक महीना बात की बात में बीत जायगा। सौदागर ने कहा—"अच्छा, यही सही।" सौदागर राजकन्या को लेकर देश लौट गया।

घर आकर सौदागर ने राजकन्या को एक मकान में रख दिया। राजकन्या वहाँ जाकर पहले की तरह फिर पक्षियों को चारा देने लगी। देश देश के पक्षी आ आकर राजकन्या का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाला हुआ चारा चुगने लगे। इधर राजपुत्र राजकन्या का हाल सुन कर हाय हाय करने लगा। वह समझ गया कि वह ठगिन ही मेरे पीछे पड़ी हुई है, वही मेरा सर्वनाश कर रही है। वह अपने कर्म की बात सोचकर बड़ा दुखी हुआ। इसके बाद उसने डिबिया से बाल निकाल कर अपने गले में लपेटा और वह पक्षी होकर उड़ गया। ढूँढ़ते ढूँढ़ते बहुत दिनों के बाद उसने उस सौदागर के मकान का पता पाया। वह दूसरी चिड़ियों के साथ वहाँ गया जहाँ राजकन्या चारा डालती थी। जब राजकन्या चारा डालने आई तब पक्षीरूपी राजपुत्र जाकर उसकी गोद में बैठ गया। राजकन्या पहचान गई। उसने धीरे धीरे बाल हटा लिया। तब राजपुत्र अपने असली वेष में आ गया। दोनों आदमियों ने मिल कर सलाह की कि इस देश के राजा के पास जाकर सौदागर के नाम आदमी चुरा ले आने की नालिश की जाय। इन्साफ़ से अवश्य राजकुमार की जीत होगी और वह राजकन्या को पावेगा।

दूसरे दिन राजपुत्र ने उस देश के राजा के पास जाकर फ़रयाद की—"महाराज! अमुक सौदागर मेरी स्त्री को चुरा लाया है। इसका इन्साफ़ किया जाय।" राजा ने पूछा—"तुम्हारा कोई गवाह है?" राजपुत्र ने कहा—"मेरा और कोई गवाह नहीं है। परन्तु मैं उस स्त्री का पति हूँ इसका यह सबूत है कि उसके छूते ही मैं पक्षी हो जाऊँगा। और वह जब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहेगी तब मुझे आदमी बना देगी।" यह सुन कर राजा आश्चर्य में आ गये। उन्होंने सौदागर को पकड़ लाने का हुक्म दिया। राजकन्या को भी लाने के लिए पालकी भेजी। इसके बाद कोतवाल ने सौदागर और राजकन्या को लेकर दरबार में हाज़िर किया। राजा ने सौदागर से कहा—"तुम्हारे नाम पर जो नालिश हुई है उसका तुम क्या जवाब देते हो?" सौदागर कुछ कहना ही चाहता था कि इतने में राजकन्या बोली—"महाराज! सौदागर चोर है, वह क्या बोलेगा? मैं अपने पति को अभी चिड़िया बना कर दिखा दे सकती हूँ।" राजसभा के सब लोगों ने कहा—"महाराज! यही बात ठीक है। अगर यह स्त्री इस युवक को पक्षी बना दे तो इसी की बात सच माननी चाहिए। सौदागर से पूछने का क्या काम है? देखना चाहिए कि यह कैसे चिड़िया बनाती है।" राजा ने चिड़िया बनाने का हुक्म दिया। राजकन्या ने राजपुत्र के गले में वह बाल लपेट दिया। राजपुत्र तुरंत पक्षी हो गया। सब लोग देख कर दङ्ग रह गये। तब राजा ने कहा—"क्यों सौदागर! अब तुम्हें क्या कहना है?" सौदागर सब देख सुन कर हक्का-बक्का हो गया। उसके मुँह से कोई बात नहीं निकली। तब राजा ने सौदागर को सूली पर चढ़ाने का हुक्म दिया।

इसके बाद राजा ने राजकन्या से कहा—"हाँ यह पुरुष तुम्हारा पति ही है, अब तुम इसको आदमी बना दो।" राज-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कन्या ने—पक्षी के गले से बाल निकाल लिया। राजपुत्र फिर अपने असली रूप में आ गया। तब राजा ने उन लोगों का हाल-चाल पूछा। राजपुत्र आदि से सब कहने लगा। वज़ीर के लड़के को मोहर देकर बाज़ार भेजने तक की बात सुनते ही राजा ने सिंहासन से उठ कर राजपुत्र को गले लगाया और कहा—"मैं ही वह वज़ीर का लड़का हूँ। अब मैं पहचान गया कि तुम्हीं राजपुत्र हो।" इसके बाद सब लोग चुप हो गये। जो जो घटनायें हुईं थीं राजकुमार ने सब कह सुनाईं। सुनकर उस राजा ने कहा—"तुम राजकुमार थे, कर्म के दोष से तुमने न जाने कितना कष्ट पाया। ख़ैर अब हम लोगों का मिलन होगया, यही अच्छा है।" राजा ने बड़े आदर-मान से राजपुत्र और राजकन्या को रक्खा।

कुछ दिनों के बाद उस राजा ने लाव-लशकर सहित राजपुत्र और राजकन्या को देश भेज दिया। उन्होंने जाते जाते रास्ते में एक पेड़ के नीचे दो आदमियों को बैठे देखा। उनका शरीर इतना दुर्बल था कि देखने से जान पड़ता था कि उन्हें बहुत दिनों से भर-पेट खाने को नहीं मिला। वे लाव-लशकर देख कर समझ गये कि कोई राजा जा रहा है। उन्होंने लोगों से राजा का नाम-धाम पूछा। नाम सुनते ही वे राजा को पहचान गये। तब उन्होंने राजा के पास जाकर कहा—"महाराज! आप हम लोगों को पहचानते हैं?" राजपुत्र ने बहुत देर तक उनके मुँह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की ओर देख कर कहा—"नहीं, मैं नहीं पहचानता। तुम्हीं बताओ तुम लोग कौन हो?" तब उन्होंने कहा कि हम वे ही क़ाज़ी और कोतवाल के लड़के हैं।" राजपुत्र को उनके कर्म की बात याद कर बड़ा अफ़सोस हुआ। बहुत दिनों के बाद सब से मिलन हुआ देख कर राजपुत्र के आनन्द की सीमा न रही। वह क़ाज़ी और कोतवाल के लड़कों को संग लेकर अपने राज्य को लौट गया। सब लोग सुख से रहने लगे। जैसे उनका दिन लौटा वैसे सात घर मुद्दई का भी लौटे।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोने की चम्पा

एक राजा का लड़का और एक मन्त्री का लड़का था। दोनों में बड़ा प्रेम था। एक दिन दोनों मित्रों ने मिल कर सलाह की कि विदेश घूमने चलें। उन्होंने सोचा कि राजा सुनेंगे तो जाने नहीं देंगे, इससे एक रात को वे लोग चुपके चुपके घर से निकल पड़े। साथ में कोई आदमी या कोई चीज़ उन्होंने नहीं ली। दोनों आदमी बहुत दूर निकल गये। इसके बाद उन्होंने जाते जाते एक नदी के किनारे बड़ का एक बहुत बड़ा पेड़ देखा। पास जाकर देखा कि किसी आदमी ने वहाँ तरह तरह के फल खाये हैं। पेड़ के नीचे उसका चिह्न पड़ा हुआ है। किन्तु बहुत दूर तक कहीं कोई आदमी नहीं दीख पड़ा। तब उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। दोनों मित्रों ने सोचा कि इस मामले का पता लगाना चाहिए। वहाँ दिन भर रहने पर भी उन्होंने किसी आदमी की आहट नहीं पाई। सन्ध्या होते देख कर वे उसी पेड़ पर चढ़ गये। एक तो बियाबान जङ्गल था, दूसरे घोर अन्धकार, आस पास किसी आदमी का पता नहीं। वे दोनों बहुत डरे। कुछ देर बाद अचानक सनसनाहट हुई। डर के मारे उनकी छाती धड़कने लगी। कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देर बाद उन्होंने देखा कि एक बहुत बड़ा दैत्य बहुत सा खाने का सामान लेकर वहाँ आ पहुँचा। वह खाने का सामान वहाँ रख कर नदी की तरफ़ गया। दोनों मित्र डर के मारे ठिठक कर तमाशा देखने लगे। दैत्य ने नदी में जाकर एक ग़ोता लगाया और भीतर से एक बड़ा भारी सन्दूक़ निकाल कर वह बाहर लाया। वह सन्दूक़ सिर पर लिये उस पेड़ के नीचे आया और उसने उसे नीचे उतारा। उस सन्दूक़ का ढकना खोलते ही एक बड़ी ख़ूबसूरत स्त्री उसमें से निकल आई। देख कर दोनों मित्र भौंचक से रह गये। उस स्त्री के रूप का क्या बखान करें। स्त्री क्या, परी थी। देख कर दोनों दोस्त लट्टू हो गये। दैत्य ने उस स्त्री को वह सब खाने का सामान दिया। इसके बाद हँस बोल कर वह दैत्य उस स्त्री की जाँघ पर सिर रख कर सो गया।

स्त्री ने इधर उधर ताकते हुए ऊपर की ओर देखा कि पेड़ पर दो आदमी बैठे हैं। तब उसकी इच्छा उनसे बातचीत करने की हुई। परन्तु ज़रा भी शब्द होने से दैत्य जाग उठता। इससे वह चुपचाप बैठी रही। इधर राजपुत्र और मन्त्रिपुत्र भी स्त्री का हाल-चाल जानना चाहते थे। परन्तु वे भी दैत्य के डर से प्राण हथेली पर रख कर पेड़ के ऊपर बैठे रहे।

रात भर यों ही रहने के बाद सबेरा होने से कुछ पहले ही दैत्य उठ बैठा। इसके बाद स्त्री को उस सन्दूक़ में बिठा कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और ताला बन्द करके फिर नदी में जहाँ का तहाँ रख आया और आप सन्न से निकल गया।

सबेरा होते ही दोनों मित्र पेड़ से नीचे उतरे। इसके बाद उन्होंने वन से कन्दमूल लाकर खाये। कुछ देर बाद मन्त्रिपुत्र ने कहा—"चलो अब यहाँ से चलें।" राजपुत्र ने कहा—"नहीं भाई! मैं कहीं नहीं जाऊँगा। मैं उस स्त्री से व्याह किये बिना यहाँ से किसी तरह नहीं टलूँगा।" मन्त्रिपुत्र ने कहा—"तुम पागल हो गये हो क्या? तुम उस स्त्री के साथ कैसे व्याह करोगे? देखा नहीं, उसको दैत्य किस तरह बन्द करके रख गया है?" राजपुत्र ने कहा—"चाहे जो कहो और चाहे जो हो, मैं उसको पाये बिना यहाँ से कभी नहीं हटूँगा। जब तक उसको नहीं पाऊँगा तब तक यहीं रहूँगा।" मन्त्री का लड़का भी चाहता था कि मैं उस स्त्री से व्याह करूँ। पर यह बात कैसे कहे। उसने राजपुत्र को बहुत समझाया बुझाया। जब उसने देखा कि राजपुत्र किसी तरह नहीं मानता तब वह क्रोध से राजपुत्र को वहीं छोड़ कर चला गया।

राजपुत्र दिन भर पेड़ के नीचे बैठा रहा। किसी आदमी से भेंट-मुलाक़ात नहीं हुई। सन्ध्या होते ही वह फिर चुपचाप पेड़ पर जा बैठा। रात होते ही दैत्य आ पहुँचा। वह पेड़ के नीचे खाने की चीज़ें रख कर नदी से सन्दूक़ निकाल लाया। फिर वह स्त्री बाहर निकली। उस दिन भी उस स्त्री ने देखा कि पेड़ पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक आदमी बैठा है। खा-पी लेने पर दैत्य के सोने का समय होने पर वह स्त्री बोली—"तुम ऐसे सोते हो कि मुझे किसी दिन शेर भालू उठा ले जायगा। चलो हम दोनों सन्दूक़ के भीतर ही सोवें।" दैत्य ने कहा—"बहुत अच्छा।" तब दोनों सन्दूक़ के भीतर सोने गये। इसके बाद स्त्री ने जब देखा कि दैत्य बेख़बर सो गया है तब वह धीरे धीरे सन्दूक़ से बाहर निकली और उसने पेड़ के नीचे जाकर राजपुत्र को नीचे उतर आने का इशारा किया। राजपुत्र ख़ुशी के मारे फूल कर कुप्पा हो गया। वह तुरन्त नीचे उतर आया। तब स्त्री ने उसको ज़रा दूर ले जाकर पूछा—"तुम कौन हो ? और यहाँ कैसे आये ?" राजपुत्र ने कहा—"मैं अमुक देश का राजकुमार हूँ। देश घूमने निकला हूँ। यहाँ आकर कल मैंने जब से तुम्हारा रूप देखा है तब से मैं पागल हो गया हूँ। तुम कौन हो, मुझे बताओ।" कन्या ने कहा—"मेरा हाल जान कर तुम क्या करोगे ? हाँ इतना बता सकती हूँ कि मैं एक राजा की लड़की हूँ।" राजपुत्र ने कहा—"मैं तुम से ब्याह करूँगा।" स्त्री बोली—"तुम क्या दैत्य के हाथ से मेरा उद्धार कर सकोगे कि मुझ से ब्याह करोगे ?" राजपुत्र ने कहा—"कैसे तुम्हारा उद्धार होगा, मुझे बताओ। मैं ज़रूर तुम्हारा उद्धार करूँगा।" कन्या बोली—"वह काम बड़ा कठिन है। जो आदमी दिन भर निराहार रह कर रोज़ रात को काली-पूजा करता हो और हर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोज़ एक नरबलि देता हो उस आदमी को अगर ढूँढ़ निकालो तो मेरा उद्धार हो सकता है।" राजपुत्र ने कहा—"यही होगा। अच्छा तो अब आओ हम तुम आपस में अँगूठी बदलौअल कर लें।" दोनों ने एक दूसरे की अँगूठी पहन ली।

दूसरे दिन सबेरा होते ही राजपुत्र पेड़ से उतर उस स्त्री के कहने के अनुसार वैसा आदमी ढूँढ़ने की बात सोचता हुआ चला। जाते जाते उसने एक दिन एक जङ्गल में एक कुटी देखी। कुटी के पास जाकर देखा कि वहाँ एक साधु ध्यान लगाये बैठे हैं। राजपुत्र के वहाँ जाकर साधु को प्रणाम करते ही उनका ध्यान भङ्ग हो गया। साधु ने राजपुत्र से पूछा—"तुम कौन हो? यहाँ क्या करने आये हो?" राजपुत्र ने अपना परिचय देकर कहा—"मैं एक ऐसा आदमी ढूँढ़ता हूँ जो रोज़ दिन को बिना कुछ खाये पिये रहता हो और रात को कालीजी की पूजा करके एक नरबलि देता हो। आप अगर कृपा करके ऐसे आदमी का पता बतावें तो मैं आपका सदा गुलाम बना रहूँगा।" सुन कर साधु ने कुछ देर चुपचाप ध्यान लगाया और फिर आँखें खोल कर कहा—"अच्छा, तुम यहाँ रहो, तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी।" राजपुत्र वहाँ ठहर गया। दूसरे दिन सबेरे राजपुत्र ने साधु से पूछा—"स्वामीजी! मेरी उस बात का क्या हुआ?" साधु ने कहा—"तुम एक काम करो। सीधे उत्तर ओर चले जाओ। जाते जाते पहले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो चीज़ देखना उसका हाल मुझ से आकर कहना।" राजपुत्र ने ऐसा ही किया।

कुछ दूर जाकर राजपुत्र ने देखा कि एक नदी के बीच में एक खूँटा गड़ा है और उस में गले तक कटी हुई एक देह बँधी है। उस गले से बूँद बूँद करके लहू टपकता है और हर बूँद से एक सोने का चमेली-फूल बन कर धारा में बह जाता है। राजपुत्र यह देख कर लौट आया और उसने जो देखा वह साधु से कह सुनाया। सुन कर साधु ने कहा—"अच्छा! कल दक्षिण ओर जाना। उधर पहले जिस चीज़ पर नज़र पड़े उसका हाल मुझ से बताना। परसों पूर्व ओर जाना और उधर की पहली चीज़ देख कर भी मुझ से आकर कहना। किन्तु सावधान! कभी पश्चिम ओर मत जाना, नहीं तो बड़ी विपद् में फँस जाओगे।" साधु की आज्ञानुसार राजपुत्र दूसरे दिन दक्षिण ओर गया। उसने कुछ दूर जाकर देखा कि एक युवक संन्यासी बैठे हैं। यह देख कर राजपुत्र लौट आया और उसने साधु से कहा। साधु ने कहा—"अच्छा।" तीसरे दिन राजपुत्र पूर्व ओर गया। कुछ दूर जाकर क्या देखता है कि एक नदी के किनारे कालीजी का मन्दिर है। उसमें एक स्त्री बैठी पूजा कर रही है। राजपुत्र ने आकर साधु से कहा। उस दिन भी साधु ने कहा—"अच्छा।" इसके दूसरे दिन साधु ने राजपुत्र से कहा—"तुम यहीं रहो। मैं उस दूर के जङ्गल से, जाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खाने के लिए कन्द-मूल ले आऊँ।" साधु वन को चले गये।

कुछ देर बाद राजपुत्र बैठे बैठे सोचने लगा—"साधु बाबा ने मुझे तीन ओर जाने को कहा मगर पश्चिम ओर जाने से क्यों मना किया? मैं जिसका पता लगाने आया हूँ उसका तो इन तीन दिशाओं में कुछ पता नहीं मिला। पश्चिम ओर ऐसी क्या बात है? साधु बाबा के लौटने में अभी देर है। तब तक हे मन! चलो पश्चिम ओर भी देख आओ कि क्या है। साधु जी के आने से पहले ही मैं लौट आऊँगा तब उनको मेरे जाने की ख़बर भी न होगी।" यह सोच-विचार कर राजपुत्र पश्चिम ओर को चला। उसने कुछ ही दूर जाकर देखा कि जंगल में एक बहुत बड़ा मकान है। वह उसके भीतर चला गया। जाकर क्या देखता है कि वहाँ एक काली जी की मूर्त्ति के सामने एक ब्राह्मण पूजा की सामग्री लिये बैठा है। और कोई वहाँ नहीं है। सिर्फ़ सामने एक तिकठी खड़ी है। ब्राह्मण ने राजपुत्र को देख कर आदर से बिठाया और पूछा—"तुम कहाँ से आये हो?" राजपुत्र ने साधु की बात कही। ब्राह्मण ने कहा—"अच्छा! तुम मेरे पास रहो तो जिसको ढूँढ़ने निकले हो उसे पाजाओगे।" यह सुन कर राजपुत्र ने सोचा कि जिसको मैं ढूँढ़ता फिरता हूँ उसके यहाँ मिलने का लक्षण जान पड़ता है। नहीं तो इस ब्राह्मण ने मेरे मन की बात कैसे कह दी। मालूम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होता है कि वह साधु मुझे झूठमूठ ही इधर उधर दौड़ाया करता था। यह सोच कर राजपुत्र ब्राह्मण के कहने से वहीं रहने को राज़ी हो गया। जब आधी रात हुई तब डाकुओं का एक दल लाठी और मशाल लिये हल्ला मचाते उस मकान में आ घुसा। देखते ही डर के मारे राजपुत्र का आधा प्राण निकल गया। डाकुओं को आते देखकर ब्राह्मण ने राजपुत्र को एक तरफ़ छिपा दिया। डाकू लोग कालीजी के सामने आकर चुपचाप बैठ गये। यह देख कर ब्राह्मण ने कहा—"आज तुम लोग इस तरह क्यों बैठे हो?" डाकुओं ने कहा—"हम लोगों का भाग्य बड़ा ख़राब है। जान पड़ता है कि आज काली माता ने हम लोगों पर कोप किया है। हज़ार ढूँढ़ने पर भी आज हम लोग बलि देने के लिए एक आदमी नहीं पा सके।" ब्राह्मण ने कहा—"इसकी चिन्ता तुम लोग मत करो। माँ ने अपना आहार आप जुटा लिया है।" इसमें ब्राह्मण ने जो इशारा किया उसको राजकुमार समझ गया। डर के मारे उसका प्राण सूख गया। वह मन ही मन कहने लगा—"हाय! हाय! मैंने साधु का कहना न मान कर बड़ा ही कुकर्म किया है। काली महारानी, अब तुम्हारे सिवा और कोई मेरी रक्षा नहीं कर सकता।" राजपुत्र समझ गया कि यह डाकुओं का मन्दिर है।

इधर साधु ने कुटी में लौट कर देखा कि राजपुत्र नहीं है। उन्होंने सोचा कि वह कहीं गया होगा। पर जब सन्ध्या हो गई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और वह नहीं लौटा, तब साधु ने सोचा कि सब चौपट हुआ। हो न हो वह पश्चिम ओर गया है। नहीं जानता आज उसको बचा सकूँगा कि नहीं। जो हो एक बार चेष्टा करनी चाहिए। यह सोच कर साधु बाबा झटपट उस काली-मन्दिर की ओर चले। वहाँ जाकर देखा कि सदर दरवाज़ा बन्द है। उन्होंने खिड़की से झाँक कर देखा कि राजपुत्र तिकठी के सामने लाकर खड़ा किया गया है। मगर पूजा समाप्त होने में अभी विलम्ब है। तब साधु बाबा एक साँस उत्तर दिशा में दौड़े गये। उधर नदी में जो धड़ खूँटे में लटका हुआ था उसको कंधे पर उठा कर दीवार के ऊपर से ठीक तिकठी के सामने धड़ाम से फेंक दिया। फेंकने के साथ ही वह धड़ एक बैल हो गया। अचानक शब्द सुन कर डाकू चौंक पड़े। इसके बाद उन्होंने देखा कि तिकठी के सामने एक बैल पड़ा है जिसका गला कटा हुआ है। देख कर सब लोग भौचक से रह गये। उनके जी में बड़ा डर समाया। इसके बाद वे यह देखने को सदर दरवाज़ा खोल कर बाहर आये कि किसने उस बैल को फेंका। दरवाज़ा खुलते ही साधु ने भीतर दौड़ कर राजपुत्र का हाथ पकड़ लिया। उनको देखते ही ब्राह्मण ने प्रणाम करके कहा—"गुरुजी! असमय यहाँ क्यों आना हुआ?" साधु ने आँखें लाल करके कहा—"अरे नीच ब्राह्मण! तेरी यह करतूत! बलि देने के लिए तुझे और कोई आदमी नहीं मिला। अच्छा, देखें कैसे तू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसको बलि देता है ?" ठीक इसी समय डाकू बाहर किसी को न पाकर भीतर आये तो उन्होंने देखा कि पुरोहितजी हाथ जोड़े खड़े हैं और एक साधु बलि देने के लिए रक्खे हुए आदमी का हाथ पकड़ कर पुरोहित बाबा को धमका रहा है। यह देखकर डाकू भड़क उठे। वे बोले—"महाराज ! कालीजी हम लोगों को छोड़ कर चली गईं।" इस पर साधु ने कहा—"तुम लोगों की काली माँ हैं कहाँ ? अब तो ख़ाली मूर्त्ति पड़ी है। तुम लोग मेरे साथ चलो और डाका डालना छोड़ दो। यह ब्राह्मण ही तुम लोगों के सत्यानाश का कारण है।" तब ब्राह्मण साधु के पैरों में गिर कर बोला—"स्वामी जी ! पूजा पूरी हो गई है। आज बलि न होने से हम लोगों का बड़ा अमङ्गल होगा। आपकी दुहाई है। आप राजपुत्र को ले जाइए परन्तु एक बलि का बन्दोवस्त कर दीजिए।" अच्छा जा पाषण्डी ! ऐसा ही होगा। तुम लोग अब मेरे साथ चलो। इसके बाद उन्होंने राजपुत्र से कहा—"तुम इस बैल को कंधे पर चढ़ा कर ले चलो। राजपुत्र ने ऐसा ही किया। बैल को कन्धे पर लेते ही वह फिर आदमी का धड़ हो गया। साधु ने कुटी में आने के बाद कमण्डलु से जल लेकर मन्त्र पढ़ा। उस जल के छिड़कते ही उस धड़ में सिर आ जुटा। उन्होंने उसे डाकुओं के हवाले करके कहा—"इसको ले जाकर बलि दो।" डाकू काली के स्थान को लौट गये। ब्राह्मण ने बलि के लिए सब तैयारी की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बलि देने के समय ब्राह्मण सबसे कहता—"तुम्हारी अभी बलि दी जायगी, अब तुम किसी तरह यहाँ से भाग कर बच नहीं सकते। तुम चाहो या न चाहो तुम्हारा सिर अभी काटा जायगा। इसीसे कहता हूँ कि अपनी मरज़ी से प्राण दो तब तुम्हारी आत्मा को मुक्ति होगी। नहीं तो तुम नरक में पड़ोगे।" इस बार जब बे-सिर के धड़ में जान डाल कर साधु ने ब्राह्मण के पास बलि के लिए भेज दिया तब ब्राह्मण ने उससे भी यही बात कही। इस पर उस आदमी ने कहा—"मुझे अपनी ख़ुशी से प्राण देने में कुछ उज्र नहीं है। पर, मैं एक बात जानना चाहता हूँ। उसके जान लेने पर मुझे किसी बात का सोच नहीं रहेगा।" ब्राह्मण ने पूछा—"तुम क्या जानना चाहते हो?" उस आदमी ने कहा—"मेरा शरीर बे-सिर का होकर खूँटे में क्यों बँधा रहता है और मेरे गले से बूँद बूँद लहू टपक कर चमेली का फूल क्यों बन जाता है? और वे सब फूल कहाँ जाते हैं?" इस पर ब्राह्मण ने डाकुओं से कहा—"इसको अभी बलि नहीं दे सकते। इस आदमी ने जो प्रश्न किया है उसका उत्तर जानने के लिए इसको उस साधु के पास ले जाओ।" डाकुओं ने ऐसा ही किया।

डाकुओं की बात सुन कर साधु ने कहा—"मैं जैसा कहता हूँ वैसा तुम लोग करो। इस राजपुत्र को साथ लेकर तुम लोग जाओ। राजपुत्र जो कहे तुम लोग वही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करना। अगर नहीं करोगे तो तुम लोग संकट में पड़ोगे।" इसके बाद साधु बाबा सबको लेकर उत्तर ओर वहाँ गये जहाँ नदी में खूँटा गड़ा था। वहाँ उन्होंने उस सिर-कटे आदमी को नदी के किनारे सुला कर उसके गले पर कई बूँद जल छिड़का। जल छिड़कते ही उसके सिर से धड़ पहले की तरह अलग हो गया। उस धड़ को खूँटे में बाँधते ही बूँद बूँद करके लहू टपकने लगा और उन बूँदों से चमेली के फूल बन कर बहने लगे। तब साधु ने राजपुत्र से कहा—"तुम डाकुओं को साथ लेकर ये फूल जिधर जा रहे हैं उधर ही जाओ। जहाँ देखना कि फूल आगे नहीं गये हैं वहाँ ठहर जाना। वहाँ जाते ही सब भेद खुल जायगा।" इसके बाद उन्होंने राजपुत्र के हाथ में एक लाठी देकर कहा—"तुम्हारे पास यह लाठी रहेगी तो तुम पर कोई विपत्ति न आवेगी। कोई विपत्ति पड़ने पर इस लाठी से जो कहोगे वही यह करेगी।"

राजपुत्र उधर को जाने लगा जिधर को फूल बहे जाते थे। कुछ दिन रास्ता चलने के बाद एक जगह देखा कि एक बड़ी सुन्दर कन्या नदी के घाट पर बैठी है। फूल आ आ कर उसी के पास रुकते हैं। कन्या ने उन फूलों को उठा उठा कर रक्खा है। राजपुत्र ने दूर से यह तमाशा देखा। कन्या दिन भर फूल चुनती रही। सन्ध्या होते ही फूलों का आना भी बन्द हो गया और कन्या भी वहाँ से उठ कर अपने आँचल में सात फूल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाँध कर पास के जङ्गल की ओर चली। कन्या को देख कर राजपुत्र के मन में बड़ा सन्देह हुआ। क्योंकि वह कन्या देखने में उस सन्दूक़ वाली कन्या से बहुत कुछ मिलती-जुलती सी जान पड़ी, परन्तु उम्र में छोटी लगी। डाकुओं को पीछे पीछे आने का इशारा करके राजपुत्र उस कन्या के पीछे पीछे चला।

कुछ दूर जाकर देखा कि वन के भीतर एक छोटा सा मन्दिर है। कन्या उस मन्दिर का दरवाज़ा खोल कर भीतर गई। इसके बाद उसने दिया जलाया। राजपुत्र ने देखा कि मन्दिर कालीजी का है। वह धीरे धीरे जाकर मन्दिर के सामने खड़ा हुआ। उसको देख कर कन्या ने पूछा—"तुम कौन हो? क्या चाहते हो?" राजपुत्र ने कहा—"मैं कौन हूँ यह तो पीछे बताऊँगा। पहले मैं जो पूछता हूँ उसका जवाब ख़ुशी से दो। ये फूल कहाँ से क्यों आते हैं और इनको लेकर तुम क्या करती हो? इसका जवाब मुझे दो।" तब कन्या बोली—"तुम यहाँ से जल्द भागो। यह डाकुओं का मन्दिर है। यहाँ रहने से तुम विपत्ति में पड़ोगे।" यह सुन राजपुत्र ने मन ही मन सोचा—डाकुओं का मन्दिर है तो क्या हुआ? मेरे साथ भी तो पचास डाकू हैं और जब तक मेरे पास यह लाठी है तब तक मुझे कोई नहीं मार सकेगा। यह सोच कर उसने कहा—"जब तक तुम इस फूल का भेद नहीं बताओगी तब तक मैं यहाँ से किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरह नहीं टलूँगा।" कन्या बोली—"क्यों आफ़त बुलाते हो?" इतना कहते ही कहते चारों ओर से हल्ला मचाते हुए डाकुओं का दल आ पहुँचा। बात की बात में डाकुओं से राजपुत्र का झगड़ा हो गया। तब सब डाकू उसको मारने दौड़े। राजपुत्र अकेला लाठी घुमाने लगा और सीटी बजा कर अपने साथ के डाकुओं को बुलाने लगा। दोनों दल भिड़ गये। अन्त में राजपुत्र की जीत हुई। मार खाकर वहाँ से डाकुओं का दल न जाने कहाँ भाग गया। तब राजपुत्र ने मन्दिर में जाकर उस कन्या से कहा—"अब तुम को बताना ही पड़ेगा।" वह लड़की बोली—"अगर तुम्हें जानने की इतनी बड़ी इच्छा है तो मुझे यह बताओ कि जान कर तुम क्या करोगे?" राजपुत्र ने सब हाल आदि से अन्त तक कह सुनाया। सुन कर लड़की बोली—"यह बात बताने की मुझ में शक्ति नहीं है। तुम जहाँ कालीजी का मन्दिर देख आये हो वहाँ मुझे ले चलो। और एक काम करो। यहाँ जितने फूल हैं उन सब को भी उठा लो। मन्दिर में जो मूर्त्ति है उसको उस घाट पर ले जाकर बहवा दो जहाँ फूल आकर रुकते हैं। पर याद रहे फूल बहाते समय दस क़दम पीछे हट जाना। फिर लौट आना। उलट कर पीछे की ओर कभी मत देखना।" सुन कर राजपुत्र ने कहा—"बहुत अच्छा। तुमने जैसा बताया वैसा मैं अभी करता हूँ।" तब उसने डाकुओं को सब फूल उठा लेने को कहा और आप मूर्त्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वहाने गया। इसके बाद सब लोग एक साथ नदी के किनारे किनारे वहाँ आये जहाँ सिर-कटा धड़ था।

साधु बाबा ध्यान लगाये बैठे थे। ठीक उसी समय उनका ध्यान टूट गया। वह सब हाल समझ कर नदी के किनारे गये। साधु को देखते ही राजपुत्र ने कहा—"स्वामीजी! बताइए, अब क्या करना होगा।" तब साधुजी ने धड़ को बाहर लाकर उस पर एक कमण्डलु से जल छिड़का। जल छिड़कते ही धड़ में फिर सिर लग गया। तब कालीजी के मन्दिर से उस ब्राह्मण को बुला कर सब लोग पूर्व ओर के काली-मन्दिर में गये। वहाँ जाकर वह लड़की एक एक करके फूल पानी में फेंकने लगी। पानी के नीचे से सन सन का शब्द होने लगा। ज्योंही सब फूल पूरे हो गये त्योंही वह सन्दूक़ ऊपर निकल कर उतरा गया। साधु ने उस सिर-कटे आदमी से सन्दूक़ उठा लाने को कहा। वह आदमी ज्योंही सन्दूक़ उठा लाया त्योंही वह दैत्य सनसनाता हुआ आँधी की तरह वहाँ आ पहुँचा। दोनों में लड़ाई छिड़ गई। तब साधु ने ब्राह्मण से कहा—"अब तुम्हारे बलि देने का समय हुआ है।" साधु के यह कहते ही मन्दिर के भीतर जो स्त्री थी उसने झटपट तलवार लाकर ब्राह्मण के हाथ में दे दी। तब ब्राह्मण ने दैत्य के सिर पर तलवार चलाई। दैत्य का सिर धड़ से उतर कर अलग नाचने लगा और सन्दूक़ का ढकना भी खुल गया। तब वह स्त्री सन्दूक़ से निकल कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस लड़की के गले से लिपट गई जो चमेली का फूल बटोरा करती थी। दैत्य के दो टुकड़े करते समय उसके लहू का छींटा उस बे-धड़ के आदमी के वदन पर लगा जिससे वह चमेली का पेड़ बन गया और उसकी डाली में एक फूल खिल गया।

राजपुत्र यह सब देख कर भौचक सा रह गया। दोनों लड़कियों ने आकर साधु की चरण-रज सिर पर चढ़ाई। राजपुत्र ने जिस स्त्री से अपनी अँगूठी बदली थी उसका और राजपुत्र का गठ-बन्धन साधु ने कर दिया। इसके बाद जो लड़की फूल बटोरती थी उससे कहा—"तुम एक काम करो। उस चमेली के पेड़ से फूल तोड़ कर अपने आँचल में बाँधो और फिर सीधी दक्षिण दिशा को जाओ। वहाँ पहले जिसको देखना उसके हाथ में यह फूल देना। फूल देकर ही तुम लौट पड़ना, कुछ कितना ही पुकारे तुम पीछे को मत ताकना। सीधे आकर इस पेड़ के नीचे बैठ जाना। वह अगर आकर तुमसे व्याह करना चाहे तो तुम कहना कि जिस डाल से फूल तोड़ा गया है उसी डाल में अगर फूल को फिर से जुटा दो तो मैं तुमसे व्याह करूँगी।" लड़की फूल आँचल में बाँध कर सीधी दक्षिण को चली। कुछ दूर जाने पर उसने उसी युवक साधु को देखा। उसने सोचा कि साधु के साथ व्याह करने से क्या होगा। यह सोच कर वह पीछे लौट आई। उस पेड़ के नीचे आकर देखा कि कहीं कोई नहीं है। उस चमेली के पेड़ में फूल के बदले उसी दैत्य का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिर लटका हुआ है। देखते ही डर के मारे लड़की का प्राण सूख गया। वह इधर उधर ढूँढ़ती ढूँढ़ती उसी साधु की कुटी के पास आ पहुँची। साधु ने उसको देखते ही कहा—"ऐं! तुम अकेली यहाँ कैसे आईं?" तब डर से काँपती काँपती लड़की सब हाल कह गई। साधु ने कहा—"मैंने जो कुछ कहा है उसमें तनिक इधर उधर मत करो नहीं तो विपत्ति में पड़ोगी।" तब वह लड़की धीरे धीरे फिर उस नौजवान साधु के पास गई। इस वार जाते ही उसने आँचल से फूल खोल कर साधु के हाथ पर फेंक दिया और आप लौट पड़ी।

नौजवान साधु और कोई नहीं, वह मन्त्री का ही लड़का था। वह उस लड़की पर लट्टू हो गया। एक बार खड़ी होने के लिए वह बार बार कहने लगा। कन्या न तो खड़ी हुई और न उसने पीछे उलट कर देखा। सीधी उस पेड़ के नीचे आकर बैठ गई। इस वार उसे वह सिर नहीं दिखाई पड़ा। मन्त्री का लड़का उसके पीछे पीछे वहाँ आया। उसको पेड़ के नीचे देख कर खुशी के मारे फूल उठा। उसका ज्ञान, ध्यान, जप, योग सब उस लड़की के लिए था। परन्तु वह वही लड़की नहीं थी, उसकी छोटी बहन थी। मन्त्री का लड़का उस समय यह बात नहीं समझ सका। वह आते ही ब्याह के लिए उससे हठ करने लगा। लड़की ने उसे फूल को पेड़ की डाली में छुआने के लिए कहा। छुआने के साथ ही वह पेड़ एक कुत्ता बन गया। मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का लड़का देखकर दङ्ग रह गया। कुत्ता कन्या का आँचल पकड़ कर मन्त्रिपुत्र के पास लेगया। तब कन्या को स्वयं मन्त्रिपुत्र से व्याह करने की इच्छा हुई। दोनों आदमी साधु के पास आये। कुत्ता भी साथ साथ आया। वहाँ आकर सबसे जान-पहचान हुई। राजपुत्र और मन्त्रिपुत्र दोनों की इच्छा पूरी हुई। तब उन्होंने देश लौटने के लिए साधु से विदा माँगी। साधु ने आशीर्वाद देकर कहा—"यह कुत्ता जितने दिन रहेगा उतने दिन इन लड़कियों पर कोई विपत्ति नहीं आवेगी। कुत्ते को यत्न से रखना।" वे लोग साधु से विदा लेकर कुत्ते सहित देश को लौट आये और सुख से रहने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हीरा दैत्य

एक ब्राह्मण था और एक ब्राह्मणी। ब्राह्मण बड़ा दुखिया, बड़ा ग़रीब था। कई घर यजमानी के थे। वे जो कुछ देते उसी पर बड़ी मुश्किल से उनके दिन कटते थे। ब्राह्मणी के सात लड़के हुए और सात लड़कियाँ। एक एक करके सब मर-बिला गये। सिर्फ़ ब्राह्मणी रह गई थी। वह भी एक दिन ब्राह्मण को छोड़ कर चल बसी। ब्राह्मण चारों ओर अन्धकार देखने लगा। तब उसने मन ही मन सोचा कि अब मुझे अपनी बाक़ी ज़िन्दगी तीर्थ-यात्रा में बितानी चाहिए। उसने भगवा वस्त्र पहन कर साधु का वेष लिया और अपने यजमानों से बिदा होने गया। यजमान बहुत अफ़सोस करने लगे। अन्त में सबने थोड़ा थोड़ा चन्दा करके ब्राह्मण को कुछ रुपये दिये। ब्राह्मण ने रुपये एक जाली में रख कर जाली कमर में बाँध ली। इसके बाद सबको आशीर्वाद देकर घर से निकल पड़ा।

जाते जाते बहुत दूर निकल जाने पर जब ब्राह्मण को भूख लगी तब उसने एक दूकान से कुछ खाने को मोल लिया। दूकान के पास एक चोर घूमता था। उसने साधु के पास रुपये देख कर उसका पीछा किया। ब्राह्मण साधु का वेष बनाये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहने पर भी संन्यासी नहीं था। ब्राह्मण के रुपये के लोभ से एक चोर उसका चेला बनने आया। और तरह तरह की बातें बना-कर ब्राह्मण को फुसलाने लगा। ब्राह्मण ने कहा—"भैया! मैं साधु नहीं हूँ। लेकिन अगर तुम मेरे साथ देश देखना चाहो तो चलो।" चोर ने कहा—"गुरुजी! मैं आपके संग रह कर आपकी सेवा करूँगा।" ब्राह्मण ने सोचा कि अगर एक आदमी सेवा के लिए साथ हो ले तो हर्ज ही क्या है? उसने चोर से कहा—"अच्छा भैया! तुम मेरे चेले बन कर ही चलो।" चेलाराम बेहद भक्ति दिखाने लगे। 'बेहद भक्ति चोर का लक्षण है' की कहावत उस समय भी ब्राह्मण को याद नहीं आई। साधु और चेला चले। कुछ दिन रास्ता चलने के बाद एक पहाड़ के पास, एक जङ्गल में कुटी बना कर वे दोनों रहने लगे।

एक दिन ब्राह्मण ने पास के पहाड़ पर जाकर देखा कि वहाँ पत्थरों के साथ ढेर के ढेर हीरे पड़े हैं। वह कुछ हीरे एक गठरी में बाँध कर ले आया। कुटी में लौटने पर चेले ने पूछा—"गुरुजी! गठरी में क्या है?" ब्राह्मण ने कहा—"यह पूछकर तू क्या करेगा? ये सब एक तरह के पत्थर हैं।" तब चेला और कुछ नहीं बोला। वह यही सोचने लगा कि साधु कब सोवेगा। ब्राह्मण चेले के मन की बात समझ गया। वह उस दिन रात को सोया ही नहीं। इस तरह चुपचाप पड़ा रहा कि चेले ने समझा साधु सो गया। इसके बाद दो एक बार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बुलाने पर जब उसने कुछ आहट नहीं पाई, तब वह धीरे धीरे साधु की वह गठरी बग़ल में दबा कर नौ दो ग्यारह हुआ। ब्राह्मण सब देखता रहा पर वह कुछ नहीं बोला।

कुटी से कुछ दूर आने पर चोर तेज़ी से जाने लगा। कुछ दूर जाकर उसने पहाड़ पर एक रोशनी देखी। वह ऐसी रोशनी थी कि उधर ताकने से आँखें तलमलाने लगतीं। चोर ने जो उधर दृष्टि डाली तो फिर उधर से वह नज़र हटा नहीं सका। मानों कोई जादू उसको ज़बरदस्ती खींच ले गया। कुछ दूर जाने पर उसने देखा कि एक बड़ी ख़ूबसूरत कन्या और एक पुरुष वहाँ खड़े हैं। चोर के वहाँ जाते ही पुरुष ने उसके गाल पर थप्पड़ मारा और उसके हाथ से गठरी छीन ली। थप्पड़ लगने से चोर का सिर फिर गया। होश होने पर उसने देखा कि वहाँ न तो वह रोशनी है और न कोई आदमी है। तब वह फिर चुपके चुपके आकर साधु की कुटी में सो रहा। उसने ऐसा ढंग दिखाया मानों कहीं गया ही न था।

दूसरे दिन सबेरे ब्राह्मण ने उठ कर देखा कि चेलाराम पास ही सोये हुए हैं परन्तु गठरी का पता नहीं है। तब ब्राह्मण ने उसको जगा कर कहा—"क्यों जी! मेरी गठरी कल रात को कहाँ रख आये?" चेले ने कहा—"आप क्या कहते हैं गुरुजी? मैं आपकी गठरी लेकर कहाँ रख आऊँगा? मैं तो कल सन्ध्या से ही यहाँ सोया हुआ हूँ।" जब ब्राह्मण ने कहा कि मैं जागता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जागता सब देखता था तब चेलाराम सिर खुजलाते खुजलाते बोले—"गु—रु—जी !" ब्राह्मण ने बात काट कर कहा—चालबाज़ो रहने दो। तुम तो अच्छे चेले निकले। अगर तुम्हें इतना लोभ था तो तुमने मुझ से साफ़ साफ़ क्यों नहीं कहा ? मैं तुमको उससे कहीं अधिक दे देता। उसको छिपा कर फिर क्यों लौट आया ?" तब चेले ने दम पाकर रात की सारी घटना कह सुनाई। सुन कर ब्राह्मण ने कहा—"तुम मेरे साथ चलो और जितना धन तुम से चले लाद ले जाओ।" इसके बाद वह ब्राह्मण उस पहाड़ से और बहुत से हीरे लाया और उसने उस चेले को देकर कहा—"तुम्हें चेला बन कर रहने की ज़रूरत नहीं है। अब तुम जाओ और राजा की तरह रहो।" यह कह कर ब्राह्मण ने उस चोर को बिदा कर दिया।

इधर ब्राह्मण ने मन ही मन सोचा कि रात का मामला देखना चाहिए। वह 'कब रात होगी, कब रात होगी' यही सोचता रहा। सन्ध्या होते ही वह पहाड़ के पास से धीरे धीरे जाने लगा। बहुत देर के बाद दूर से एक रोशनी देख कर वह समझ गया कि यही रोशनी है। तब वह सावधानी से चलने लगा। पहाड़ से नदी के किनारे किनारे एक रास्ता गया था। ब्राह्मण उसी रास्ते से चलने लगा। कुछ दूर जाने पर एक पेड़ मिला। वह उसी पेड़ की एक डाल पर चढ़ गया। वहाँ से पहाड़ के ऊपर का हिस्सा अच्छी तरह दिखाई देता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्राह्मण ने पेड़ पर बैठे बैठे देखा कि वह रोशनी बहुत पास आ गई। तब उसने देखा कि पुरुष के हाथ में आग के गोले की सी कोई चीज़ है। उसमें से बिजली की सी रोशनी निकल रही है। पुरुष एक हाथ में वह गोला लिये हुए है और दूसरे हाथ से कन्या का हाथ पकड़ कर घूम रहा है। ब्राह्मण एक-टक उस तरफ़ देखता रहा। कुछ देर बाद उसने देखा कि वे दोनों नदी की ओर जा रहे हैं। ब्राह्मण पेड़ पर बैठे बैठे सब देख रहा था। जब वे नदी में उतरने लगे तब ब्राह्मण चुपके चुपके पेड़ से उतर कर उनके पीछे पीछे गया और एक पत्थर की आड़ में खड़ा हो गया। उसने नदी के ऊपर एक काठ का तख़्ता बहते देखा। पुरुष कन्या का हाथ धर कर उस तख़्ते पर जा बैठा। इसके बाद उसने ज्योंही गोला तख़्ते से छुआया त्योंही धड़ाके का शब्द हुआ और तख़्ते सहित वे स्त्री-पुरुष नदी के भीतर चले गये। ब्राह्मण देख कर दङ्ग हो गया। कुछ देर चुप-चाप देख कर वह लौट आया।

कुटी में लौटने पर ब्राह्मण को रात भर नींद नहीं आई। वह सोचने लगा कि मैं यह क्या देख आया। उसने मन ही मन प्रण किया कि इसका पता लगा कर छोड़ना होगा। जान जाय तो जाय पर पता ज़रूर लगाना होगा। दूसरे दिन रात को ब्राह्मण उस नदी के किनारे जाकर एक पत्थर की आड़ में छिप रहा। कुछ देर बाद जब स्त्री और पुरुष हाथ में रोशनी लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहाड़ पर घूमने गये तब ब्राह्मण ने धीरे धीरे पानी में उतर कर तख़्ते को पकड़ लिया। जब वे दोनों लौट आये तब दूर से रोशनी देख कर ब्राह्मण तख़्ते को पकड़े हुए जल में छिप गया। पुरुष ने स्त्री को तख़्ते पर चढ़ा कर वह गोला तख़्ते से छुआ दिया। तख़्ता उनको लेकर भीतर चला गया।

ब्राह्मण भी ज़ोर से तख़्ते को पकड़े रहा। उसने जल के नीचे जाकर देखा कि एक बहुत बड़ा महल है। उस महल के फाटक पर तख़्ता जाकर लगा। ठेस लगते ही फाटक खुल गया। वह पुरुष स्त्री का हाथ धर कर महल में घुस गया। ब्राह्मण दरवाज़े की आड़ में छिप रहा। उस पुरुष ने भीतर जाकर रोशनी एक जगह रख दी। इसके बाद दोनों खाने बैठे। खाने की चीज़ों का क्या वर्णन किया जाय? न जाने कितने फल, कितनी मिठाइयाँ, कितने व्यंजन और कितनी तरह के पक्वान्न थे। घर .खुशबू से भर गया था। ब्राह्मण दरवाज़े की आड़ से सब देखता था। उसे बहुत दिनों के बाद राजमहल के जलपान की बात याद आ गई। वह प्राण हथेली पर रख कर चुपचाप पड़ा रहा।

देर तक खाना-पीना हुआ। इसके बाद रात भर हँसी-दिल्लगी होती रही। जब सबेरा हुआ तो स्त्री एक कोठरी में और पुरुष दूसरी कोठरी में चला गया। कुछ देर बाद ब्राह्मण को पुरुष की नाक बजती सुन पड़ी। तब वह धीरे धीरे दरवाज़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की आड़ से निकल उस कोठरी में गया जहाँ स्त्री थी। स्त्री ब्राह्मण को देखते ही चौंक पड़ी। उसने अकचका कर पूछा—"तुम कौन हो? यहाँ कैसे आये?" तब ब्राह्मण ने सब हाल कह सुनाया। सुन कर स्त्री बोली—"अरे राम! यह दैत्य का घर है। तुमको देखते ही वह अभी मार डालेगा। तुम्हारा भाग्य बड़ा है कि रात को उसने पता नहीं पाया। दिन में तुम्हें कुछ डर नहीं है क्योंकि दैत्य दिन भर सोवेगा।" ब्राह्मण ने दम पाकर कहा—"तुम दानवी हो कि देवी?" स्त्री ने कहा—"मैं आदमी हूँ। मुझ से तुमको कुछ डर नहीं है।" ब्राह्मण ने पूछा—"तुमको क्या दैत्य के घर से बाहर जाने की इच्छा नहीं होती?" स्त्री ने कहा—"इच्छा होने से थोड़े जा सकती हूँ?" ब्राह्मण ने कहा—"मैं दैत्य के हाथ से तुम्हारा उद्धार करूँगा।" स्त्री बोली—"तुम्हारी क्या ताक़त है कि तुम मुझको बचाओगे?" ब्राह्मण ने कहा—"मैं जो कहूँ वह तुम करो, मैं ज़रूर तुमको बचा लूँगा।" स्त्री ने पूछा—"मुझे क्या करना होगा?" ब्राह्मण ने कहा—"दैत्य जब तुमको लेकर हँसी-दिल्लगी करने लगे तब तुम उससे कहना कि तुमने मुझे अकेले पाताल-पुरी में रक्खा है अगर तुम अचानक मर जाओ तो मेरी क्या दशा होगी? तब वह जो कुछ कहे वह कल दिन में मुझसे कहना। फिर मैं उपाय करूँगा।" स्त्री ने कहा—"बहुत अच्छा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्योंही रात हुई त्यों ही दैत्य नींद से उठ कर रोज़ की तरह स्त्री का लिये पहाड़ पर गया। ब्राह्मण उस दिन बाहर नहीं गया। पहाड़ पर घूमते समय इधर उधर की बातें करते हुए स्त्री ने ब्राह्मण की सिखाई हुई बात पूछी। दैत्य ने कहा— "मैं मरूँगा थोड़ा ही, जो कि तुमको इसकी चिन्ता हुई है?" स्त्री ने कहा—"मरना तो सबको है। तुम कैसे नहीं मरोगे?" दैत्य ने कहा—"मरना तो है मगर मेरी मौत मेरे ही हाथ में है। यह जो मेरे हाथ में रोशनी का गोला देखती हो इसी में मेरा प्राण बसता है। यह गोला जहाँ मेरे हाथ से गया कि मेरी मृत्यु हुई।"

स्त्री बोली—"तुम झुठलाते हो। तुम जब दरवाज़ा बन्द करके सोते हो तब तो यह गोला तुम्हारे हाथ में नहीं रहता। तब तुम कैसे जीते हो?" दैत्य बोला—"हाथ में नहीं रहा तो क्या। सिर्फ़ गोला हाथ में न रहने से थोड़े मृत्यु होगी?" स्त्री बोली—"तब कैसे?" दैत्य ने कहा—"सुन कर क्या करोगी?" स्त्री ने कहा– "हाँ हाँ तुम क्यों बताने लगे? मैं तो इस लिए पूछती थी कि कभी कोई संकट पड़ेगा तो क्या करूँगी। और तुम बहला रहे हो। जाने दो मत बताओ।" यह कहकर स्त्री ने मुँह फुला लिया।

तब दैत्य ने कहा—"नहीं, नहीं, नाराज़ मत हो, मैं बताये देता हूँ। मैं जानता हूँ कि मुझ पर कोई सङ्कट नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ेगा, इससे तुमको कुछ बताने की ज़रूरत नहीं समझता था। पर अब बताता हूँ, सुन लो। महल के पश्चिम में जो बग़ीचा है उसके उत्तर के कोने में ढकनेदार एक पौधा है। वह चाँदी का पौधा है। उसके पत्ते सोने के और फल हीरे के हैं। उसका पत्ता मेरे सिर में छुआ देने से मेरा सिर धड़ से अलग हो जायगा। और हीरे का फल मेरी छाती पर रखने से मेरी मृत्यु हो जायगी। फिर अगर किसी तरह धड़ पर सिर रख दिया जाय तो मैं फिर जी जाऊँगा। और यह गोला अगर नहीं रहेगा तो महल से निकलने का कुछ उपाय नहीं रहेगा और हम लोगों को खाने को भी नहीं मिलेगा।"

स्त्री ने आदि से अन्त तक सब सुन लिया। इसके बाद वे दोनों पातालपुरी में चले आये।

दूसरे दिन सवेरे जब दैत्य सो गया तब ब्राह्मण धीरे धीरे स्त्री के पास आया। स्त्री उससे सब हाल कह गई। सुन कर ब्राह्मण ने कहा—"अब कुछ डर नहीं है। मैं अब तुम्हारा उद्धार करूँगा। इसके बाद वह बग़ीचे में ढकनादार पौधा ढूँढ़ने गया। बहुत जाँच-पड़ताल के बाद उसने ढूँढ़ निकाला। दिन भर मिट्टी खोदने के बाद ब्राह्मण ने सोने का पत्ता और हीरे का एक फल लेकर टेंट में खोंस लिया। इसके बाद वह धीरे धीरे आकर सदर दरवाज़े की आड़ में खड़ा हो गया। रात को जब दैत्य स्त्री को लेकर उस तख़्ते पर चढ़ने के लिए चला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो उसी समय ब्राह्मण ने दरवाज़े की आड़ से सोने का एक पत्ता दैत्य के सिर पर फेंका। पत्ता सिर में लगते ही दैत्य धड़ाम से गिर पड़ा। उसका सिर धड़ से अलग होगया। ब्राह्मण ने तुरन्त आकर सिर को उठा लिया और दैत्य के हाथ से वह गोला लेकर तख़्ते पर कूद गया और उसे तख़्ते से छुआ दिया। तख़्ता खट से ब्राह्मण को लिये नदी के ऊपर आगया। ब्राह्मण सिर को एक कन्दरा में फेंक कर फिर पाताल-पुरी में लौट गया। इसके बाद हीरे का फल दैत्य की छाती से छुआते ही उसका काम तमाम हो गया।

तब ब्राह्मण ने दैत्य की लाश को घसीट कर एक ओर फेंक दिया। इसके बाद खाने की जो सामग्री थी उसे आपने खाया और स्त्री को खिलाया। ब्राह्मण दो दिन से भूखा था, वह सपड़ सपड़ करके ढेर सा खा गया। इस रात को और कहीं न जाकर उसने स्त्री-सहित वहीं सुख-विलास किया। दूसरे दिन स्त्री को लेकर ब्राह्मण दैत्यपुरी से चला आया। उसने चलते चलते बहुत दूर जाने पर देखा कि रास्ते के किनारे एक बड़ा महल खड़ा है। वहाँ जाकर देखा कि जो चेला उसके पास से हीरे ले गया था उसी का वह मकान है। चेले ने ब्राह्मण को देखते ही पहचान लिया। उसने बड़े आदर-मान से उन्हें रक्खा।

वे लोग खाते पीते और पड़े रहते। कुछ दिन बाद वह चेला स्त्री के रूप पर मोहित होकर उसे ब्राह्मण के पास से हर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेने की चेष्टा करने लगा। ब्राह्मण ने पता पाकर एक दिन उस शिष्य चोर से कहा—"पातालपुरी में ढेर के ढेर हीरे पड़े हैं, मैं सब वहीं छोड़ आया हूँ। तुम अगर वह सब उठा लाओ तो हज़ारों स्त्रियाँ तुम्हारी लौंडी हो जायँगी।" यह बात सुनते ही चोर उछल उठा। ब्राह्मण ने पूछा—"अभी चलोगे?" चोर ने कहा—"चलिए न।" ब्राह्मण स्त्री और चोर तीनों तख़्ते पर चढ़ कर पातालपुरी में गये। ब्राह्मण ने चोर से कहा—"पश्चिम ओर उस बाग़ में जाओ, वहाँ हीरे मोतियों के पेड़ लगे हुए हैं।" यह सुन कर चोर उस तरफ़ गया। तब ब्राह्मण स्त्री को लेकर तुरन्त वहाँ से चला आया। चोर लोभ में आने से वहीं पड़ा रह गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वामनवीर

एक बहुत बड़ी नदी थी। उसके किनारे बड़ का एक बड़ा भारी वृक्ष था। वहीं पर एक मछुआ रहता था। वह जाल लगा कर मछलियाँ पकड़ता और रात को पेड़ के नीचे पहरा देता। वह और उसका दस वर्ष का एक लड़का रोज़ मछली पकड़ने जाते। बाप बेटा पहर रात तक मछली पकड़ते और बाक़ी रात पहरा देते। एक दिन सन्ध्या के बाद लड़का जगा हुआ था और उसका बाप खाने गया था। घोर अन्धकार छाया हुआ था। उस अन्धकार में अपना शरीर भी नहीं सूझता था। जाल में मछली पड़ने की बात कैसे मालूम होती। इतने में उस बड़ के पेड़ से एक डाइन उतर आई। जाल में बड़ी बड़ी मछलियाँ लगी हैं। लड़के से जाल खींचते नहीं बनता। यह देख कर डाइन ने घनघनी आवाज़ से कहा—"मंछुएं का लँड़का! मुझें एंक मंछली देंगा?" लड़के ने कहा—"अगर तुम जाल खिँचवा दो तो मैं तुमको दो मछलियाँ दूँगा।" "जींते रहो बंच्चा।" कह कर डाइन ने जाल खिँचवा दिया। लड़के ने दो बड़ी बड़ी मछलियाँ निकाल कर कहा—"यह लो।" डाइन ने सोचा कि पास जाने से लड़का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डर जायगा तब रोज़ मछली नहीं मिलेगी इससे उसने कहा—"वाँलूँ पर फेंक दें।" लड़के ने दो मछलियाँ फेंक दीं।

दूसरे दिन डाइन फिर मछली लेने आई। उस दिन बेटा खाने गया और बाप मछली पकड़ रहा था। डाइन ने दूर से कहा—"सुक्खू! मछली देंगा?" सुक्खू डर के मारे कहने लगा—"राम राम राम राम।" डाइन ने कुछ देर बाद फिर कहा—"सुक्खू मछली नहीं देंगा?" सुक्खू डर के मारे काँपने लगा और ख़ूब ज़ोर से राम राम कहने लगा। डाइन मछली न पाकर लौट गई। जाते समय कह गई—"तुमने मछली नहीं दी अब तू अपना लड़का भी नहीं पावेंगा।" सुक्खू जाल बटोर कर लौट आया। इधर लड़का भी घर से लौट आया।

उस दिन से सन्ध्या के बाद मछली पकड़ना बन्द हो गया। पर सुक्खू रोज़ रात को जाल उठाने का शब्द सुनता। वह डर के मारे कुछ न बोलता। इसी तरह चार पाँच दिन बीते। एक दिन जाल के शब्द से सुक्खू की नींद टूटी। उसने करवट बदलते देखा कि बग़ल में लड़का नहीं है। चाँदनी रात थी। उजेला फैला हुआ था। जाल की ओर नज़र जाने पर उसने देखा कि लड़का जाल के पास बैठा है। जाल उठाते ही देखा कि मछलियों से जाल भर गया है। इतना भारी जाल अकेले उससे नहीं उठ सका। परन्तु लड़के ने बात की बात में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उठा लिया। देख कर सुक्खू के देवता कूच कर गये। वह डर के मारे ठिठुर कर चुप चाप पड़ रहा। फिर सो गया। सबेरे उठ कर उसने देखा कि लड़का बग़ल में सोया हुआ है। तब उसने लड़के से पूछा—"क्यों रे, तू रात को जाल उठाने क्यों गया था?" लड़के ने कहा—"बाबू! रोज़ न जाने कौन मुझको गोद में उठा ले जाता है और फिर यहाँ रख जाता है।" सुक्खू ने सोचा—अरे राम! तब तो डाइन इसके पीछे लगी है उस दिन सुक्खू ने सोते समय एक रस्सी से अपनी और लड़के की कमर एक में बाँध दी। रात को डाइन जब लड़के को उठाने लगी तब रस्सी खिँच जाने से सुक्खू भी जाग पड़ा और वह लड़के से जकड़ गया। तब डाइन झोंपड़े के पिछवाड़े से बोली—"नहीं आने दियां अच्छा नहीं किंया।" सुक्खू डर के मारे काँपते काँपते राम राम कहने लगा। डाइन फिर बोली—"औरं सांत दिन जांने देंता तों तेंरे लँड़के में पाँच सौं हांथियों का बंल आं जांता। अंभी उंसमें सिंर्फ़ एंक सौं हांथियों कां बंल आंया है।" यह कह डाइन चली गई। सुक्खू को रात भर नींद नहीं आई। दूसरे दिन सबेरे उसने नदी से जाल निकाल लिया।

सुक्खू के लड़के के शरीर में एक सौ हाथियों का ज़ोर तो हुआ पर तब से वह और बड़ा नहीं हुआ। वह वामनवीर हो गया। अब से सभी उसको वामनवीर कह कर पुकारने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ दिन बीतने पर एक रोज़ वामनवीर नदी में नहाने गया। घाट पर राजा के एक हाथी को भी नहलाने ले आये। घाट के बीच में एक बौने आदमी को देख कर महावत ने कहा—"अरे कौन है? यहाँ से हट जा। मैं यहाँ हाथी को नहलाऊँगा।" वामनवीर ने कहा—"मैं क्यों हटूँ? तुझे गरज़ हो तो हाथी को दूसरी जगह ले जाकर नहला।" महावत ने कहा—"हैं! यह शेख़ी? मैं अभी तुझे हाथी से कुचलवा दूँगा।" यह कह महावत ने हाथी को ज्योंही वामनवीर के पास ठहराया त्योंही वामनवीर ने सूँड़ पकड़ कर हाथी को एक तरफ़ फेंक दिया। हाथी न जाने कहाँ जा गिरा। महावत को कुछ भी पता न लगा। तब उसने डर के मारे काँपते काँपते राजा से जाकर कहा—"महाराज! मैं हाथी को नदी में नहलाने ले गया था। वहाँ एक लड़के ने सूँड़ पकड़ कर न जाने हाथी को कहाँ फेंक दिया। मैं ढूँढ़ कर थक गया, हाथी कहीं मिलता ही नहीं।" राजा ने सोचा महावत पागल हो गया। पर जब वह बार बार यही बात कहने लगा तब राजा ने कोतवाल को हुक्म दिया—"उस लड़के को पकड़ लाओ।"

कोतवाल महावत को साथ लेकर वामनवीर के पास गया। इतना सा लड़का देख कर कोतवाल ने सोचा कि इसी को पकड़ने के लिए मुझे आना पड़ा! उसने वामनवीर से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा—"अबे लौंडे ! चल तुझे राजा के पास चलना होगा।" वामनवीर ने कहा—"मैं किसी का नौकर नहीं हूँ। तू अपने राजा से जाकर कह कि मैं नहीं आता। अगर गरज हो राजा आप आकर मुझ से भेंट कर जाय।" तब कोतवाल ने सोचा कि अगर मैं इसे पकड़ूँ और यह कहीं मुझे भी हाथी की तरह घुमा कर फेंक दे तो मैं क्या करूँगा? मैं पकड़ने से बाज़ आया। इज़्ज़त आबरू लेकर यहाँ से टल जाना और राजा से जाकर सब हाल कह देना ही अच्छा है। कोतवाल ने राजा से जाकर कहा—"महाराज ! अब कुशल नहीं। वामनवीर ऐसा है कि उसे पकड़ लानेवाला इस राज्य भर में कोई सिपाही नहीं है। महाराज ! आप वहाँ नहीं जायँगे तो वह किसी तरह नहीं आवेगा।" राजा ने सोचा कि ऐसे वीर को देखना चाहिए। तब पलटन-सहित राजा वामनवीर के पास गये। उसको देख कर राजा की समझ में नहीं आया कि इतने से आदमी के बदन में इतना बल कैसे आ गया।

राजा ने वामनवीर से कहा—"मछुए के लड़के ! अगर तू उस पार का वह बड़ का पेड़ उखाड़ ला तो मैं समझूँ कि हाँ, तू वीर है।" वामनवीर ने तुरंत उस विशाल वट-वृक्ष को उखाड़ कर फेंक दिया। देख कर राजा दाँतों उँगली काटने लगे। तब उन्होंने समझा कि बेशक यह वीर है। उन्होंने कहा—"वामनवीर ! मैं तुम्हारे बदन का बल देख कर बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खुश हुआ। क्या तुम मेरा कोई काम करोगे ?" वामनवीर ने कहा—'पहले आप अपना काम बताइए, तब मैं हाँ या ना करूँगा।" राजा ने कहा—"तुम मेरी सेना को कुश्ती लड़ना सिखाओ।" वामनवीर ने कहा—"आपका हुक्म होने से मैं सिखा सकता हूँ।" दूसरे दिन वामनवीर राजमहल में जाकर सिपाहियों को कुश्ती लड़ाने लगा। उसने सात दिन में राजा के आधे सिपाहियों को दबा कर मार डाला। राजा की सेना में हाहाकार मच गया। सब लोगों को बड़ी चिन्ता हुई। एक दिन उन्होंने हाथ जोड़ कर राजा से कहा—"धर्मावतार! वामनवीर ने हमारे आधे आदमियों को गला दबा कर मार डाला।" सुन कर राजा ने सोचा कि यह तो बड़ी मुश्किल हुई। उन्होंने मन्त्री को बुला कर कहा—"मन्त्री ! इसका क्या उपाय है ? किसी तरह इस बला को यहाँ से दूर करो। मन्त्री सोच विचार कर वामनवीर की स्त्री के पास गये और उन्होंने उसको बहुत लोभ देकर कहा—"आज दाल-तरकारी में नमक मत डालना। सब अलोना बना कर रख देना और तुम्हारा पति आकर खाने को माँगे तो कहना कि मेरा जी अच्छा नहीं है।" वामनवीर की स्त्री ने ऐसा ही किया। वामनवीर ने घर आते ही खाने को माँगा। उसकी स्त्री ने कहा—"आज मेरा जी अच्छा नहीं है। जो कुछ बना है उसे तुम्हीं निकाल कर खालो।" यह कह कर वह खाट पर पड़ गई। वामनवीर ने मुँह में कौर डालते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही देखा कि दाल-तरकारी में नमक नदारद।" उसने क्रोध के मारे थाली उठा कर फेंक दी। तब, उसकी स्त्री के दिल पर चोट लगी। उसने झटपट आकर कहा—"तुम क्रोध मत करो, मेरा दोष नहीं है। राजा के मन्त्री आकर मुझे सिखा गये थे इसी से मैंने ऐसा किया।" वामनवीर ने यह सुन कर कहा—"तब तो तू लोगों के कहने से मेरा प्राण भी ले लेगी। तू यहाँ से दूर हो, आज से मैं तेरा मुँह नहीं देखूँगा।" यह कह कर वामनवीर क्रोध के मारे घर से निकल पड़ा। जाते जाते उसने एक जगह देखा कि एक पहलवान बीस मन का एक काठ का बोझ खींचे लिये आ रहा है। वामनवीर ने उस बोझ के पीछे का एक कोना पैर से दबा दिया। बोझ अटकते देख कर पहलवान ने पीछे फिर कर ताका तो देखा कि एक आदमी बोझ को पैर से दबाये हुए है। उसने पहलवान से कहा—"तुम कौन भैया! तुम्हारे बदन में तो बड़ा बल दिखाई देता है।" यह सुन कर वामनवीर ने कहा—"मैं कोई हूँ पर तुम तो एक बड़े भारी पहलवान जान पड़ते हो। तुम्हारा चेहरा देखने से ही मालूम होता है कि तुम्हारे बदन में बड़ा बल है।" पहलवान ने कहा—"मेरे बदन में क्या बल है? वामनवीर नाम का एक आदमी है, उसके बल की बात अगर तुम सुनो तो तुम्हारे आश्चर्य का ठिकाना न रहे।" तब उसने कहा—"मैं ही वह वामनवीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूँ। तुम्हारा क्या नाम है ?" पहलवान ने कहा—"मेरा नाम चिरागू ख़ाँ है। अच्छा, वामनवीर ! तुम कहाँ जाते हो ? मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।" वामनवीर ने कहा—"मेरे साथ चलना हो तो तुम अपना यह बोझ घर रख आओ। तब तक मैं इस पेड़ के नीचे खड़ा हूँ।" कुछ देर के बाद चिरागू ख़ाँ लौट आया और दोनों जने साथ चले। कुछ देर जाने पर क्या देखते हैं कि एक आदमी ताड़ का पेड़ काट कर उससे मुँह धो रहा है। यह देख कर चिरागू ख़ाँ ने कहा—"तुम तो बड़े बहादुर जान पड़ते हो। तुम्हारा नाम क्या है ?" उसने उत्तर दिया—"दतवन मियाँ।" चिरागू ख़ाँ ने कहा—"मियाँ दतवन ! तुम्हारे बदन में तो बड़ा बल जान पड़ता है !" दतवन-मियाँ ने कहा—"अजी ! मेरे बदन में क्या बल है। बल देखना चाहो तो वामनवीर को देख आओ।" वामनवीर ने कहा—"अजी ! मैं तो यहीं हूँ। मेरा ही नाम वामनवीर है।" सुन कर दतवन मियाँ ने कहा—"तुम लोग कहाँ जाते हो ? मैं भी तुम लोगों के साथ चलूँगा।" तब तीनों आदमी फिर रास्ता चलने लगे।

जाते जाते एक जगह क्या देखते हैं कि एक बुढ़िया अपने घर के पास बैठी रो रही है। दवतन मियाँ ने पूछा—"क्यों बुढ़िया ! तू रोती क्यों है ?" बुढ़िया ने कहा—"दुःख की बात क्या बताऊँ ? राजा के हुक्म से रोज़ एक घर से बारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बारी एक आदमी को राक्षस के हवाले करना पड़ता है। आज मेरे लड़के की बारी है। रात होते ही राक्षस मेरे लड़के को खाने आवेगा।" यह सुन कर वामनवीर ने कहा—"बुढ़िया! अब तू मत डर। हम लोग तेरे लड़के को राक्षस के हाथ से बचावेंगे। आज रात को तुम अपने घर में हम लोगों को रहने दो।" बुढ़िया बोली—"क्या मेरा ऐसा सौभाग्य है? अगर तुम लोग ऐसा कर सकोगे तो हम मा-बेटे तुम लोगों के गुलाम बन कर रहेंगे।"

रात को उन्होंने बुढ़िया और उसके लड़के को घर के भीतर करके दरवाज़ा बन्द कर दिया और वे तीनों दालान में बिस्तर लगा कर सो रहे। कुछ देर बाद वामनवीर और चिरागू ख़ाँ सो गये, सिर्फ़ दतवन मियाँ जागता रहा। कुछ रात बीतने पर 'खाऊँ खाऊँ' करते हुए राक्षस आया! तब दतवन मियाँ उसके सामने जाकर खड़ा हो गया और बोला—"तू कौन है? यहाँ क्या करने आया है?" राक्षस ने कहा—"मैं तुझे खाऊँगा।" दतवन मियाँ ने कहा—"अरे जा रे चमगीदड़! तू मुझे क्या खायगा?" बात की बात में दोनों में हाथा-पाई होने लगी। बहुत देर तक लड़ने के बाद दतवन मियाँ हार गया। राक्षस ने एक धक्का मार कर उसको धरती पर गिरा दिया। तब वह चिरागू ख़ाँ पर झपटा। चिरागू जो नींद से उठा तो राक्षस के मुँह पर तड़ से तमाचा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जमा दिया। तमाचा खाकर राक्षस का सिर चकरा गया। शब्द सुन कर वामनवीर भी जाग उठा। उसने भी राक्षस को एक थप्पड़ लगाया। वह राक्षस के दाँत में लग गया। फिर वह उठ कर भागने लगा। दतवन मियां ने पीछे से उसका कान पकड़ कर ऐसा खींचा कि राक्षस चित हो गया। फिर उसने उठ कर कहा—"मुझ से भूल हुई। अपराध क्षमा करो। मैं भी आज से तुम लोगों के दल में मिल जाऊँगा।"

दूसरे दिन राजमहल में ख़बर गई कि राक्षस पकड़ा गया है। राजा ने ढिंढोरा पिटवा दिया था कि जो कोई राक्षस को पकड़ देगा उसे आधा राज-पाट मिलेगा। ख़बर पाकर राजा ने कहा—"राक्षस को किसने पकड़ा है? उसको लिवा लाओ।"

तब उन लोगों ने दतवन मियाँ को राजा के पास भेजा। राजा का हुक्म टलने वाला नहीं था। उन्होंने दतवन मियाँ को आधा राज्य लिख दिया। इधर वामनवीर, चिरागू और वह राक्षस—तीनों आगे बढ़े। जाते जाते एक सघन वन के पास पहुँचे। वहाँ वे एक पेड़ के नीचे बैठे। वामनवीर ने कहा—"चिरागू ख़ाँ! तुम खाना पकाओ, तब तक हम लोग जङ्गल की सैर कर आवें।"

चिरागू ख़ाँ ने दाल, भात, रोटी और तरकारी बना कर रख दी और वह उन दोनों की बाट देखने लगा कि वे आवें तो तीनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE